प्रभात

इस अंक में .....

★ दण्डकारण्य में कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान 3
★ श्रद्धांजली 8
★ 28 जुलाई की रिपोर्टें 11
★ शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकारी लापरवाही 15
★ नेतृत्व के तरीकों से सम्बन्धित कुछ सवाल - माओ त्सेतुङ 19
★ अर्जेन्टीना की अर्थव्यवस्था का संकट 22

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) [पीपुल्स वार] दण्डकारण्य स्पेशल ज़ोनल कमेटी का तिमाही मुख-पत्र

वर्ष - 15 अंक - 3 जुलाई - सितम्बर 2002 सहयोग राशि - 10 रुपए

दण्डकारण्य जनता का प्यारा नेता
कॉमरेड सुखदेव को क्रांतिकारी सलाम!

23 मई – एक यादगार दिन था। इसी दिन, सन 1967 में ऐतिहासिक नक्सलबाड़ी आन्दोलन की शुरूआत हुई थी। उस दिन शोषित किसानों ने पहली बार एक आतंकी पुलिस थानेदार का हंसियां से वार कर सफाया किया था। 2002 के उसी ऐतिहासिक दिन दण्डकारण्य जनता का उत्तम सपूत, पार्टी का स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य, उत्तरी कमान का कमाण्ड-इन-चीफ कॉ. सुखदेव ने आतंकी पुलिस वालों के खिलाफ अनुपम शूरता के साथ लड़ते हुए वीरगति हासिल की। उस दिन पार्टी की उत्तर बस्तर एवं माड़ डिवीजनल कमेटियों ने संयुक्त रूप से गुजरात में मुसलमानों के कत्लेआम के खिलाफ तथा नगरनार में प्रस्तावित स्टील फ्लांट के खिलाफ संघर्षरत जनता के समर्थन में बंद का आह्वान कर रखा था। बंद को सफल बनाने के लिए जन संगठनों के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने पेड़ काटकर सड़कों को जाम कर दिया। पेड़ों को हटाते हुए गश्त पर निकली एक पुलिस टुकड़ी पर नारायणपुर-कोण्डागांव मार्ग में देवगांव के निकट पीजीए की एक प्लटून ने घात लगाकर हमला किया जिसका नेतृत्व कॉ. सुखदेव कर रहे थे। इस हमले में पीजीए ने एक भाड़े के गोपनीय सैनिक का सफाया कर उसकी एक .303 रायफल छीन ली तथा कुछ और पुलिस वालों को घायल कर दिया। दोनों तरफ हो रही गोलीबारी में कॉ. सुखदेव को तब गोली लगी जब वह अपनी रायफल की मैगजीन बदल रहे थे। इस तरह वह एक साहसिक योद्धा की भूमिका निभाते हुए जंगे मैदान में शहीद हो गए।

कॉ. सुखदेव का जन्म उत्तरी तेलंगाना के वरंगल जिले के धर्मसागर मण्डल के ग्राम टेकलागूडेम में हुआ था। वह एक मध्यम वर्ग परिवार में जन्मे थे और उनके पिता एक स्कूली शिक्षक थे। उनका नाम घर पर विजय भास्कर था। 1980 के दशक में वरंगल जिले में सामंतवाद के खिलाफ चल रहे संघर्षो की प्रेरणा से वह 12वीं की पढ़ाई छोड़कर पेशेवर क्रांतिकारी बन गए। उस समय वह रैडिकल छात्र आन्दोलन के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में काम कर रहे थे। पेशेवर क्रांतिकारी बनकर उन्होंने केन्द्रीय संगठक की जिम्मेदारी ली और शराब की समस्या पर संघर्ष में जनता का नेतृत्व किया। बाद में 1985 में पार्टी के आदेश पर उन्होंने उत्तरी तेलंगाना को छोड़कर दण्डकारण्य के दक्षिण बस्तर क्षेत्र में कदम रखा। तब वह सिर्फ 18-19 साल के नौजवान थे।

सबसे पहले उन्होंने कोंटा और बासागूड़ेम छापामार दस्तों में सदस्य के तौर पर काम किया। उसके बाद वह नेशनलपार्क एरिया गए जहां उन्हें दस्ता कमाण्डर बनाया गया। 1989 में दण्डकारण्य आन्दोलन का उत्तर बस्तर में विस्तार करने का फैसला लेकर पार्टी ने उन्हें बड़ी जिम्मेदारी सौंप दी। उत्तर बस्तर क्षेत्र के केसकाल एरिया को आधार बनाकर काम करने वाले उस पहले छापामार दस्ते का कॉमरेड सुखदेव सकुशल नेतृत्व किया। इस तरह कॉ. सुखदेव के नक्शेकदम कोंटा से लेकर माड़ क्षेत्र से केसकाल, कोण्डागांव तक, धमतरी जिले के सिहोवा तक देखे जा सकते हैं।

1992 में वह पहले उत्तर बस्तर सब डिवीजनल कमेटी सदस्य और 1994 में उत्तर बस्तर डिविजनल कमेटी सदस्य चुन लिए गए थे। उसके बाद वह उसके सचिव चुन लिए गए। 1997 में आयोजित दण्डकारण्य की प्लीनम मीटिंग ने उन्हें स्पेशल जोनल कमेटी का वैकल्पिक सदस्य चुन लिया। 1998 में उन्हें स्पेशल जोनल कमेटी में लिया गया। 2000 में संपन्न दण्डकारण्य पार्टी के तीसरे अधिवेशन में उन्हें दोबारा स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य चुन लिया गया। पीजीए के गठन के बाद वह राज्य

पृथक बस्तर राज्य की मांग पर एवं नगरनार स्टील-प्लान्ट निर्माण के विरोध में

1 नवम्बर को 'दण्डकारण्य बन्द' सफल बनाओ !

कॉमरेड सुखदेव की याद में
25 जून को मना 'दण्डकारण्य बन्द'

कॉ. सुखदेव की शहादत की खबर फैलते ही समूचे दण्डकारण्य में पार्टी के कतारों और संघर्षशील जनता में मातम का माहौल छा गया। दण्डकारण्य आन्दोलन के लिए निश्चित रूप से यह बहुत बड़ा सद्मा था। पार्टी की स्पेशल जोनल कमेटी ने अखबारों को जारी एक बयान में शहीद सुखदेव के योगदान का स्मरण किया। उसने जनता और पार्टी के कतारों का आह्वान किया कि 25 जून को कॉ. सुखदेव की याद में 'दण्डकारण्य बन्द' का पालन किया जाए। इस पर जनता की प्रतिक्रिया बेहद सकारात्मक रही। दण्डकारण्य के हर गांव, हर कस्बे में बन्द का पूरी तरह से पालन किया गया। खासकर उत्तर बस्तर डिवीजन में, जहां कॉ. सुखदेव ने 12 साल काम करते हुए आन्दोलन के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, कई गांवों में जनता ने स्मारकों का निर्माण किया। बन्द के दिन कई जगहों पर जनता ने सरकारी सम्पत्तियों को तबाह कर दिया। पुलिस वाले इस बन्द से इतने भयभीत हुए थे कि वे अपने थानों में दुबक कर रह गए - गश्त पर निकलने की हिम्मत ही नहीं कर सके। इस मौके पर सभी डिवीजनों के सैकड़ों गांवों में शहीद सुखदेव की याद में सभाएं मनाई गईं, जिनमें उनके अधूरे मकसद को पूरा करने का संकल्प लिया गया। कॉमरेड सुखदेव की शहादत की प्रशंसा करते हुए गांव-गांव में पर्चे बांटे गए और पोस्ट-बैनर लगाए गए।

मिलिटरी कमिशन सदस्य बनाए गए और इस नाते उन्होंने उत्तरी कमान के कमाण्ड-इन-चीफ की जिम्मेदारी संभाल ली।

कॉ. सुखदेव ने उत्तर बस्तर में कई जन संघर्षों का नेतृत्व किया। आदिवासी जनता पर वन विभाग वालों के जुल्मों के खिलाफ उन्होंने जनता को इकट्ठा किया। मालगुजारों के खिलाफ कई संघर्ष छेड़े गए उनकी अगुवाई में। उन्होंने जनता को गोलबन्द कर बस्तर में साम्राज्यवादी लूट-खसोट का जबर्दस्त मुकाबला किया। रावघाट और कुव्वेमारी में खदानें खोलकर आदिवासियों को विस्थापित करने और खनिज संपदा को सस्ते में लूटने के साम्राज्यवादियों के मंसूबों पर पानी फेर दिया संघर्षशील जनता ने। और उनका नेता कॉमेरड सुखदेव था। जब वन-धन समितियां खोलकर वनोपजों की खरीदी का राष्ट्रीयकरण किया गया, तब कॉ. सुखदेव ने सरकार की इस दिवालिया नीति का विरोध करते हुए हजारों जनता को तथा सैकड़ों छोटे व्यापारियों को संघर्ष में उतारा। इस तरह उत्तर बस्तर के आन्दोलन के इतिहास में कदम-कदम पर कॉ. सुखदेव की यादगार भूमिका दिखाई पड़ती है।

कॉ. सुखदेव की खासियत यह थी कि वह जहां भी रहें, वहां की बोली सीखकर जनता में घुलमिल जाते थे। उनकी मौत की खबर सुनकर उत्तर बस्तर डिवीजन के हजारों जनता ने आंसू बहाए। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि जनता के दिलों में वह किस तरह छा गए। उत्तर बस्तर में क्रांतिकारी आन्दोलन के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उत्तर बस्तर में पार्टी के विस्तार को रोकने के लिए दुश्मन हाथ धोकर लगे हुए थे। कई हमलों में छापामारों का कुशल नेतृत्व करके उन्होंने आन्दोलन को मजबूती दिलाई। दुश्मन के खिलाफ किए गए लगभग सभी घात हमलों और रेइडों में उनका जबर्दस्त योगदान रहा। छापामारों के लिए उनका साथ रहना ही अपने आपमें हौसला आफजाई था, ऐसा कहना कोई गलत नहीं है। वह एक विनम्र शख्स थे, अपने साथियों के साथ वह अपार स्नेह रखते थे। वह सभी पार्टी कतारों के चहेते थे। लगभग एक दशक तक उत्तर बस्तर डिवीजन में उन्होंने दुश्मन के नाकों दम करके रख दिया। वह पीजीए का जांबाज कमाण्डर थे।

कॉ. सुखदेव की कला एवं साहित्य के क्षेत्र में भी गहरी पैठ थी। शासक वर्गों के खिलाफ उन्होंने गन का ही नहीं, बल्कि पेन का भी बढ़िया प्रयोग किया। उन्होंने कविता, कहानी आदि विधाओं में काफी साहित्य का सृजन किया। वह गोंडी भाषा में गीत लिखकर खुद गाते थे और नाचते भी थे। साहित्य की रचना में उनकी खासियत यह थी कि वह तत्कालीन देशीय, अंतर्राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय मसलों पर तुरन्त ही प्रतिक्रिया व्यक्त करते थे। सामायिकता और विविधता दोनों का बढ़िया समावेश होता था उनकी रचनाओं में। इस तरह दण्डकारण्य के क्रांतिकारी साहित्यिक आन्दोलन में उनका अविस्मरणीय योगदान रहा।

पार्टी की ऐतिहासिक 9(2)वीं कांग्रेस को सफल बनाने में कॉमरेड सुखदेव ने यादगार भूमिका निभाई। कांग्रेस के सुचारू संचालन के लिए गठित संचालन कमेटी के वह सदस्य चुन लिए गए थे। जब कांग्रेस चल रही थी, तब वहां संचालन सम्बन्धी सभी जिम्मेदारियां उनके जिम्मे थीं। अपनी पैनी निगरानी के लिए जाने जाने वाले शहीद सुखदेव ने यह जिम्मा पूरी निष्ठा के साथ पूरा किया।

पार्टी की 9(2)वीं कांग्रेस के बाद पार्टी ने नए कर्तव्यों को स्वीकार किया। दण्डकारण्य को मुक्त अंचल में तब्दील करने के लक्ष्य के साथ सभी पार्टी कमेटियों ने प्रयास तेज किए। इस ऐतिहासिक मोड़ में कॉ. सुखदेव ने पूरी क्षमता के साथ पीजीए बलों का नेतृत्व किया। छापामार आधार-क्षेत्रों की स्थापना के फौरी लक्ष्य के साथ कॉ. सुखदेव ने अथक प्रयास किए। जनयुद्ध को आगे बढ़ाने के लिए दुश्मन के भाड़े के बलों के खिलाफ चलाए गए दोनों कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियानों को कामयाबी दिलाने में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। पीजीए बलों को राजनीतिक एवं फौजी तौर पर सुशिक्षित करने का बीड़ा उठाकर उन्होंने कई प्रशिक्षण शिविरों का संचालन किया। वह एक अच्छे शिक्षक भी थे जो सरल उदाहरणों से कठिन से कठिन विषय को भी बड़ी आसानी से समझाया करते थे।

दण्डकारण्य में जनयुद्ध मुक्तांचल के लक्ष्य से तेजी से आगे बढ़ रहा है। केन्द्र और राज्य सरकारों ने इस आन्दोलन को कुचलने के लिए भीषण दमन अभियान छेड़ रखा है। जनता की नई राजसत्ता भ्रूण रूप में आकार ले रही है। सैकड़ों नव युवक-युवतियां हथियारबंद बनकर पीजीए में शामिल हो रही हैं। जनता क्रूर दुश्मन के खिलाफ बहादुराना संघर्ष कर रही है। ऐसे ऐतिहासिक मोड़ पर कॉ. सुखदेव की शहादत निश्चित रूप से बहुत बड़ा नुकसान है।

आइए, साथियों! कॉ. सुखदेव के जीवन को हम अपना आदर्श बना लें। उनके अधूरे सपनों को पूरा करने का अपना संकल्प दोहराएं। याद रख लें कि दण्डकारण्य को मुक्त इलाके में बदल कर ही कॉ. सुखदेव समेत उन हजारों शहीदों का सम्मान कर सकेंगे जिन्होंने साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल नौकरशाही पूंजीवाद के पंजों से हमारे देश को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर किया।❑

दण्डकारण्य में कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान कामयाब

दुश्मन के दमन अभियानों को करारा जवाब

दण्डकारण्य के क्रांतिकारी आन्दोलन को कुचलने के लिए केन्द्र-राज्य सरकारें व्यापक तैयारियां कर रहे हैं। पुलिस अलग-अलग नाम से दमन अभियान छेड़ते हुए जनता में आतंक मचा रही है जिससे कि वे क्रांतिकारी आन्दोलन से अलग हो जाएं। हाल के वर्षों में विशेषकर दक्षिण एशिया में माओवादी पार्टियों के नेतृत्व में क्रांतिकारी आन्दोलन और अन्य जनवादी आन्दोलन भड़क उठने की पृष्ठभूमि में साम्राज्यवाद ने हमारे आन्दोलन को कुचलने में विशेषकर अमेरिकी साम्राज्यवाद ने दिलचस्पी लेना शुरू किया। साम्राज्यवादियों की 'लो इन्टेन्सिटी कॉनफ्लिक्ट' (एलआईसी-कम तीव्रता वाला संघर्ष) की योजना पर चलते हुए शासक वर्ग व्यापाक दमनचक्र छेड़े हुए हैं। पुलिस बलों का आधुनिकीकरण, विशेष बलों का गठन, खोजबीन अभियान, गिरफ्तारियां आदि तरीके अपनाकर क्रांतिकारी आन्दोलन का जड़ों से सफाया करने की कोशिशें जारी हैं। दूसरी ओर लुटेरे शासक वर्ग जनता के विकास को लेकर दिखावटी चिन्ता जताते हुए झूठे सुधार कार्यक्रम भी चला रहे हैं। और 'पीपुल्सवार पार्टी को जनता का समर्थन नहीं है', 'जनता उनका विरोध कर रही है' आदि वक्तव्य देते हुए आन्दोलन के खिलाफ जहरीला प्रचार भी कर रहे हैं ताकि जनता को गुमराह किया जा सके।

पुलिस को नुकसान	हमारे नुकसान
8 मरे - 12 घायल	कॉ. सुखदेव की शहादत और दो साथी घायल
7 हथियार जब्त (एके-47 – 1; एसएलआर – 3; .303 – 1; दुनाली – 1; 38 रिवॉल्वर – 1; हथगोले – 2)	एक 8 एमएम रायफल खोई

पार्टी ने दुश्मन के इस व्यापक आक्रमण को हराने और आन्दोलन को बचाने के लिए पिछली गर्मियों में (अप्रैल से जून तक) पूरे दण्डकारण्य में 'कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान' चलाने का फैसला लिया था। इसके तहत पीजीए के तीनों - मुख्य, गौण और आधार बलों ने दण्डकारण्य के सभी डिवीजनों में दुश्मन के बलों पर, मुखबिरों पर और जन विरोधियों पर सिलसिलेवार हमले किए। इन हमलों ने दुश्मन को पूरी तरह से झकझोर कर रख दिया। पुलिस बलों को संघर्ष के क्षेत्रों में प्रवेश करते समय फूंक-फूंककर कदम रखने पर मजबूर कर दिया। कई जन विरोधियों और जमींदारों पर हमलों की खबर मिलने के बाद पुलिस वहां आने की हिम्मत भी नहीं कर सकी। इस कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान की खास बात यह रही कि इसमें जन मिलिशिया के सैकड़ों युवक-युवतियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। उन्होंने न सिर्फ मुख्य और गौण बलों के साथ मिलकर हमलों में भाग लिया, बल्कि खुद ही पहलकदमी करते हुए कई हमले किए। ''जनयुद्ध जनता का संपूर्ण युद्ध है'' इस कथन को साबित करते हुए जनता ने जन विरोधियों के खिलाफ किए गए हमलों में तथा सरकार के झूठे सुधार कार्यक्रमों का विरोध करते हुए 'काम के बदले अनाज' पर कब्जा कर लेने में सैकड़ों की संख्या में भाग लिया।

इस अभियान की सफलता ने पुलिस और सरकार के इन तमाम बयानों को झुठला दिया जिसमें यह कहा जाता रहा कि 'पीपुल्सवार का जनाधार घट चुका है', 'यह मुट्ठी भर लोगों का आन्दोलन है, व्यापक जनता का इससे कोई लेना-देना नहीं' आदि। इस अभियान ने पुलिस बल को मुख्य रूप से आत्मरक्षात्मक कदम ही उठाने पर मजबूर कर दिया। इस अभियान ने जनता का आत्मविश्वास बढ़ा दिया कि अपनी संगठित ताकत से चाहे कितनी बड़ी प्रतिक्रियावादी ताकत को भी मात दी जा सकती है।

इस अभियान को शुरू करने से पहले पार्टी कमेटियों और पीजीए की कमानों ने पीजीए के सभी बलों को, जन संगठनों को एवं आम जनता को राजनीतिक और फौजी तौर पर तैयार किया। उनको अच्छी तरह समझा दिया गया कि जनयुद्ध को आगे बढ़ाने के लिए तथा दण्डकारण्य को आधार इलाका बनाने के लिए दुश्मन के बलों का वीरतापूर्वक मुकाबला करना होगा। कई प्रशिक्षण शिविर चलाकर पीजीए के तीनों बलों को पूरी तरह प्रशिक्षित किया गया। इसका नतीजा ही है कि इस अभियान में जनता ने महत्वपूर्ण एवं रचनात्मक भूमिका निभाई।

हालांकि यह कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान राजनीतिक रूप से पूरी तरह सफल रहा, फिर भी फौजी तौर पर देखा जाए तो इसे सफलताओं के साथ-साथ कुछ विफलताएं भी झेलनी पड़ी। इस अभियान में पीजीए के उत्तरी कमान के कमाण्ड-इन-चीफ, दण्डकारण्य के वरिष्ठ एवं जांबाज़ नेता कॉ. सुखदेव को खोना एक बड़ा नुकसान है। लेकिन हर लड़ाई नई क़ुरबानियां मांगती है। पार्टी ने इस अभियान की समीक्षा कर ली है। और इससे आवश्यक शिक्षा ग्रहण कर ली ताकि दुश्मन पर कई सफल हमले करके जनयुद्ध को और भी मजबूती के साथ आगे बढ़ाया जा सके।

इस अभियान के दौरान पीजीए बलों ने दुश्मन के खिलाफ जो कार्रवाइयां कीं, उनका संक्षिप्त ब्यौरा इस प्रकार है।

- 3 घात हमले किए गए जिनमें से एक पूरी तरह सफल, दो आंशिक तौर पर सफल।
- एक मौकाई रेइड आंशिक रूप से सफल।
- छह मुखबिरों और एक बीआरो के ठेकेदार का सफाया।
- जन विरोधियों और बुरे शरीफजादों की सम्पत्तियों को जब्त करने की कुल 11 घटनाएं।
- सरकारी संपत्तियों की तबाही (पंचायत भवन, तेन्दुपत्ता गोदाम, 'काम के बदले अनाज' बांटने आदि) की कुल 14 कार्रवाइयां।
- पुलिस बलों को हैरान-परेशान करने के इरादे से थानों पर गोलीबारी की कार्रवाइयां - 5

नीचे हम इस अभियान के संबंध में कुछ डिवीजनों से प्राप्त रिपोर्टें पेश कर रहे हैं।

उत्तर बस्तर डिवीजन

उत्तर बस्तर डिवीजन में खास तौर पर पुलिस के गोपनीय सैनिकों को निशाना बनाकर पीजीए के योद्धाओं ने कई हमले किए। इस डिवीजन में पुलिस ने आन्दोलन और छापामार दस्तों का सफाया करने के लिए कई 'काले गिरोह' बनाकर रखे हैं। वह आवारा गर्दों और बेरोजगार युवकों को इकट्ठा कर, उन्हें बहला-फुसलाकर तथा प्रलोभन देकर मुखबिर बनाती है। इन्हें बाकायदा एक-47 समेत सभी आधुनिक हथियारों को चलाने का प्रशिक्षण देती हैं। ये युवक गांवों में गुप्त रूप से घूमते हैं और जन विरोधियों से सम्पर्क साधकर दस्तों की सूचना इकट्ठी करते हैं। ये प्रत्यक्ष हमले भी करते हैं और पुलिस के साथ मिलकर हमलों में भाग लेते हैं। इस दफा पार्टी द्वारा चलाए गए कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान में जनता ने ऐसे बदमाश गोपनीय सैनिकों के छक्के छुड़ा दिए।

इस अभियान में पीजीए के योद्धाओं ने कुल मिलाकर 6 गोपनीय सैनिकों, 2 मुखबिरों, 2 जासूसों का अलग-अलग कार्रवाइयों में जनता की सक्रिय मदद से सफाया कर डाला। इसके अलावा एक घात हमला और पुलिस के अस्थाई मुकाम पर एक रेइड किया।

बड़गांव हमले में दो गोपनीय सैनिकों का खात्मा – एके-47 रायफल और रिवाल्वर जब्त

कोंडागांव क्षेत्र के ग्राम बड़गांव के निवासी उत्तम और जल्ले गोपनीय सैनिक बनकर प्रति-क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग ले रहे थे। ये दूसरे लोगों को भी बहला-फुसलाकर मुखबिर बनाने के काम में लगे हुए थे। पास के ही एक और गांव मैमागवाड़ी के दो आवारागर्द युवक योगेश और श्यामलाल इनसे हाथ मिलाए हुए थे और इन सबकी योजना थी कि छापामार दस्ते पर हमला करके उसका सफाया किया जाए। लेकिन इसके पहले मैमागवाड़ी के ही दो अन्य गोपनीय सैनिक रेशलाल और शिव प्रसाद को, जोकि इसी गिरोह के सदस्य थे, पहले ही एक कार्रवाई में पीजीए ने मार डाला था जिससे इनकी योजना विफल हुई थी।

मई के आखिरी सप्ताह में पीजीए ने बड़गांव के गोपनीय सैनिकों के घरों पर हमला करके उन्हें आर्थिक तौर पर नष्ट करने का फैसला लिया। इस कार्रवाई में स्थानीय छापामार दस्ते के साथ-साथ जन मिलिशिया के दर्जनों योद्धाओं और सौ से ज्यादा क्रांतिकारी जनता ने भाग लिया। लेकिन पुलिस वाले अपने गुर्गे गोपनीय सैनिकों के साथ मिलकर दो मुखबिरों के घरों में घात लगाकर बैठे हुए थे, जिसकी जानकारी पीजीए को नहीं थी। फिर भी पहलकदमी अपने हाथों में लेते हुए पीजीए के योद्धाओं ने एक घर पर धावा बोलकर दो गोपनीय सैनिकों को निष्क्रिय बनाकर उनके हथियारों – एक एके-47 रायफल, एक रिवॉल्वर, दो हथगोले – को छीन लिया। श्यामलाल ने भागने की कोशिश की तो छापामारों ने उसे वहीं गोली मार दी। योगेश को गिरफ्तार कर, बाद में पूछताछ कर खत्म कर दिया।

एक अन्य गोपनीय सैनिक जल्ले के घर पर जब छापामारों के एक और दल ने हमला किया, तब वहां पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी में एक पीजीए सदस्य घायल हो गए। जब वहां से सभी लोग वापिस जा रहे थे तब पुलिस के एक और दल द्वारा घात लगाकर किए गए हमले में ग्राम झारा का डीएकेएमएस सदस्य कॉमरेड जोगा वंजामी के पैर में गोली लगने से वह वहीं गिर पड़े थे। बाद में पुलिस ने निर्ममता के साथ उनकी हत्या करके यह प्रचार किया कि 'बड़गांव की घटना में पार्टी का डिवीजनल कमेटी सदस्य कॉमरेड रामधर मारा गया।'

23 मई को देवगांव में एम्बुश
कॉ. सुखदेव की शहादत
एक गोपनीय सैनिक का सफाया और 3 घायल

23 मई को पार्टी की उत्तर बस्तर एवं माड़ डिवीजनल कमेटियों ने बंद का आह्वान किया था। बन्द को विफल बनाने के लिए पुलिस वालों ने एड़ी-चोटी का जोर लगाया रखा था। इसके बावजूद जनता ने अपनी व्यापक भागीदारी से बन्द को पूरी तरह सफल बनाया। इस मौके पर पीजीए की एक टुकड़ी ने नारायणपुर-कोंडागांव मार्ग पर देवगांव के पास पुलिस के एक गश्ती दल पर घात लगाकर हमला किया, जो जनता द्वारा पेड़ काटकर खड़े कर दिए अवरोधों को हटाने का प्रयास कर रहा था। इस घात हमले में पीजीए के लाल योद्धाओं ने एक भाड़े के गोपनीय सैनिक को मौत के घाट उतार दिया और उसकी .303 रायफल छीन ली। अन्य तीन पुलिस वाले घायल हुए। बाकी सभी पुलिस वाले थोड़े प्रतिरोध के बाद भाग खड़े हुए। हालांकि यह हमला आंशिक रूप से सफल रहा, लेकिन पुलिस की गोली लगने से पीजीए के उत्तरी कमान के कमाण्ड-इन-चीफ कॉ. सुखदेव शहीद हो गए, पीजीए के योद्धाओं ने अपने प्यारे नेता की लाश को उठा लाकर पूरे सम्मान के साथ उनका अन्तिम संस्कार किया।

मैमागवाड़ी में गोपनीय सैनिकों का खात्मा

27 अप्रैल को पीजीए के नेतृत्व में 300 जनता ने मैमागवाड़ी गांव में तीन गोपनीय सैनिकों के घरों पर धावा बोल दिया। मैमागवाड़ी में मुखबिरों का पूरा एक नेटवर्क ही बन चुका था। ये लोग गांव में गुप्त रूप से रहते हुए क्रांतिकारियों की गतिविधियों का पता लगाकर पुलिस को पहुंचाया करते थे। और ये लोग पार्टी के छापामार दस्ते पर एक हमले की योजना बना रहे थे जिसकी सूचना वहां की क्रांतिकारी जनता ने पार्टी को दी। इस कार्रवाई में रेशलाल और शिवप्रसाद नामक गोपनीय सैनिकों का सफाया कर दिया गया और योगेश के घर पर हमला कर उसकी सारी सम्पत्तियां जब्त कर ली गईं। इसी योगेश को एक माह बाद बड़गांव में उसके साथी श्यामलाल के साथ मार डाला गया। उल्लेखनीय बात यह है कि इन आतंकी गोपनीय सैनिकों के खिलाफ की गई सभी कार्रवाइयों में जनता ने सक्रिय भूमिका निभाई।

कडिमे में पुलिस पर हमला – पुलिसिया दुष्प्रचार

8 मई को छापामारों की एक टुकड़ी पखांजूर-भानुप्रतापपुर रोड पर स्थित ग्राम कापसी में स्थित वन विभाग के दफ्तर पर धावा बोला। यहां पर वन विभाग के कोई 30-40 अधिकारी एवं कर्मचारी रहते हैं। जनता का शोषण करने में और उन पर जोर-जबर्दस्ती करने में यहां के अधिकारी माहिर माने जाते थे। यहां पदस्थ नेताम रेन्जर ने बांस कटाई

के मजदूरों का भुगतान न कर 10 लाख रुपया हड़प लिया था। आसपास की जनता इनकी प्रताड़नाओं से बेहद परेशान थी। इसलिए जनता ने पीजीए के नेतृत्व में इनके खिलाफ कार्रवाई करने का फैसला लिया। कुल 106 हथियारबंद जनता ने इनके दफ्तर पर हमला करके वन विभाग के 3 जीपों, 1 कार, 1 मोटार सायकिल समेत सभी भवनों में आग लगा दी। एक वायरलेस सेट और कुछ अन्य सामग्रियों को पीजीए ने जब्त कर लिया।

इस घटना के बाद अगले दिन 50 से ज्यादा पुलिस वालों की एक टुकड़ी, जो गश्त पर निकली हुई थी, ग्राम कडिमे में आ रुकी थी। ये लोग अत्याधुनिक रायफलों, मोर्टारों और हथगोलों, आदि से लैस थे। जैसे ही यह सूचना पीजीए को मिली सेकण्डरी फोर्स के छह और बेस फोर्स के दर्जन भर योद्धाओं ने हमले की योजना बनाई। ये लाल योद्धा मुख्य रूप से देसी भरमार बंदूकों से लैस थे। रात के 12 बजने के बाद उस स्कूल भवन पर, जहां पुलिस रुकी थी, दोनों तरफ से गोलीबारी शुरू की। 10-12 राउण्ड चलाकर सभी साथी सकुशल पीछे हट गए। इसमें एक पुलिस हवलदार बुरी तरह घायल हुए और कुछ अन्य पुलिस वालों को चोटें लगीं। इसके बाद पुलिस को सम्भलने में ही काफी वक्त लगा, तब तक पीजीए के लाल सैनिक काफी दूर चले गए थे। बाद में उन्होंने डर के मारे बेकार ही सैकड़ों गोलियां चलाईं। पीजीए के हाथों में हुई इस शर्मनाक पराजय से पगलाए पुलिस वालों ने सुबह एक मुरगा काटकर दो-तीन जगहों पर खून गिरा दिया ताकि लोगों को यह भरोसा दिया जा सके कि 'उन्होंने कुछ नक्सलियों को हताहत किया, लेकिन उनके साथी उन्हें ले गए।' शुरू में तो पुलिस ने 10-12 नक्सलियों के मारे जाने की अफवाहें फैलाईं थीं। बाद में पार्टी के डिवीजन सचिव कॉ. दसरू ने घटना का विस्तृत ब्यौरा देते हुए पुलिस के दुष्प्रचार का खण्डन किया। इसके बावजूद पुलिस ने अपना दुष्प्रचार मुहिम जारी रखी। दस्ते की उप-कमाण्डर कॉ. निर्मला के मारे जाने के दावे करने लगे। बाद में इसका भी खण्डन किया गया। पुलिस का प्रचार जो भी हो, जनता जानती है कि सचाई क्या है। और सचाई यह है कि जन सेना की एक छोटी सी टुकड़ी ने, जिसके पास हथियार पुलिस की तुलना में कम थे और कहीं ज्यादा कमजोर भी थे, अत्याधुनिक हथियारों से लैस एक बड़े पुलिस दल पर हमला कर आंशिक सफलता भी प्राप्त की। और ऐसी कार्रवाइयों से जनता में यह विश्वास और ज्यादा बढ़ रहा है कि जन सेना अपराजेय है - जनता की ताकत अथाह है।

मुखबिरों के खिलाफ कार्रवाइयां

उत्तर बस्तर डिवीजन में कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान के तहत कई मुखबिरों, गोपनीय सैनिकों और होमगार्डों को सजाएं दी गईं। डौला एरिया के मरसकोला गांव में राजू और रामसिंह नामक दो मुखबिरों के खिलाफ कार्रवाई की गई। ये गांव में मुखिया भी थे और कई जन विरोधी गतिविधियों में इनका हाथ था। जनता ने इनके बारे में खबर दी कि इनके सम्बन्ध गोपनीय सैनिकों से हैं और ये उन्हें शरण देते हैं। गांव में पूछताछ करके जनता के समक्ष इनकी पिटाई कर दी गई। बाद में इन्हें चेतावनी दी गई कि पुलिस वालों के साथ सम्बन्ध तोड़ लें और जनता के साथ मिलजुल कर रहें।

इसी क्षेत्र के ग्राम सुलिंगा में सरपंच जुगुल, जुगुनु और बुधिनी के खिलाफ 4 गांवों की 500 जनता के समक्ष जन अदालत बुलाई गई। इन लोगों ने पुलिस के कुछ जासूसों का साथ दिया था। जन अदालत में इसकी पुष्टि होने के बाद इन्हें कड़ी चेतावनी दी गई कि आइंदा ऐसी हरकतों से दूर रहें। इन्होंने जनता के सामने सिर झुकाकर माफी मांगी।

ग्राम वट्टेमहोड के निवासी, मुखिया कोपा रत्तू के खिलाफ जन अदालत लगाई गई। रत्तू पुलिस मुखबिर का रिश्तेदार था और लोगों को डराया-धमकाया करता था। अतीत में इसने एक बार अपने एक भाई को धोखा देकर उसकी जमीन छीन ली थी, तो जनता ने इस पर कार्रवाई करके जमीन लौटा दी। फिर भी इसके अन्दर कोई बदलाव नहीं आया और जन संगठनों के कार्यकर्ताओं को डराने लगा था। इसकी सारी जन विरोधी गतिविधियों की चर्चा करके जनता ने इसे गांव से बाहर निकाल देने की सजा सुनाई।

ग्राम बेसेमेट्टा का निवासी रैजू एक समय डीएकेएमएस का नेता हुआ करता था। बाद में अपने व्यक्तिगत कारणों से इसने एक व्यक्ति की हत्या की तो इसे संगठन ने बाहर कर दिया गया था। इसी गांव का लहर सिंह नामक व्यक्ति भी गोपनीय सैनिक उत्तम के सम्पर्क में चला गया। इन दोनों की जन विरोधी एवं प्रतिक्रियावादी गतिविधियों पर विस्तृत चर्चा के बाद पीजीए ने दोनों की धुनाई कर दी। पहले तो इन्होंने अपनी गलतियों को छुपाने की कोशिश की, लेकिन जनता ने गोपनीय सैनिकों के साथ इन दोनों के सम्बन्धों की पुष्टि कर दी तो आखिर में इन्हें सचाई कबूलनी पड़ी। बाद में इन्हें सुधरने का एक और मौका देकर छोड़ दिया गया।

बड़गांव में दो गोपनीय सैनिकों का सफाया करने के बाद गांव में मौजूद कुछ और दुष्ट मुखियाओं पर पीजीए ने हमला किया। गांव का गायता रामधर कोर्रामी, पेरमा कोंदा कोर्रामी को जनता की अदालत में लाकर उनकी जन विरोधी गतिविधियों पर मुकदमा चलाया गया। ये गांव में जनता को सताया करते थे और अपने पदों का दुरुपयोग करते हुए पैसा वसूला करते थे। जनता के बीच होने वाले छोटे-बड़े झगड़ों को लेकर लोगों से दण्ड के रूप में पैसा वसूला करते थे। इनके तमाम काले कारनामों की चर्चा के बाद यह फैसला हुआ कि दोनों की पिटाई की जाए। बाद में इनकी पिटाई कर दी गई।

900 लोगों के समक्ष मुखबिरों का आत्मसमर्पण

कोण्डागांव रेन्ज के बेरंगी गांव का किदरू और तुम्मिरिनार गांव का मेघनाथ पिछले दो सालों से पुलिस के सम्पर्क में रहते हुए गुप्त रूप से संगठन और छापामार दस्ते की गतिविधियों से पूलिस को सूचित करते रहे थे। देवगांव घात हमले में मारे गए गोपनीय सैनिक घागरू ने इन्हें तैयार किया था। बाद में गोपनीय सैनिकों और मुखबिरों के खिलाफ लगातार की जा रही कार्रवाइयों से ये लोग होश में आ गए और पीजीए के सामने आत्मसमर्पण की पेशकश की। बाद में इनके आत्मसमर्पण को स्वीकृति देने के लिए 15 गांवों के 900 लोग इकट्ठे हो गए। इन दोनों द्वारा की गई जन विरोधी कार्रवाइयों की विस्तृत चर्चा के बाद जनता ने इनके आत्मसमर्पण को कुछ शर्तों पर स्वीकृति दी। इन्होंने अपनी सारी गलतियां मान लीं और आइंदा जनता की शर्तों का पालन करने और मिलजुलकर रहने की हामी भरी।

माड़ डिवीजन

जन विरोधी सोनसाय के घर पर पीजीए का हमला

माड़ डिवीजन के ओरछा के निकट गांव गुद्दाडी में 1994 में छापामार दस्ते के दो कॉमरेड रुके हुए थे। उस गांव का निवासी सोनसाय ने पुलिस को लाकर उन पर गोलीकाण्ड करवाए थे। सोनसाय का परिवार को गांव में धनी किसान परिवार माना जाता है। दोनों कॉमरेडों में से एक सख्त बीमार थे। लेकिन दोनों भी किसी तरह पुलिस के हमले से बच गए, लेकिन दस्ते की 2 रायफलें और अन्य सामान पुलिस को मिले थे। उसके बाद सोनसाय पुलिस में भर्ती होकर आरक्षक बन गया। तब से वह पुलिस के साथ ही रहने लगा। बाद में उसका भाई मानसिंह भी पुलिस मुखबिर बन गया। उसका पूरा परिवार ही जन-विरोधी बन गया। 25 अप्रैल को पीजीए के गौण एवं आधार बलों के लगभग 70 सदस्यों ने सोनसाय के घर पर धावा बोलकर 20 बोरा धान जब्त करके लोगों को बांट दिया। उसका घर जलाकर परिवार को वहां से भगा दिया।

सोनपुर का जमींदार गागरू का ग्राम बहिष्कार : सम्पत्ति जब्त

माड़ डिवीजन के कोह्कामेट्टा एरिया में सोनपुर एक ऐसा राजस्व गांव है जहां बाहर से आकर बसे हुए लोगों की संख्या ज्यादा है। उनमें से एक परिवार गागरू का था जो एक गैर-आदिवासी गरीब किसान था, और देखते ही देखते लोगों की श्रमशक्ति को लूटकर बड़ा जमींदार बन गया। इसने कई किसानों को धोखा देकर उनकी जमीनें हड़प लीं। इसने दस्ते की बात की अनसुनी कर नैबेरेड के तट पर स्थित बहुत सारा जंगल कटवाया था। सोनपुर में हाटबाजार लगता है, जहां आदिवासी काफी संख्या में वनोपज लाकर बेचते हैं। गागरू सरकार द्वारा गठित सहकारी समिति का अध्यक्ष था। इसने उधर से सरकारी पैसे में हेरफेर और इधर आदिवासियों से वनोपजों की खरीदी में धोखाधड़ी करके बहुत पैसा कमाया। इसने संगठन के फैसले के खिलाफ चलकर हाट बाजार में शराब का धंधा खुलवाया। जन संगठनों के नेतृत्व में जनता ने फूलझाड़ू की खरीदी के समय अधिक दाम की मांग करते हुए संघर्ष शुरू किया तो इसने संगठन के खिलाफ लोगों को भड़काया और गलत प्रचार करने लगा। बाद में संगठन कार्यकर्ताओं के नाम लिखकर पुलिस को दिया।

इसकी जन विरोधी गतिविधियों पर चर्चा करके पार्टी ने इसकी सारी सम्पत्तिया छीनकर इसके परिवार को गांव से खदेड़ देने का फैसला लिया। इसके खिलाफ 24 मई को की गई कार्रवाई में करीब 30 गांवों के 800 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। इस कार्रवाई में गागरू के घर से करीब 500 क्विन्टल धान जब्त कर लोगों को बांट दिया गया। उसकी करीब 50 एकड़ जमीन को संगठन ने अपने कब्जे में लिया जिसे बाद में गरीब लोगों को बांट दिया गया। इसके कब्जे में से करीब 42 मवेशियों को भी छीनकर गरीब और भूमिहीन किसानों को बांट दिया गया। आखिर में इसके हवेलीनुमा मकान को जलाकर इसके पूरे परिवार को गांव से निकाल बाहर कर दिया गया। साथ ही साथ, इस गांव में मौजूद वन विभाग के रेस्ट हाउस और अन्य सरकारी इमारतों को भी जला डाला गया।

जनता का दुश्मन और पुलिस मुखबिर सैनू का ग्राम बहिष्कार

माड़ डिवीजन के कोह्कामेट्टा एरिया के ग्राम झारवाही का सरपंच था सैनू जो सुखदेव नामक खूंखार गोपनीय सैनिक का चाचा था, जिसका पीजीए ने अप्रैल में सफाया किया था। गांव में इसकी तूती बोलती थी। इसने गांव के लोगों को डरा-धमकाकर अपना गुलाम बनाकर रखा था। लोगों को बगैर कोई मजदूरी दिए अपने खेतों में काम पर रख लिया करता था। चूंकि इसके पुलिस के साथ भी मधुर सम्बन्ध थे, इसलिए लोग इस नाते भी सैनू से बहुत डरते थे। इसने अपनी पहली पत्नी के साथ मारपीट कर भगा दिया था और एक दूसरे व्यक्ति की पत्नी को जबरन उठा लाकर अपना घर बसाया था। इन सारी बातों पर चर्चा करके पार्टी ने इसकी सारी सम्पत्तियों को छीनकर, इसे गांव से बाहर करने का फैसला लिया। इस कार्रवाई में भी सैकड़ों जनता ने भाग लिया और सैनू की सारी सम्पत्तियों को छीनकर घर जला दिया। बाद में उसे गांव से भगा दिया गया। इस घटना से गांव की जनता में आत्मविश्वास बढ़ गया और गरीब जनता उसकी जमीनों पर काश्त करने की तैयारियां शुरू कीं।

ग्राम पंचायत भवन तबाह

दुश्मन के खिलाफ छेड़े गए 'कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान' के तहत, माड़ डिवीजन में जनता ने ग्राम पंचायत भवनों को पूरी तरह तबाह करके लुटेरी राजसत्ता को चुनौती दी। 'यह सरकार हमारी नहीं, लुटेरों की है। हम अपनी सरकार खुद ही बना लेंगे' – इस चेतना के साथ जन मिलिशिया और जनता ने मिलकर पांच जगहों पर ग्राम पंचायत भवनों को तबाह कर दिया। कोह्कामेट्टा, गारपा, झारावाही, कुरसनार और मुरनार में मौजूद पंचायत भवनों को सैकड़ों लोगों ने गिरा दिया। जिन गांवों में पंचायत भवनों को ढहा दिया गया, वहां पहले जनता की मटिंग ली गई थी। इस मीटिंग में जनता के साथ व्यापक चर्चा करके उन्हें समझा दिया गया कि किस तरह यह तथाकथित जनतांत्रिक शासन प्रणाली जनता की नहीं है, बल्कि लुटेरे वर्गों की है। मीटिंग के बाद जनता काफी उत्साहित हुई और लुटेरी राजसत्ता के चिन्हों के रूप में मौजूद पंचायत भवनों को तबाह करने को सब्बल, फांवड़े, गैंती जैसे औजार लेकर तैयार हुई। इस तरह जनता ने इस लुटेरी राजव्यवस्था को साफ तौर पर नकार दिया और अपनी राजसत्ता की स्थापना की दिशा में कदम बढ़ा रही है।

जनता की क्रोधाग्नि में पंचायत भवन झुलसे

पश्चिम बस्तर डिवीजन

फरसेगढ़ के नजदीक पुलिस पर सफल घात हमला

2 पुलिस वालों का सफाया - 3 एसएलआरें जब्त

27 जून को पीजीए के मेइन फोर्स और सेकण्डरी फोर्स के लाल योद्धाओं ने पश्चिम बस्तर डिवीजन के नेशनल पार्क एरिया में फरसेगढ़ के निकट गांव रानिनबोदिल में एक पुलिस पार्टी पर घात लगाकर हमला किया जोकि मोटार सायकलों पर सवार होकर जा रही थी। रास्ते में बारूदी सुरंग का विस्फोट कर पीजीए ने पुलिस के दो मोटार सायकलों को उड़ा दिया। इस घटना में दो पुलिस वाले मारे गए और एक थानेदार गम्भीर रूप से ज़ख्मी हो गया। बाद में पीजीए के सैनिक पुलिस पर कूद पड़े और बिजली सी तेजी से उनका सफाया कर उनकी 3 एसाएलआर रायफलें छीन लीं। बाकी बचे पुलिस वाले जान बचाकर भागने में सफल हो गए। उल्लेखनीय बात यह है कि यह घटना तब हुई जब बस्तर की पुलिस कॉमरेड सुखदेव की एक हमले में हुई मृत्यु से खुशियां मना रहे थे। इस कार्रवाई ने इस इलाके के लोगों को बेहद उत्साहित किया। उन्होंने इस कामयाबी के लिए पीजीए का अभिनन्दन किया।

गड़चिरोली डिवीजन

बीनागुण्डा के निकट पीजीए का जबर्दस्त हमला

अप्रैल के आखिरी सप्ताह में पीजीए के तीनों बलों के योद्धाओं ने भामरागढ़ तहसील के बीनागुण्डा के निकट पुलिस पर ताबड़तोड़ हमला किया। पीजीए के बिछाए जाल में पुलिस वाले बुरी तरह फंस गए और ट्रकों में सवार होकर निकले। जैसे ही पुलिस वाले बीनागुण्डा गांव पहुंचे, पीजीए ने उन पर दोतरफा हमला करने की योजना बनाई। इस योजना के मुताबिक जब पुलिस वाले बीनागुण्डा से ग्राम गोडापर्रि जा रहे थे, उन पर बारूदी विस्पोट और बन्दूकों से हमला बोल दिया गया। इस हमले में एक थानेदार मारा गया और कुछ अन्य पुलिस वाले बुरी तरह घायल हो गए। बाद में पुलिस वाले वहां से भागकर वापिस बीनागुण्डा चले गए। और अपने थानेदार की लाश को और घायल जवानों को लेकर वे अपने मुख्यालय लाहिरी की ओर रवाना हो गए। लेकिन उन्हें नहीं मालूम था कि पीजीए की एक और टुकड़ी उस तरफ भी उनका इन्तजार कर रही थी। जैसे ही उनका ट्रक तयशुदा जगह तक पहुंचा, पीजीए ने बारूदी सुरंग को चिनगारी दिखा दी। एक घण्टे के अन्तराल में किए गए एक और हमले से पुलिस वाले इतने भयभीत हो गए कि जान बचाने के लिए उन्हें मारे-मारे भागना पड़ा। इस हमले में भी एक और पुलिस अधिकारी मारा गया और कुछ अन्य घायल हो गए। कुल मिलाकर कोई दर्जन भर पुलिस वालों को चोटें आईं। लेकिन इस घटना में दुर्भाग्य से एक मजदूर की भी मौत हो गई जोकि पुलिस के साथ ट्रक में बैठकर जा रहा था। कुछ अन्य मजदूरों को चोटें भी आईं। पीजीए ने मजदूर की मौत पर शोक प्रकट किया और कुछ लोगों को चोटें आने पर अफसोस जताया।

मुरुमबुसी के पास मौकाई घात हमला - एक पुलिस घायल

जून के पहले सप्ताह में पीजीए के योद्धाओं ने यह सूचना मिलने पर कि कोठी पुलिस थाने के पुलिस की एक टुकड़ी पैदल गश्त पर निकली है, तुरन्त हमले की योजना बनाई। अत्याधुनिक हथियारों से लैस 18 जवानों का दल जैसे ही तयशुदा जगह में पहुंचा, पीजीए ने ताबड़तोड़ गोलीबारी शुरू कर दी। इसमें एक पुलिस वाला बुरी तरह घायल हुआ और बाकी पुलिस वाले फायरिंग करते हुए भाग गए। 10 मिनट तक दुश्मन से लड़कर पीजीए के योद्धा सकुशल पीछे हट गए। इस घटना के बाद पुलिस वालों ने गश्त बन्द कर दी। यह भी खबर मिली है कि कोठी थाने के पुलिस वाले अपना तबादला करवाने की कोशिशें कर रहे हैं। इस घटना से आसपास के लोगों में उत्साह पैदा हुआ, क्योंकि कोठी थाने के पुलिस वालों ने पिछले साल मरकानार गांव के एक बेकसूर पद्दा मेट्टामी की हत्या की थी और इससे जनता में पुलिस पर काफी आक्रोष था।

पुलिस एवं मुखबिर के घर ध्वस्त

गड़चिरोली डिवीजन के ग्राम झारेवाड्डा के कोतवाल के परिवार का एक व्यक्ति पुलिस में काम कर रहा था। और यह परिवार हमारे दस्ते के सम्बन्ध में पुलिस से मुखबिरी करता रहा था। हालांकि पार्टी ने कई बार उन्हें समझाने की कोशिश की कि मुखबिरी बन्द करें और पुलिस में शामिल अपने बेटे को वापिस लाएं। लेकिन इससे कोई बदलाव नहीं आया। इससे पार्टी ने इनके घर को ध्वस्त कर उन्हें गांव से निकाल देने का फैसला लिया। इसके अनुसार पीजीए के एक दस्ते ने इस फैसले पर अमल किया। पेरिमिलि रेन्ज के ग्राम कचुलेर का दोर्गे पिछले 8 सालों से पुलिस मुखबिर बनकर काम कर रहा है। यह जनता एवं जन संगठनों के सदस्यों को बेहद परेशान करता रहा। इस लिए पार्टी ने इसके घर को ढहाकर इसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर लिया। ❑

जन मिलिशिया ने खत्म किया गंगलूर थानेदार कौशलेन्द्र सिंह को

पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगलूर पुलिस थाने का दरोगा कौशलेन्द्र सिंह को पीजीए के आधार बल के योद्धाओं ने 7 सितम्बर को मार डाला। यह गंगलूर क्षेत्र में आतंक का पर्याय था। हाट बाजार में जाने वाले लोगों को परेशान करना, मारना-पीटना आदि काले कारनामों के लिए यह बदनाम था। गांवों में जन संगठनों के कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार करने के लिए गांवों पर छापा मारा करता था। इस तरह, इस क्षेत्र में क्रान्तिकारी आन्दोलन के रास्ते में यह मुख्य बाधक बना हुआ था। इस लिए पार्टी ने इसका सफाया करने का फैसला लिया। इस फैसले पर अमल करने का जिम्मा पीजीए के आधार बल की एक टुकड़ी को सौंप दिया गया, जिसने इसे सफलतापूर्वक अंजाम दिया। यह जब मोटार सायकिल पर आ रहा था, तब सादे कपड़ों में गए पीजीए सदस्यों ने उस पर पीछे से कुल्हाड़ी से वार कर दिया। दरोगा मौके पर ही ढेर हो गया। इसके पास से कुछ पैसे और दो हथगोले जब्त कर लिए गए। इस घटना से जहां पुलिस अधिकारियों में दहशत फैल गई , वहीं लोगों ने एक आतंकी की मौत पर राहत की सांस ली। ✶

जनयुद्ध के नेताओं की हत्याओं का बदला लो!

कॉ. कृष्ण (लिंगामूर्ति), कॉ. दधीचि राय, कॉ. पद्मा समेत तमाम शहीदों को दण्डकारण्य का लाल सलाम!

वर्ष 2002 के अप्रैल से लेकर जनयुद्ध ने अपने कई बहादुर योद्धाओं को खो दिया। दुश्मन के भीषण दमनचक्र का समाना करते हुए जनता की कई उत्तम पुत्रियों और उत्तम पुत्रों ने अपने लहू से क्रांतिकारी आन्दोलन के इतिहास में कुरबानी के कई नए अध्याय जोड़े। आन्ध्र के मैदानों, उत्तर तेलंगाना के खेतों, बिहार-झारखण्ड के जंगलों तथा आन्ध्र-उड़ीसा सीमांत की पहाड़ियों में आए दिन वीरों का खून बह रहा है। जहां एक ओर फासीवादी चन्द्रबाबू, धर्मोन्मादी आडवाणी, उनके साम्राज्यवादी आका इस पर जश्न मना रहे हैं, वहीं दूसरी ओर पीजीए के बहादुर योद्धा अपने आंसुओं को पोंछकर इन वीरों की हत्या का बदला लेने दुश्मन के बलों पर लगातार हमले कर रहे हैं।

कॉमरेड कृष्ण

ऐतिहासिक 9वीं कांग्रेस के कर्तव्यों को पूरा करने की दिशा में समूची पार्टी ने दृढ़ता से कदम बढ़ाया है। इस दौरान देश भर में जनयुद्ध ने कई कामयाबियां हासिल कीं। आधार-इलाकों की स्थापना के लक्ष्य से सभी पार्टी इकाइयां और पीजीए के सभी बलों ने पुरजोर प्रयास शुरू किए हैं। लेकिन इस दौरान हमें काफी खून भी बहाना पड़ा। हमारे कई साथियों ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए अपनी जानें कुरबान कर दीं। उल्लेखनीय बात यह है कि इन शहीदों में राज्य स्तर के चार नेता शामिल हैं। आन्ध्रप्रदेश राज्य कमेटी सदस्य कॉ. लिंगामूर्ति, बिहार-झारखण्ड संयुक्त राज्य कमेटी सदस्य कॉ. दधीची राय और उत्तरी तेलंगाना स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य कॉ. पद्मा, दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी सदस्य कॉ. सुखदेव के अलावा कई जिला स्तर और एरिया स्तर के नेता, पार्टी के आम सदस्य, समर्थक भी पुलिसिया हत्याकांड के शिकार हो गए। 'दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी' इन तमाम वीरों को नम्रता से श्रध्दांजली पेश करती है। उनके आदर्शों को स्वीकार कर उनके अधूरे मकसद को पूरा करने की कसम खाती है। आइए, इनमें कुछ साथियों की संक्षिप्त जीवनियों पर नजर डालें – उनके आदर्श गुणों को आत्मसात करें।

कॉ. कृष्ण (लिंगामूर्ति)

27 अप्रैल को आंध्रप्रदेश के महबूबनगर जिले में छापामारों की एक टुकड़ी के सदस्य कृष्ण नदी को बारी-बारी से पार कर रहे थे। जब छापामारों का एक जत्था पार कर रहा था, अचानक हुए हादसे में नांव उलट जाने से चार कॉमरेड शहीद हो गए। उनमें पार्टी का राज्य कमेटी सदस्य कॉ. कृष्ण (लिंगामुर्ति), महबूबनगर जिला कमेटी सचिव कॉ. प्रभाकर, क्रांतिकारी सांस्कृतिक आन्दोलन का नेता कॉ. भास्कर, कॉ. कृष्ण का सुरक्षा गारद कॉ. मधु शामिल हैं। हालांकि इनमें कॉ. कृष्ण और कॉ. प्रभाकर अच्छे तैराक थे, लेकिन कॉ. भास्कर, जो तैरना नहीं जानते थे, को बचाने के प्रयास में वे भी बह गए। इन सभी वीरों को लाल सलाम पेश करेंगे।

कॉ. कृष्ण पार्टी का एक वरिष्ठ नेता थे। पिछले 25 सालों से वह क्रांतिकारी आन्दोलन में दृढ़ता से डटे रहे। उनका जन्म संघर्ष का पर्याय माने जाने वाले करीमनगर जिले के अंबाला गांव में हुआ था। वरंगल शहर में वह काकतीय विश्वविद्यालय में तेलगु साहित्य में एम.ए. करते हुए 1978 में रैडिकल छात्र संगठन (आरएसयू) का सदस्य बन गए। 1979 में संपन्न आरएसयू के तीसरे राज्य अधिवेशन में वह उसके संयुक्त सचिव चुन लिए गए थे। बाद में 1981 में वह आरएसयू के उपाध्यक्ष बने थे। 1978-1982 के दरमियान वह उत्तरी तेलंगाना के सभी कस्बों-शहरों में जाकर छात्रों को गोलबंद करते थे। वह एक बढ़िया वक्ता थे। उन दिनों उनका भाषण सुनने के लिए दूर-दूर से लोग आकर आमसभाओं में शामिल हो जाया करते थे। वह छात्रों का लोकप्रिय नेता थे। जल्द ही जिले के नौजवानों और किसानों में उनकी खासी पहचान बन गई।

1983 में पार्टी के आह्वान पर उन्होंने वरंगल से कर्नूल शहर जाकर जिला संगठक की जिम्मेदारी ली। बहुत कम वक्त में उन्होंने कर्नूल जिले में छात्र-नौजवान आन्दोलन खड़ा कर दिया। मजदूरों में भी उन्होंने संघर्ष खड़े किए। नल्लमला वन क्षेत्र के आदिवासियों के साथ एकता कायम करके, वहां पर छापामार दस्ते का गठन करने में उन्होंने जबर्दस्त योगदान दिया।

1985 में सम्पन्न रायलसीमा क्षेत्रीय अधिवेशन में उन्हें क्षेत्रीय कमेटी सदस्य चुन लिया गया था। 1994 में जब कर्नूल और प्रकाशम जिले के छापामार दस्तों को मिलाकर नल्लमला डिवीजन का गठन किया गया, तब वह उसके पहले सचिव बने थे। 1995 में सम्पन्न आन्ध्रप्रदेश के 14वें अधिवेशन में राज्य कमेटी के वैकल्पिक सदस्य के रूप में कॉ. कृष्ण को चुन लिया गया। 1996 में हुई राज्य कमेटी की बैठक में उन्हें राज्य कमेटी में सहयोजित किया गया। वर्ष 2000 में संपन्न आंध्रप्रदेश के 15वें राज्य अधिवेशन में उन्हें फिर से राज्य कमेटी में चुन लिया गया। बाद में वह उसके सचिवालय सदस्य बन गए।

कॉमरेड कृष्ण एक कुशल कार्यकर्ता थे। उन्होंने न सिर्फ नल्लमला क्षेत्र के आन्दोलन का मार्गदर्शन किया, बल्कि राज्य के महिला, छात्र और साहित्यिक आन्दोलनों का भी मार्गदर्शन किया। पार्टी द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारियों को पूरा करने में उन्होंने कभी कोई हिचकिचाहट नहीं दिखाई। पिछले दो सालों से उन्होंने अपना ध्यान दक्षिणी तेलंगाना पर केंद्रित किया और खास तौर पर महबूबनगर जिले के आन्दोलन में नए सिरे से जान फूंकने की कोशिश करते रहे।

कॉमरेड कृष्ण की राजनीतिक एवं सांगठनिक क्षमताओं के साथ-साथ उनके व्यक्तिगत गुण भी पार्टी के हरेक सदस्य के लिए आदर्शपूर्ण हैं। वह नम्रता, निस्वार्थ, निरालापन, कठिन परिश्रम, अनुशासनबद्धता अपने साथियों के प्रति स्नेह आदि गुणों के लिए जाने जाते थे। जनता के साथ उनका घनिष्ठ संबंध रहा। नल्लमला क्षेत्र के गांव-गांव में उनकी लोकप्रियता आज भी कायम है। गंभीर स्पांडिलाइटिस, पैरों में

दर्द आदि बीमारियों से ग्रस्त होने के बावजूद उन्होंने कभी अपनी अस्वस्थता को कर्तव्यों के पालन में बाधक बनने नहीं दिया। खुद को हो सकने वाले खतरे की रत्ती भर भी परवाह न करते हुए, आखिरी सांस लेते हुए भी अपने साथी को बचाने की उनकी कोशिश व तत्परता यही साबित करती हैं कि वह अपने साथी कॉमरेडों के साथ कितना जवाबदेह रहा करते थे। आन्ध्रप्रदेश के महिला आन्दोलन की लोकप्रिय नेता कॉ. पद्मा उनकी जीवन संगिणी थीं। कॉ. पद्मा को 1994 में पुलिस ने एक अन्य नेता कॉ. सूर्यम के साथ पकड़कर झूठी मुठभेड़ में गोली मार दी थी।

कॉ. कृष्ण की मृत्यु न सिर्फ आन्ध्रप्रदेश के आन्दोलन को, बल्कि देश में जारी क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए भी जबर्दस्त नुकसान है। आइए, फिर एक बार कॉ. कृष्ण और उनके साथ शहीद हुए कॉ. प्रभाकर, कॉ. भास्कर और कॉ. मधु को श्रद्धांजली पेश करें और उनके अरमानों को पूरा करने का संकल्प लें।

कॉ. पद्मा (रजिता)

2 जुलाई को कॉ. पद्मा को मारने के बाद खुद दुश्मन ने ही अखबारों में लिखा था कि वह अब तक कोई 15-16 हमलों में बच गईं। उनकी अंतिम यात्रा में भाग लेने के लिए उमड़ पड़े हजारों लोगों ने पुलिस व शासक वर्गों की इन दलीलों को धूमिल कर दिया कि 'आन्ध्र में पीपुल्सवार की लोकप्रियता अब खत्म हुई' और 'पीपुल्सवार का जनाधार घट चुका है।' कॉ. पद्मा ने पिछले 13-14 वर्षों से उत्तरी तेलंगाना में पुलिस बलों तथा उनके मालिक जमींदारों और दलाल पूंजीपतियों की नींदें उड़ा रखी थीं। उनकी मौत पर जहां पुलिस अधिकारियों ने मिठाइयां बांटीं, वहीं उत्तरी तेलंगाना के अनेक गावों में शोषित-उत्पीड़ित लोगों के घरों में चूल्हे नहीं जले।

कॉ. पद्मा करीमनगर जिले के जम्मिकुंटा कस्बे के एक उच्च मध्यम वर्ग के परिवार में जन्मी थीं। जब वह स्नातक पढ़ रही थीं तब उन्हें जिले में जोरों पर चल रहे सामंतवाद-विरोधी संघर्षों ने आकर्षित किया। उन्होंने कॉलेज में आरएसयू का नेतृत्व किया तथा कॉलेज के छात्र संघ चुनाव भी जीता। बाद में अपनी एक सहेली के साथ मिलकर छापामार दस्ते में शामिल होने का फैसला लिया और कॉलेज छोड़ दिया। तबसे उन्होंने एक दस्ता सदस्या के रूप में अपनी छापामार जिंदगी शुरू कर दी। बाद में करीमनगर जिले के हुस्नाबाद दस्ते की कमान संभाल ली।

कॉमरेड पद्मा

करीमनगर जिले में जारी पुलिस के श्वेत आतंक के बीचों-बीच ही कॉ. पद्मा ने आन्दोलन को मजबूत बनाने का बीड़ा उठाया। आए दिन झूठी मुठभेड़ों में संगठन सदस्यों और आम लोगों को मारना, पार्टी के समर्थकों के घरों को ध्वस्त करना, छापामारों के अड्डों की घेराबंदी करके गोलियों की बौछार करना आदि तरीके अपनाकर पुलिस ने कई सालों से आतंक मचा रखा है। इसके बावजूद वह टस से मस नहीं हुईं। उन्होंने पुलिस के कई हमलों का बहादूरी के साथ मुकाबला किया। अपने दस्ते का पूरी क्षमता के साथ नेतृत्व किया। करीमनगर जिले के आन्दोलन को मजबूती दिलाने में उनका जबर्दस्त योगदान रहा। 1995 में उन्हें जिला कमेटी सदस्या के रूप में चुन लिया गया।

वर्ष 2000 में सम्पन्न उत्तरी तेलंगाना अधिवेशन में कॉ. पद्मा को स्पेशल जोनल कमेटी की वैकल्पिक सदस्या के तौर पर चुन लिया गया। बाद में उन्होंने पश्चिम करीमनगर-निजामाबाद संयुक्त डिवीजन कमेटी सचिव की जिम्मेदारी संभाल ली।

हाल में संपन्न स्पेशल जोनल कमेटी की मीटिंग में, यानी उनकी शहादत के कुछ माह पहले, उन्हें स्पेशल जोनल कमेटी में सहयोजित किया गया। लेकिन दुर्भाग्य से यह जिम्मेदारी लेने से पहले ही, 2 जुलाई को करीमनगर जिले के नेरेल्ला में हुए एक मुठभेड़ में पुलिस का मुकाबला करते हुए कॉ. पद्मा शहीद हो गईं। उत्तरी तेलंगाना के क्रांतिकारी आन्दोलन में वह पहली महिला थीं जो राज्य स्तर की नेता बनीं।

कॉ. पद्मा हमेशा अपने हंसमुख चेहरे के लिए जानी जाती थीं। वह अपने साथियों के साथ, जनता के साथ जितनी सरलता और स्वस्थ हंसी-मजाक के साथ बातें करती थीं, राजनीतिक मुद्दों पर अपने विचार उतनी ही गंभीरता एवं दृढ़ता के साथ पेश किया करती थीं। पार्टी के ऐतिहासिक 9वीं कांग्रेस में भाग लेने वाले उत्तरी तेलंगाना के प्रतिनिधि मण्डल में वह भी शामिल थीं। उसमें उन्होंने पार्टी की राजनीतिक लाइन को समृद्ध बनाने के लिए की गई बहस-मुबाहिसों में बढ़-चढ़कर भाग लिया। वह राजनीतिक रूप से एक परिपक्व नेता थीं जिसने अपने एक दशक से ज्यादा क्रांतिकारी जीवन में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनके फौलादी इरादों को समझने के लिए एक बात काफी है कि एक बार पुलिस की गोलीबारी में गोली लगने से उनका एक हाथ बुरी तरह टूट गया था, उसके बावजूद उन्होंने आखिरी दम तक बंदूक को अपने हाथों से छूटने नहीं दिया। दुश्मन की व्यापक घेराबंदी के चलते उन्हें इलाज के लिए जाने का मौका भी नहीं मिला था, तब तक उनके जख्म में संक्रामण लगा था। बाद में उन्होंने जनता की सक्रिय मदद से इलाज करवा लिया और फिर से *(शेष पृष्ठ 10 पर....)*

कॉमरेड दधीची राय को लाल सलाम!

26 मई को बिहार-झारखण्ड के एक गांव विश्रामपुर में मुकाम किए एक छापामार दस्ते पर पुलिस ने कातिलाना हमला किया। इस हमले में बिहार-झारखण्ड संयुक्त राज्य कमेटी सदस्य कॉ. दधीची राय, जिन्हें पटेल के नाम से लोकप्रियता हासिल है, समेत कुछ अन्य साथी शहीद हो गए। कॉ. दधीची को हाल ही में राज्य कमेटी सदस्य के रूप में सहयोजित किया गया था। उन्होंने अपने लंबे क्रांतिकारी जीवन में जनता और पार्टी के कतारों का बढ़िया नेतृत्व किया। दुश्मन के खिलाफ किए गए कई हमलों को कामयाबी दिलाने में उनका जबर्दस्त योगदान रहा। उनकी शहादत से बिहार-झारखण्ड की जनता ने अपना एक उत्तम बेटा खोया और पार्टी कतारों ने अपना एक जानदार साथी।

आइए, हम सब कसम लें कि विश्रामपुर शहीदों का बहाया खून बेकार नहीं जाने देंगे। इस लुटेरी राज्य व्यवस्था को जड़ों से उखाड़ फेंककर ही हमारे प्यारे शहीदों को सच्ची श्रद्धांजली पेश करेंगे।

पुलिस बर्बरता का शिकार हुए जोगा वंजामी अमर रहें!

पुलिस के "गुण्डाधूर की जय अभियान" में गुण्डाधूर के वारिस की हत्या

उत्तर बस्तर डिवीजन में पार्टी द्वारा संचालित कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियान में जनता की व्यापक भागीदारी से दुश्मन के पुलिस बलों की नींदें उड़ीं। इसलिए उसने मजबूर होकर जनता के खिलाफ एक आतंकी अभियान शुरू किया, जिसका नाम "शहीद गुण्डाधूर की जय" रखा। इसे देखकर ऐसा लगता है जैसे पुलिस वाले गुण्डाधूर के वारिस हों और जनता गुण्डाधूर के दुश्मन। लेकिन संघर्षशील जनता को यह अच्छी तरह मालूम है कि गुण्डाधूर ने साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़ा था। और आज भी दण्डकारण्य में जो लड़ाई हो रही है उसका लक्ष्य भी साम्राज्यवाद के साथ-साथ सामंतवाद और दलाल नौकरशाही पूंजीवाद को खत्म करना है। जनता को यह भी मालूम है कि जिस सरकार ने पुसिस वालों को वेतन देकर जनता के खिलाफ तैनात किया है वह असल में साम्राज्यवादियों की कठपुतली है। इसीलिए, पुलिस वालों को गुण्डाधूर का नाम लेने का नैतिक अधिकार ही नहीं है।

शहीद जोगा वंजामी की पत्नी सुखड़ी बाई - अपने पति के हत्यारों को सजा देने की मांग करते हुए

बहरहाल, पुलिस ने अपने इस आतंकी अभियान के तहत नारायणपुर क्षेत्र के ग्राम झारा के निवासी कॉ. जोगा वंजामी की निर्मम हत्या कर दी। कॉ. जोगा वंजामी एक सामान्य माड़िया आदिवासी थे और क्रांति के पक्के समर्थक भी। उनकी बीवी और छह बच्चे हैं। वह जन संगठन के एक सक्रिय कार्यकर्ता थे। बड़गांव की घटना में पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी में उनके पैर में गोली लगी थी। पुलिस ने उन्हें घायल अवस्था में पकड़कर गोली मारकर हत्या कर दी। और बाद में यह प्रचार शुरू किया कि नक्सलियों के साथ हुई मुठभेड़ में नक्सली कमाण्डर रामधर की मृत्यु हुई। गौरतलब बात यह है कि पुलिस के "जय गुण्डाधूर अभियान" में जिस झारा गांव के जोगा की हत्या हुई, उसी झारा गांव ने अंग्रेजी 'हूकमत के खिलाफ शहीद गुण्डाधूर के नेतृत्व में चले 1910 के महान भूमकाल संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यहां के कई लोगों को अंग्रेजी फौज ने मार डाला था। यहां की जनता ने उस संग्राम में वीरता से भाग लिया था। आज उसी गांव ने गुण्डाधूर की विरासत को ऊंचा करते हुए एक और शहीद दे दिया।

लेकिन इस जघन्य हत्या के खिलाफ जनाक्रोश भड़क उठा। इस हत्या के सूत्रधार नारायणपुर थानेदार अमृत केरकेट्टा के खिलाफ जनता ने जबर्दस्त आन्दोलन छेड़ दिया। अमृत केरकेट्टा आतंक का पर्याय बना हुआ था, जिसने झारा, मैमागवाड़ी, वेड़माकोट, दुरवेड़ा, आदि गांवों के कई बेकसूर लोगों को गिरफ्तार भी किया था। जोगा वंजामी की हत्या इसी की करतूत थी। इसके अत्याचारों के खिलाफ नारायणपुर क्षेत्र की सभी तबकों की जनता एकजुट हुई थी। उन्होंने एक संयुक्त मोर्चे की अगुवाई में 17 जून को नारायणपुर में एक शानदार रैली निकालकर पीओ और कलेक्टर को ज्ञापन दिया। उन्होंने अमृत केरकेट्टा को कठोर सजा देने की मांग की और जोगा वंजामी की हत्या की जांच की भी मांग की। इस रैली में जनता ने बड़ी संख्या में और खुलकर भाग लिया और पुलिस के खिलाफ जोरदार नारेबाजी की। कुछ दिन बाद सरकार को मजबूर होकर जुल्मी थानेदार का स्थानान्तरण करना पड़ा। भले ही सरकार ने इस हत्यारे को बचाकर सिर्फ स्थानान्तरित कर हाथ झाड़ लिए हों, लेकिन जनता अपनी जन-अदालत में इस हत्यारे को जरूर दण्डित करेगी। आइए, गुण्डाधूर की वारिस कॉ. जोगा वंजामी को लाल सलाम पेश करें, और साम्राज्यवाद को इस धरती से उखाड़ फेंककर उनके सपनों को साकार बनाने की कसम खा लें। ❑

हत्यारा थानेदार अमृत केरकेट्टा के जुल्मों के खिलाफ नारायणपुर में जन-प्रदर्शन

(.... पृष्ठ 9 का शेष)

जंगे मैदान में खड़ी हो गईं दुश्मन के खिलाफ। उन्हें खत्म करने के लिए दुश्मन हाथ धोकर पीछे पड़ा था, लेकिन कई बार उसे निराशा ही हाथ लगी थी। इसलिए अब दुश्मन उनकी मौत से खुशी से फूले न समा रहा है।

कॉ. पद्मा की मौत से उत्तर तेलंगाना के आन्दोलन ने एक सक्षम नेता खोई। कॉमरेड पद्मा की मौत से खासकर तमाम क्रांतिकारी महिलाओं को गहरा सदमा पहुंचा। उनकी हत्या की खबर सुनते ही हजारों महिलाएं और पुरुष सैलाब की तरह उमड़ पड़े, उनकी अंतिम यात्रा में भाग लेने और उन्हें आखिरी सम्मान पेश करने के लिए। सच कहा जाए तो दुश्मन कॉ. पद्मा को मारकर भी हार गया क्योंकि उनकी अंतिमयात्रा में भाग लेने से जनता को बन्दूक और लाठी के बल पर रोकने की उसकी तमाम कोशिशें टांय-टांय फिस्स हो गईं। जनता ने फिर एक बार साबित किया कि जनता के सच्चे सेवकों को मौत नहीं हैं – वे अमर हैं।

आइए, अपनी बहादुर साथिन कॉ. पद्मा और उनके साथ उसी मुठभेड़ में मारे गए कॉ. विक्रम, कॉ. मानसा और कॉ. सागर को अपनी श्रद्धांजली पेश करें – उनके मकसद को पूरा करने तक आराम नहीं लेने का प्रण लें। ❑

28 जुलाई

"कुरबानियों की राह पर चलकर शहीदों के अरमानों को पूरा करेंगे – नव जनवादी भारत का निर्माण करेंगे"

शहीद-सप्ताह के दौरान समूचे दण्डकारण्य में आयोजित सभा और रैलियों में लिया गया संकल्प

ऐतिहासिक नक्सलबाड़ी और श्रीकाकुलम संघर्षों की अस्थायी पराजय के बाद, आज फिर एक बार क्रांतिकारी युद्ध देश के राजनीतिक पटल पर सशक्त रूप से उभरा है। पार्टी की ऐतिहासिक 9वीं कांग्रेस द्वारा निर्धारित कार्यभारों को अपने कंधों पर लेकर पार्टी के तमाम कतारों और क्रांतिकारी जनता ने दृढ़तापूर्वक कदम बढ़ाया है। "देश भर में जनयुद्ध को तेज करो" का नारा सभी के मन में गूंज रहा है। भारत की नव जनवादी क्रांति को सफल बनाकर देश को सामंती, दलाल पूंजीवादी और साम्राज्यवादी बंधनों से मुक्त कराने के लक्ष्य से कई वीरों ने अपनी जान कुरबान कर दी। पिछले साल की 28 जुलाई से लेकर इस वर्ष की 28 जुलाई तक हमारी पार्टी के सैकड़ों कार्यकर्ता शहीद हुए हैं। इनमें राज्य स्तर से लेकर सभी स्तरों के पार्टी नेता और समर्थक व आम जनता भी शामिल हैं।

इस वर्ष भी क्रूर पुलिसिया दमन के बीचोंबीच ही दण्डकारण्य के पार्टी कतारों और क्रांतिकारी जनता ने शहीद-सप्ताह के दौरान सभाएं और रैलियां आयोजित कर शहीदों को श्रद्धांजली पेश की। आन्ध्र, उत्तरी तेलंगाना, एओबी, बिहार-झारखण्ड, पश्चिम बंगाल आदि राज्यों में दुश्मन के पाशविक बलों के खिलाफ शूरता से जूझते हुए अपने प्राण गंवाए सभी वीर योद्धाओं को जनता ने याद किया। उनके अधूरे मकसद को पूरा करने का संकल्प लिया।

पेश हैं विभिन्न डिवीजनों में आयोजित शहीद-सप्ताह के कार्यक्रमों का संक्षिप्त ब्यौरा। हमें खेद है कि दक्षिण बस्तर डिवीजन की रिपोर्टें नहीं पेश कर पा रहे हैं।

माड़

बीते एक साल के दौरान दण्डकारण्य में शहीद हुए कॉ. सुखदेव (एसजेडसी सदस्य एवं उत्तरी कमान का कमाण्ड-इन-चीफ), कॉ. रणदेव (दक्षिण बस्तर डीवीसी सदस्य) कॉ. विजय (कमाण्डर), कॉ. महेन्दर (मद्देड़ एसी सदस्य-पश्चिम बस्तर), कॉ. मल्लेश (प्लाटून-2 का सदस्य) को तथा अन्य राज्यों में शहीद हुए कॉ. कृष्ण (आंध्र राज्य कमेटी सदस्य), कॉ. पद्मा (उत्तरी तेलंगाना एसजेडसी सदस्या), कॉ. दधीची राय (बिहार-झारखण्ड राज्य कमेटी सदस्य) समेत सभी शहीदों को श्रद्धांजली पेश करते हुए शहीद-सप्ताह मनाने का फैसला लिया गया। डिवीजनल कमेटी की ओर से इस अवसर पर एक पर्चा निकालकर लोगों में बांटा गया। इसके अलावा, पोस्टरों और बैनरों से भी व्यापक प्रचार कार्यक्रम चलाया गया। 'भूमकाल' शहीदों की याद में एक स्मारक निर्मित करने, पुलिस द्वारा तबाह किए गए स्मारकों का दोबारा निर्माण करने, तयशुदा गांवों में नए स्मारकों का निर्माण करने आदि फैसले डिवीजन की पार्टी कमेटियों ने लिए।

कोहकामेट्टा एरिया के ग्राम मोहंदी में एक बड़ी सभा हुई जहां पर शहीद श्रीकांत के स्मारक का दोबारा निर्माण किया गया। कोहकामेटा और परालकोट एरिया के कोई 60 गांवों से लगभग 4,000 स्त्री-पुरुष सभा में भाग लेने आए थे। जन संगठनों के दर्जनों कार्यकर्ताओं को सभा के सुचारू संचालन के लिए प्रशिक्षित कर लिया गया और उन्होंने अपनी वलन्टियर भूमिका बड़ी जिम्मेदारी के साथ निभाई। गगनभेदी नारे लगाते हुए जुलूस की शक्ल में स्त्री-पुरूष कॉ. श्रीकांत के स्मारक के पास पहुंचे थे। केएएमएस नेता कॉ. डाली ने झण्डा फहराकर सभा का आरम्भ किया। पीजीए के योद्धाओं ने शहीदों के सम्मान में हवा में फायर की। बाद में शहीदों की याद में 2 मिनट की खामोशी रखी गई।

सभा को संबोधित करते हुए एसी सचिव कॉ. राधा ने हाल में शहीद हुए कॉमरेडों के बारे में बताकर, उनके मकसद को पूरा करने की बात रखी। बाद में सीएनएम (चेतना नाट्य मंच) के कॉ. नवीन ने तमाम शहीदों को श्रद्धांजली देते हुए 'लाल सलाम' गीत पेश किया। बाद में कॉ. वाणी ने माड़ डिवीजन के शहीद साथियों की जीवनी बताई। आखिर में डिवीजन पार्टी सचिव कॉ. पाण्डू ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने शहीद नेता कॉ. चारु मजुमदार से लेकर कॉ. सुखदेव, कॉ. पद्मा तक सभी शहीदों की कुरबानियों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि उत्पीड़ित जनता की मुक्ति के लिए कम्युनिस्ट बनकर शहीद होने वालों का जीवन धन्य है। उन्होंने ऐतिहासिक भूमकाल संग्राम के वीर शहीद गुण्डाधुर समेत ब्रितानी साम्राज्यवाद के खिलाफ लड़कर शहीद हुए गेंदसिंह और अन्य असंख्य शहीदों को भी इस मौके पर याद किया। उन्होंने वहां उपस्थित जनता को यह भी याद दिलाया कि माड़ के आदिवासियों को साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष की विरासत हैं। और उन्होंने आगे कहा, "आज हजारों वीर शहीदों की कुरबानी की बदौलत

इन्द्रावती एरिया में कॉ. सुखदेव की याद में निर्मित स्मारक का अनावरण-दृश्य

इन्द्रावती एरिया के ग्राम धर्मा में शहीद स्मारक के सामने आयोजित सभा में उपस्थित जनता

ही हमारी पार्टी का 12 राज्यों में विस्तार हो सका है। जनयुद्ध को आगे बढ़ाने की दिशा में एक गुणात्मक छलांग लगाते हुए हमने 2 दिसम्बर 2000 को, जो कि हमारे प्यारे नेता कॉ. श्याम, कॉ. महेश, कॉ. मुरली का शहादत-दिवस भी था, जन छापामार सेना (पीजीए) के रूप में जनता की सेना का गठन किया। अब जरूरत इस बात की है कि हम अपनी पीजीए को मजबूत बनाएं और उसे जन मुक्ति सेना (पीएलए) में बदल दें।''

सभा की अध्यक्षता करने वाली कॉ. नीला ने अन्य शहीदों के साथ-साथ 'भूमकाल' संग्राम में शहीद हुए छोटे डोंगर के कोर्राम, वेडमा, दुरवा का भी स्मरण किया। बड़गांव काण्ड में घायल झारा गांव के निवासी कॉ. जोगा वंजामी की पुलिस के हाथों हुई हत्या को कॉ. नीला ने एक कायराना कार्रवाई ठहराया और कहा कि 'भूमकाल' की विरासत को आगे बढ़ाते हुए कॉ. जोगा ने शहादत प्राप्त की है।

30 जुलाई को ग्राम कोहकामेटा में आयोजित शहीदों की स्मृति-सभा में 20 गांवों से आए 400 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। जुलूस जब सभा-स्थल पर पहुंचा तो कॉ. नवीन ने झण्डा फहराया। बाद में कॉ. दिनेश और कॉ. कौसल्या ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने माड़ डिवीजन के शहीदों और महान भूमकाल संग्राम के शहीदों को याद किया। कॉ. पाण्डु ने हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी क्रांतिकारी आन्दोलन के विकासक्रम के बारे में बताते हुए इसका श्रेय शहीदों की बहादुराना कुरबानियों को दिया।

इरकभट्टी और कुस्तुरमेट्टा में आयोजित स्मृति सभाओं में जनता ने शहीदों के प्रति श्रद्धांजली अर्पित की। उन्होंने शपथ ली कि संघर्ष की विरासत को ऊंचा उठाकर उत्पीड़ितों का राज्य जीत लेंगे। 3 अगस्त को गांव नेलनार में सभा मनाई गई। यहां पर 'भूमकाल' शहीदों का स्मारक निर्मित किया गया। हाथों में लाल ध्वज लेकर लोगों का जुलूस जब गांव के पास ही स्थित एक बरगद के पास पहुंचा तो सभी की आंखें नम हुईं क्योंकि उसी बरगद के पास 1910 के महान भूमकाल संग्राम के दौरान जनता के खून की धार बहाई गई थी। वहां अंग्रेजी दरिन्दों ने कई लोगों को गोलियों से भून डाला था। कॉ. सुक्कु ने लाल झण्डा फहराकर सभा का उद्घाटन किया। शहीदों की याद में पीजीए के कमाण्डर ने हवा में फायर की और सभी ने 2 मिनट तक खामोशी मनाई। सभा की अध्यक्षता कॉ. नीला ने की और कॉ. विनोद और कॉ. पाण्डु ने सभा को संबोधित किया।

28 जुलाई के पहले कोहकामेटा एरिया में एक व्यापक प्रचार अभियान चलाया गया। जिसमें कुल 118 स्त्री-पुरुष कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। पुरुषों की 4 और महिलाओं की 4 टोलियों ने गांव-गांव में शहीदों की कुरबानियों के बारे में प्रचार किया। सीएनएम के दस्ते ने भी प्रचार अभियान में भाग लिया।

इन्द्रावती एरिया में 'शहीद-सप्ताह' के दौरान कुल 8 जगहों पर सभाएं आयोजित की गईं। इनमें कुल 7,000 लोगों ने भाग लिया और शहीदों के प्रति श्रद्धांजली अर्पित की। शहीद सप्ताह के पहले डीएकेएमएस की रेन्ज कमेटियों ने प्रचार अभियान चलाया।

जाटलूर एलजीएस की अगुवाई में गांव जाटलूर में शहीदों की याद में सभा हुई। इसमें 18 गांवों से आए 600 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। कॉ. कोल्ले ने झण्डा फहराया। कॉ. आयतू ने स्मारक का अनावरण किया जोकि लाल कपड़े से बांस से बने ढांचे को लपेटकर बनाया गया था। 30 जुलाई को बटवेड़ा में आयोजित सभा में लगभग 10 गांवों से 600 जनता ने भाग लिया। 1 अगस्त को ग्राम डुंगा में आयोजित सभा में 13 गांवों से आए 1400 स्त्री-पुरूषों ने भाग लिया, जहां पर शहीद सुखदेव की याद में निर्मित 20 फुट ऊंचे स्मारक का अनावरण किया गया। इस सभा में 13 गांवों से 1,400 लोगों ने भाग लिया। कॉ. ऊराल ने शहीद सुखदेव के स्मारक का अनावरण किया और कॉ. मंगली ने झण्डा उठाया। ग्राम धरमा में इस साल लोगों ने मोटु शहीदों (कॉ. रणदेव, कॉ. विजय और कॉ. मल्लेश) और भूपालपटनम शहीद कॉ. महेन्द्र की याद में 20 फुट ऊंचा स्मारक बनाया। 3 अगस्त को यानी शहीद-सप्ताह के आखिरी दिन इसके उदघाटन के अवसर पर आयोजित सभा में 2,000 लोगों ने भाग लिया। ये लोग इन्द्रावती नदी के दोनों तरफ बसे गांवों के थे। गांव में एक स्कूल के पास इकट्ठे हुए लोगों ने स्मारक तक जोरदार नारेबाजी करते हुए जुलूस निकाला। जुलूस में शामिल स्त्री-पुरुष अपने हाथों में पोस्टर, बैनर और प्लाकार्ड लिए हुए थे। जब जुलूस स्मारक तक पहुंचा, सबसे पहले केएएमएस नेता कॉ. फगनी ने पार्टी का झण्डा फहराकर सभा उद्घाटन किया। इसके बाद संगठन नेता कॉ. झाडू ने स्मारक का अनावरण किया। जब कॉ. झाडू स्मारक अनवारण कर रहे थे, तब लोगों ने कॉ. रणदेव, कॉ. विजय, कॉ. मल्लेश और कॉ. महेन्द्र का नाम लेते हुए ''अमर रहें'' कहकर नारे लगाए जिससे सारे खेत और जंगल गूंज उठे। बाद में शहीदों के प्रति श्रद्धांजली पेश की गई, और सभा को कई वक्ताओं ने सम्बोधित किया। इन सभी सभा-जुलूसों में एरिया मौजूद दोनों स्थानीय छापामार दस्तों ने भाग लिया।

इसके अलावा एरिया के सभी छोटे-बड़े गांवों में जन संगठनों के नेतृत्व में ग्राम स्तर की सभाएं हुईं। जन संगठन की रेंज कमेटियों के सदस्यों ने कुछ बड़ी सभाओं का भी आयोजन किया। ग्राम कोडेमपारा में आयोजित सभा में 17 गावों से 450 लोग; ग्राम गोंडमेट्टा में आयोजित सभा में 5 गांवों से 750 लोग; ग्राम पोच्चवेड़ा में आयोजित सभा में 8 गांवों के 270 लोगों ने भाग लिया। इन सभाओं को रेंज कमेटी के नेताओं ने संबोधित किया। सभी सभाओं में स्थानीय सीएनएम दस्ता द्वारा दिए गए सांस्कृतिक कार्यक्रम विशेष आकर्षण रहे।

परालकोट एरिया में कुत्तुल, बालेवाड़ा और जटवारी गांवों में

सभाएं हुईं, जिन्हें स्थानीय पार्टी नेताओं और जन संगठन नेताओं ने संबोधित किया। इन सभाओं में जनता ने भारत की क्रांति को सफल बनाने के लिए अपनी जान कुरबान करने वाले सभी शहीदों को श्रद्धांजली पेश की गई। ग्राम कुत्तुल में शहीद सुखदेव की याद में और ग्राम बालेवाड़ा में शहीद राजे की याद में निर्मित स्मारकों का अनावरण किया गया। परालकोट संघर्ष (1825) की विरासत को आगे बढ़ाते हुए पीपुल्सवार पार्टी के नेतृत्व में जारी नवजनवादी क्रांति को सफल बनाने के संकल्प के साथ इस एरिया में 'शहीद-सप्ताह' के कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए।

उत्तर बस्तर

डिवीजनल कमेटी के आह्वान पर डिवीजन के सभी क्षेत्रों में जनता ने 'शहीद-सप्ताह' को सफल बनाया। देश भर में क्रान्तिकारी आन्दोलन को मजबूत करते हुए सभी कॉमरेडों को, विशेषकर उत्तर बस्तर आन्दोलन के निर्माता और पीजीए का जांबाज़ योद्धा कॉ. सुखदेव को तथा 'भूमकाल' की विरासत को आगे ले जाते हुए पुलिस की झूठी मुठभेड़ में अपनी जान गंवाने वाले झारा गांव के निवासी कॉ. जोगा वंजामी को याद करते हुए जनता ने उनके प्रति श्रद्धान्जलि अर्पित की।

कोण्डागांव और डौला एलजीएस के क्षेत्र में कुल 10 जगहों पर सभाएं हुईं जिनमें कुल 96 गांवों के 8,000 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। 66 गांवों की जनता ने श्रमदान कर 18 जगहों पर शहीदों की याद में स्मारकों का निर्माण किया, जिनकी ऊंचाई 5 फुट से लेकर 15 फुट तक थी।

कोण्डागांव एरिया के ग्राम उसिरी में आयोजित सभा को 35 गांवों से 3,500 हथियारबन्द स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। सभी ने तीर-धनुष, तलवार, आदि परम्परागत हथियारों का धारण किया। कॉ. सुखदेव की याद में आयोजित इस सभा में दो एलजीएस और एक प्लटून के कुल 46 दस्ता सदस्यों ने भी भाग लिया। कॉ. ललिता ने झण्डा फहराकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। शहीदों को याद करते हुए सभा में दो मिनट की खामोशी रखी गई। बाद में सभा कॉ. ललिता और कॉ. सन्नाई ने सभा को सम्बोधित किया। क्रान्तिकारी जोश भरे माहौल में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ सभा सम्पन्न हुई।

28 जुलाई को बेन्नूर रेन्ज के अद्देमपाडु गांव में आयोजित सभा में 300 महिलाओं समेत कुल 500 लोगों ने भाग लिया। 8 फुट ऊंचा शहीद-स्मारक का अनावरण कर शहीदों को श्रद्धांजली दी गई। डीएकेएमएस अध्यक्ष ने झण्डा फहराया और उसके बाद शहीदों को याद करते हुए दो मिनट का मौन रखा गया। ग्राम इन्नर में आयोजित एक और सभा में 7 गांवों से 700 लोगों ने भाग लिया। जन मिलिशिया के सदस्यों ने अपनी भरमार बन्दूकों से गोली दागकर शहीदों को सलामी दी।

ग्राम गोटाबेन्नूर में भी शहीद-सप्ताह कार्यक्रम मनाया गया जहां पर 5 गांवों के 250 लोगों की मौजूदगी में शहीद सुखदेव के स्मारक का अनावरण किया गया।

कडियानार में आयोजित स्मृति-सभा में 5 गांवों के 600 लोगों ने भाग लिया। सभा को गांव के डीएकेएमएस अध्यक्ष ने सम्बोधित किया। सभा के प्रारम्भ में शहीदों की याद में निर्मित 4 फुट के स्मारक का अनावरण किया गया। कन्वीनार में आयोजित सभा में 20 गांवों से 1500 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। यहां पर निर्मित 15 फुट के स्मारक का अनावरण किया गया। शहीदों को याद करते हुए 2 मिनट का मौन रखा गया। गगनभेदी नारों और शहीद-गीतों के मध्य झण्डा फहराकर सभा का उद्घाटन किया गया। सभा को सम्बोधित करते हुए डीएकेएमएस अध्यक्ष ने आह्वान किया कि शहीदों के अधूरे मकसद को पूरा करने के लिए संघर्ष को तेज किया जाए।

डौला रेन्ज में ग्राम कुइनार में आयोजित सभा में 6 गांवों के 150 लोगों ने भाग लिया। टेकूर में आयोजित सभा में 5 गांवों की जनता ने शहीदों को श्रद्धांजली अर्पित की। कडिमे में आयोजित सभा में 5 गांवों से 100 लोग और मूंदिमेट्टा में बुलाई सभा में 3 गांवों से 200 लोगों ने भाग लिया, जहां शहीदों को श्रद्धांजली अर्पित की गई।

केसकाल एलजीएस इलाके के किसकोडो रेन्ज में सातों दिन आयोजित सभाओं में कुल 3,500 लोगों ने भाग लिया। कुछ गांवों में स्मारक बनाए गए और कुछ गांवों में पहले से निर्मित स्मारकों को लाल रंग पोतकर सजाया गया। कॉ. सुखदेव की याद में जनता ने तीन स्थानों पर स्मारक बनाए जिनमें से एक 30 फुट ऊंचा था। इस एरिया की जनता ने शहीदों के प्रति श्रद्धांजली पेश की और संकल्प लिया कि जब तक उत्पीड़ित जनता का राज कायम नहीं होगा तब तक संघर्ष जारी रहेगा।

डीएकेएमएस और केएमएएस रेन्ज कमेटियों की अगुवाई में छह स्थानों पर सभाएं मनाई गईं। हरेक सभा में 3 से 10 गांवों की जनता ने भाग लिया। इस तरह कुल 1500 लोगों ने सभाओं में भाग लेकर शहीदों के प्रति श्रद्धांजली अर्पित की। छापामार दस्ते की अगुवाई में आयोजित एक अन्य सभा में 40-45 गांवों के करीब 2,000 स्त्री-पुरुषों ने भाग लिया। दस्ता कमाण्डर कॉ. सुभाष ने झण्डा फहराकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। बाद में शहीदों के सम्मान में हवा में पांच गोली दागकर सलामी पेश की गई। कॉ. दसरू ने स्मारक का अनावरण कर उपस्थित लोगों को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा, "आज शहीद-सप्ताह का आखिरी दिन है। शोषणकारी व्यवस्था को उखाड़ फेंककर उत्पीड़ित जनता की मुक्ति हासिल कर जन-राज की स्थापना करने के मकसद से जारी संघर्ष में अब तक अनगिनत वीरों ने शहादत दी है। उनके प्रति सच्ची श्रद्धान्जली यही होगी कि हम उनके अधूरा छोड़े काम को अपने कन्धों पर लें।" बाद में कॉ. सन्तु की अध्यक्षता में आयोजित सभा को कॉ. सुभाष, कॉ. जयमती, कॉ. प्रेम, आदि ने सम्बोधित किया। चेतना नाट्य मंच की टीम के द्वारा प्रस्तुत क्रान्तिकारी गीतों और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ सभा का समापन हुआ।

शहीद-सप्ताह का प्रचार करने के लिए इस क्षेत्र से कुल 60-70 युवक-युवतियों ने प्रचार अभियान चलाया। एरिया में कुल 400 पोस्टर भी लगाए गए थे।

पश्चिम बस्तर

डिवीजनल कमेटी के आह्वान पर 28 जुलाई से 3 अगस्त तक मद्देड एरिया की जनता ने शहीद-सप्ताह के कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में भाग लिया। शहीदों की कुरबानियों को ऊंचा उठाकर उनके आदर्शों और आशयों का प्रचार किया गया। कुल 8 स्थानों पर बड़ी सभाएं सम्पन्न हुईं। इस कार्यक्रम के लिए कोई 500 बैनर तैयार किए गए। बने-बनाए

गंगलूर एरिया में शहीदों को श्रद्धांजली देती जनता

स्मारकों, जो बांस और लाल कपड़े से बनाए गए, को मुख्य चौराहों पर रातोंरात स्थापित कर पुलिस को हैरान में डाल दिया गया। छापामार दस्तों ने चार सभाओं को आयोजित किया, जबकि चार अन्य स्थानों पर डीएकेएमएस-केएमएस के नेतृत्व में सभाएं हुईं। सभी सभाओं में कुल 2,500 लोगों ने भाग लिया।

भैरमगढ़ एलजीएस के तहत पूरे इलाके में व्यापक प्रचार किया गया। केएएमएस और डीएकेएमएस कार्यकर्ताओं ने अलग-अलग दलों में खुद को बांट कर हर दल के 4-5 गांव के हिसाब से प्रचार किया। इन्होंने शहीद-सप्ताह के कार्यक्रमों को सफल बनाने में बड़ा योगदान किया। सभाओं में महिलाओं ने ज्यादा संख्या में भाग लिया जोकि एक विशेष बात थी।

फूलगट्टु में आयोजित सभा में 900 लोगों ने भाग लिया। केएएमएस अध्यक्ष कॉ. यसोनाति ने सभा को सम्बोधित करते हुए शहीदों की कुरबानी और संघर्ष के विकासक्रम पर अपनी बात रखी। डीएकेएमएस के एक कार्यकर्ता ने भी सभा को सम्बोधित किया। पिट्टेपाडू गांव में आयोजित एक और सभा में 1200 लोगों ने भाग लिया। भैरमगढ़ से सिर्फ 8 किलोमीटर दूर पर स्थित पातुडुपारा बाजार में तथा मटवाड़ा बाजार में बने-बनाए स्मारकों को खड़ा कर दिया गया। 100 पोस्टरों और 15 बैनरों का इस्तेमाल किया गया। पोमरालु में 827 और एक अन्य स्थान पर 1300 लोगों ने सभाओं में भाग लिया।

गंगलूर एलजीएस क्षेत्र में महिलाओं के 10 और पुरुषों के 10 प्रचार दलों ने प्रचार अभियान चलाया। एरिया में कुल 8 स्थानों पर बड़ी सभाएं हुईं। 8,000 लोगों ने सभाओं में भाग लिया। गांवों में कई स्थानों पर शहीदों के नाम पर पत्थरों से स्मारक बनाए गए और वहां पर इकट्ठा होकर लोगों ने शहीदों के प्रति श्रद्धांजली अर्पित की।

कोरसेली में आयोजित सभा को कॉ. सुक्की ने सम्बोधित किया। उन्होंने अपने भाषण में कॉमरेड चारू मजुमदार से लेकर बस्तर की धरती पर शहीद हुए कॉमरेड्स अशोक, प्रकाश, जोगन्ना, कमला, महेन्दर, राममूर्ति, भीमन्ना, बाबू, आदि को याद करते हुए कहा कि उनके बलिदानों से ही आज आन्दोलन इस मुकाम पर पहुंच चुका है। और उनके मकसद को पूरा करने के लिए हमें पूरा जोर लगाकर प्रयास करना चाहिए। डिवीजनल कमेटी सदस्या कॉ. निर्मला ने सभा को सम्बोधित करते हुए आन्दोलन के सामने प्रस्तुत चुनौतियों और कार्यभारों का हवाला देते हुए कहा कि हमें शहीदों की राह पर चलकर दृढ़तापूर्वक इन्हें पूरा करना होगा। उन्होंने आधार इलाकों की स्थापना की ओर कदम बढ़ाने में जन मिलिशिया और ग्राम राज्य कमेटियों के महत्व पर रोशनी डाली। सरकार द्वारा अमल झूठे सुधारवादी कार्यक्रमों की खिल्ली उड़ाई और कहा कि संघर्ष के इलाकों में अपनी सत्ता को उखड़ते हुए पाकर शासक वर्ग इस तरह जनता को ललचाकर संघर्ष के धधकते शोलों को बुझाने की नाकाम कोशिशें कर रहे हैं। उन्होंने एरिया में व्याप्त सूखे के लिए भी सरकार को ही दोष देते हुए कहा कि तथाकथित आजादी के 55 साल बाद भी आज बस्तर में ऐसी बदतर स्थिति है कि मानूसून के आने में थोड़ी सी गड़बड़ी हुई तो पूरी खेती ही प्रभावित हो जाती है। आखिर में शहीदों की अनमोल कुरबानियों को सदा मन में रखकर संघर्ष की राह पर दृढ़ता से आगे बढ़ने के संकल्प के साथ सभा का समापन किया गया।

गड़चिरोली

गड़चिरोली जिले में दुश्मन ने शहीद सप्ताह को रोकने की बहुत कोशिश की, कुछ लोगों को गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया। इसके बावजूद एटापल्ली एरिया में जनता ने बड़े पैमाने पर शहीद-सप्ताह मनाया। 62 गांवों से 973 लोगों ने स्मृति-सभाओं में भाग लिया। 5 जगहों में सीमेंट से स्मारक बनाया गया, तीन जगहों में लड़की का, और एक जगह लाल रंग से स्मारक का चित्र बनाया गया, और एक जगह कपड़ा से बनाया गया। इस वर्ष 3 से 13 गांव वालों ने एक-एक जगह में इकठ्ठा होकर शहीद दिवस मनाया। एक सभा का आयोजन छापामार दस्ते की अगुवाई में हुआ, *(शेष पृष्ठ 26 पर....)*

शहीदों के स्मारक को तोड़ने का खामियाजा

गड़चिरोली जिले में 'शहीद-सप्ताह' के दौरान, हर साल की तरह, पुलिस ने दमन अभियान तेज किया। लोगों को शहीद क्रान्तिकारियों के प्रति श्रद्धांजली पेश करने से रोकने के लिए उसने कमर कर रखी थी। जनता को क्रान्ति के रास्ते पर जाने से रोकने के लिए वह शहीदों की यादों को मिटाना चाहता था अपनी बन्दूकों के बल पर। जहां कहीं भी जनता ने कोई स्मारक बनाया, उसने उसे तोड़ना शुरू किया। इससे जन मिलिशिया के सदस्यों ने पुलिस को कड़ा सबक सिखाने की ठान ली। एटापल्ली तहसील के जांबीयागट्टा पुलिस चौकी से महज 1 किलोमीटर दूर पर सड़क किनारे उन्होंने लकड़ियों से बनाए एक स्मारक खड़ा कर दिया। 5 अगस्त को पुलिस को जैसे ही इसकी खबर लगी, तो वह एक जीप में सवार होकर स्मारक से टकरा दिया। जैसे जीप स्मारक से टकरा गई, एक जबर्दस्त विस्फोट हुआ जिससे पुलिस की जीप की धज्जियां उड़ गईं। इस घटना में एक पुलिस वाहन चालक बुरी तरह घायल होने की खबर मिली है। हालांकि अखबार वालों को इसके सम्बन्ध में ज्यादा जानकारी देने से पुलिस ने मना किया। इस कार्रवाई ने जहां जनता में उत्साह पैदा किया, वहीं पुलिस ने फिलहाल तो स्मारकों को तोड़ने के अपने दुष्ट अभियान को विराम दिया, जैसे कि दूध का जला छांछ भी फूंक-फूंककर पीता है। ★

दण्डकारण्य में शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की बदहाली

दशकों से जारी लुटेरे शासकों की घोर लापरवाही का नतीजा

लुटेरे शासकों के लिए यह कोई नई बात नहीं है कि वे अपनी कामयाबियों की शेखी बघारने के लिए आए दिन झूठे दावे करके सच्चाइयों पर परदा डालने की कोशिशें करते रहते हैं। इसी तर्ज पर पिछले कुछ वर्षों से शासक-अधिकारी दण्डकारण्य में शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में काफी सुधार होने के दावे करते आ रहे हैं। पिछले बीस बरसों से दण्डकारण्य की जनता नव जनवादी क्रांति को लक्ष्य बनाकर अपनी रोजमर्रा की समस्याओं के समाधान के लिए लड़ रही है। इस संघर्ष को कुचलने के लिए, साथ-साथ अपनी लुटेरी हुकूमत को बनाए रखने के लिए शासक वर्गों को यह जरूरी हो गया कि एक तरफ से पाशविक पुलिस बलों से दमनचक्र छेड़ दिया जाए और दूसरी तरफ सुधार कार्यक्रम चलाकर जनता को भ्रमित किया जाए। इस सोची-समझी साजिश के तहत शासकों ने खासतौर पिछले 10-15 वर्षों से जगह-जगह स्कूलें और अस्पताल बनाए और अन्दरूनी इलाकों में भी सड़कें बनाईं। अपने प्रचार माध्यमों के जरिए वे जनता और क्षेत्र का विकास करने के दावे कर रहे हैं।

पिछले कुछ सालों से शासकों ने नित नई नीतियों की घोषणाओं की मानों झड़ी ही लगा रखी है। 'शिक्षा गारन्टी योजना', 'राजीव गांधी शिक्षा मिशन', 'पढ़बो-बढ़बो', 'नोनी-बाबू जोहार', 'गांव की ओर चलव', आदि-आदि। एक तो इन घोषणाओं के जरिए सरकारें जनता को भ्रमित करने के प्रयास कर रही हैं कि वाकई सरकारों को जनता में शिक्षा का प्रसार करने में दिलचस्पी है। दूसरा यह है (जैसा कि 'प्रभात' के पिछले अंकों में भी हमने लिखा है) कि सरकारों की इन आनन-फानन और बेसिर-पैर की घोषणाओं के पीछे साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की नीतियों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता भी है। साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण के तहत दुनिया के पिछड़तम इलाकों में भी बाजार के माल खरीदने वाले उपभोक्ता चाहिए। साम्राज्यवाद को ऐसा उपभोक्ता चाहिए जो पढ़े-लिखे हो ताकि वह टीवी-पेपर देख सके, विज्ञापनों को समझ सके, नई-नई जरूरतों को समझकर उसके माल खरीद सके।

यही वजह है कि खासकर पिछले एक दशक से विश्व बैंक जैसे साम्राज्यवादी वित्तीय संगठन पिछड़े देशों में शिक्षा के क्षेत्र में भी अपने पैर पसार रहे हैं। सरकारों को इस क्षेत्र में नित नई घोषणाएं करने को बाध्य कर रहें हैं। संघर्ष के क्षेत्रों में पिछले कुछ वर्षों से 'विकास' की बात को लेकर एक दिलचस्प बहस जारी है। सरकारें जहां एक ओर विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता का ढिंढोरा पीट रही हैं, वहीं दूसरी ओर क्रांतिकारियों को 'विकास विरोधी' ठहराने में कोई कसर नहीं छोड़ रही हैं। इस पृष्ठभूमि में यह परखना जरूरी है कि दण्डकारण्य के गड़चिरोली, बस्तर, दंतेवाड़ा, कांकेर, राजनांदगांव जिलों में सरकार के विकास के दावों में कितना सच है कितना झूठ है। अन्य क्षेत्रों को छोड़ भी दें, तो कम से कम शिक्षा व स्वास्थ्य क्षेत्रों में विकास के सरकारों के दावे कितने खोखले हैं, यह समझना जरूरी है।

हर साल हजारों की असामयिक मौत : स्वास्थ्य के क्षेत्र में लापरवाही का एक भयावह सबूत

दण्डकारण्य मूलतया एक आदिवासी बहुल इलाका है और साथ ही यह घने जंगलों का डेरा है। यहां के गांवों में पीने के लिए स्वच्छ पानी का अभाव है। सदियों से शासकों की लापरवाही के चलते यहां की जनता उत्पादन के बेहद पुरानी प्रथाओं पर ही आज भी चल रही है। इसलिए यहां के लोग, खासकर महिलाएं और बच्चे कुपोषण से बुरी तरह पीड़ित हैं। इन अभावों के कारण गांवों में हर साल लोग असामयिक मौत के चपेट में आ जाते हैं। प्रदूषित पानी के चलते हर सीजन में महामारियां फैल जाती हैं जिससे सैकड़ों लोगों की मौत हो जाती है। हालांकि समय-समय पर इसको लेकर अखबारों में खबरें भी छपती हैं, लेकिन सरकारी अधिकारी सचाई पर परदे डालने के लिए तथ्यों को आसानी से तोड़-मरोड़ देते हैं।

दण्डकारण्य में स्वास्थ्य के क्षेत्र में सरकार की लापरवाही को समझने के लिए एक सबूत काफी है कि सिर्फ एक बस्तर जिले के 15 अस्पतालों में एक भी डॉक्टर नहीं है।

इस जिले में स्वास्थ्य कर्मचारियों के दो सौ पद आज भी रिक्त हैं। बस्तर के जिला चिकित्सालय और सिविल अस्पतालों को मिलाकर 27 चिकित्सकों के पद वर्षों से रिक्त पड़े हैं। वहीं जिले के 54 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों में से 14 स्वास्थ्य केन्द्र ऐसे हैं जो डॉक्टरों के अभाव में कम्पाउंडर या स्वास्थ्य कर्मियों के भरोसे चल रहे हैं। इनमें से कई स्वास्थ्य केन्द्र ऐसे हैं जिनकी स्थापना से लेकर अब तक यहां कोई भी डॉक्टर नहीं पहुंच सका है। शासकों की भाषा में 'अबूझमाड़' कहलाने वाले माड़ क्षेत्र के कुतुल गांव में सरकारी दस्तावेजों में स्वस्थ्य केन्द्र की स्थापना कई सालों पहले ही की गई है। लेकिन सच यह है कि वहां न स्वास्थ्य केन्द्र के नाम पर कोई मकान है, न ही वहां के लोगों ने कभी किसी सरकारी डॉक्टर का मुंह देखा।

राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित कोण्डागांव की ही बात ले लें। वहां के सिविल अस्पताल में एक स्त्री रोग विशेषज्ञा, एक आफ्थाल्मिक चिकित्साधिकारी, एक महिला चिकित्साधिकारी एवं एक दंत चिकित्सक के पद अभी भी रिक्त हैं। सरकार पूरे दण्डकारण्य में स्थित स्वास्थ्य केन्द्रों और अस्पतालों में सैकड़ों रिक्त पदों की पूर्ति का कोई प्रयास नहीं कर रही हैं।

ज्यादातर डॉक्टर अथवा मलेरिया बाबू भी अन्दरूनी गांवों में रहकर लोगों का दवा-दारु करने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखा रहे हैं। उनमें संवेदनहीनता का आलम यह है कि वे जिस गांव में नियुक्त किए जाते हैं, वहां न रहते हुए निकट के कस्बे-शहर में रहकर बिना कोई काम किए ही बाकायदा हर माह वेतन लेते रहते हैं। वे न तो कभी अपने कार्य-क्षेत्र का दौरा करते हैं, न ही लोगों को दवाइयां बांटते हैं। सरकारी दावों और जमीनी सचाइयों में आसमान-जमीन का फर्क है। इस क्षेत्र में सरकार के विकास के दावे एक दम खोखले हैं।

संघर्ष के क्षेत्रों में आमतौर पर लोग अपने इलाज के लिए पीपुल्सवार पार्टी के छापामार दस्तों पर निर्भर करते हैं। छापामार जहां एक ओर एस लुटेरी राजसत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए जनता को संगठित कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर जनता को आम बीमारियों से बचने के उपाय बताते हैं और दवाइयां भी बांटते हैं। पिछले 5-6 सालों से जनता ने इस दिशा में एक छलांग लगाते हुए कई गांवों में खुद के बल पर 'सामुदायिक जन स्वास्थ्य केन्द्र' खोले हैं और अपने विकास के वास्तविक एवं सार्थक प्रयास शुरू किए हैं। सालों से सरकार की लापरवाही से तंग आ चुकी जनता ने जनयुद्ध के तहत ही यह विकल्प चुना है। लेकिन जनता को भीषण पुलिसिया दमन के बीचोंबीच ही ये प्रयास करने पड़ रहे हैं।

आइए, अब यह देखा जाए कि शिक्षा के क्षेत्र में विकास के सरकारी दावों में कितना दम है।

समस्याओं का ढेर - लचर शिक्षा व्यवस्था की तस्वीर

दण्डकारण्य में आमतौर पर यह माना जाता है कि सरकारी स्कूलों में गुरूजी साल में दो ही दिन उपस्थित रहते हैं – एक दिन 15 अगस्त और दूसरा 26 जनवरी। लेकिन मजे की बात यह है कि इस वर्ष छत्तीसगढ़ सरकार ने 'नोनी-बाबू जोहार' नामक पर्व की घोषणा करके सत्र का पहला दिन 1 जुलाई को भी उन्हें स्कूल जाने पर मजबूर कर दिया, यानी इस वर्ष शिक्षकों के औपचारिक पर्व 3 हो गए। पढ़ने के लिए बच्चों को प्रेरित करने के नाम पर यह पर्व घोषित किया गया है। लेकिन यह कहना ठीक नहीं होगा कि गांवों में शिक्षकों की गैर-मौजूदगी ही शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी कमजोरी है। यह महज शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त अनगिनत ज्वलंत समस्याओं में एक है।

स्कूलों के लिए पक्का भवन नहीं!

आदिवासियों के विकास का ढिंढोरा पीटने वाली सरकार ने कई आदिवासी बस्तियों में स्कूलें तो खोली हैं, पर स्कूल का कोई भवन नहीं है, न वहां गुरूजी आता है। कुछ पुरानी स्कूलों के भवन इतने कमजोर हैं कि यह डर हमेशा रहता है कि वह कहीं बच्चों की कब्र न बन जाए। इन्द्रावती तट पर स्थित दन्तेवाड़ा जिले के तहत आने वाले ताकिलोड गांव में स्कूल की छत ही नहीं है। उससे लगे एक और गांव नीरुम में मौजूद स्कूल की भी सिर्फ दीवारें हैं, छत बहुत पहले ही टूट गई। इन गांवों में जैसे-तैसे बनाए घास के झोपड़ों में स्कूल लगती है। कई स्कूलों के भवन इसलिए गिरे या बने ही नहीं क्योंकि बीडीओ से लेकर ठेकेदार, सरपंच, सचिव सभी ने पैसा खाया है। स्कूल भवन बनाने में अधिकारियों और नेताओं की ही चांदी है।

मध्याह्न भोजन जो दलाल ही खा जाते हैं

दन्तेवाड़ा जिले की नगर पंचायत बड़ेबचेली ने पिछले सत्र में 10 माह में केवल 3 माह ही मध्याह्न भोजन की व्यवस्था की है। इस वर्ष भी अगस्त माह तक बच्चों को मध्याह्न भोजन नहीं मिला। सड़क से जुड़ी एक नगर पंचायत का यह हाल है तो दूर-दराज के गांवों में क्या हाल होगा इसकी कल्पना की जा सकती है। भ्रष्ट अधिकारी, सरपंच, सचिव बीच में ही सब खा जाते हैं। अधिकांश स्कूलों में मध्याह्न भोजन व्यवस्था न के बराबर है। सरकार तो यह ढ़िंढोरा पीटती रहती है कि बच्चों को इस योजना से काफी लाभ हो रहा है। इस व्यवस्था के तहत नियुक्त रसोइयों को पारिश्रमिक भी नहीं दिया जा रहा है। सरकार ने न्यूनतम दैनिक मजदूरी निर्धारण 52 रु. 65 पैसा अकुशल हेतु तय किया है, फिर रसोइए को 152 रु. प्रति माह निर्धारित करना किस कानून के तहत होगा, यह वही जाने! बच्चों को मध्याह्न भोजन के लिए मात्र 65 पैसा प्रति दिन निर्धारित है। 65 पैसा में क्या कोई बच्चा भरपेट भोजन खाएगा? सारी कहानी गबन और हेरा-फेरियों की है।

स्कूलें खुलीं लेकिन किताबें नहीं

इधर, 1 जुलाई से जोर शोर से स्कूलें खोली गईं, लेकिन शिक्षा विभाग छात्रों को किताबें समय पर मुहैया कराने में ध्यान नहीं दे रहा है। दरअसल यह काफी पुरानी कहानी है, हर साल बच्चों को हमेशा दुकानों का चक्कर काटना पड़ता है। किताबों के दाम भी प्रकाशन कार्य ठेकेदारी पर देने की वजह से इतने बढ़ गए कि 10वीं कक्षा के छात्रों को करीबन 1,000 रु. खर्च करना पड़ता है किताबों और कापियों पर। आदिवासी और दलित छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति के नाम से जो रकम दी जाती है उससे वे किताब-कापी भी नहीं खरीद पाते। ऐसे में छात्रवृत्ति से बच्चों को पढ़ाई करने में क्या मदद मिलेगी?

आश्रमशाला नहीं, कालकोठरी!

भले ही सरकार ने आदिवासियों के विकास के नाम पर जगह-जगह पर आश्रमशाला खोली है, पर उन्हें देखकर किसी को काल कोठरी की याद आए तो आश्चर्य नहीं। अविभाजित बस्तर और गड़चिरोली जिले के गांवों में स्थित अधिकतर आश्रमशालाओं के लिए पक्का भवनों की व्यवस्था नहीं है, महज घास-फूंस की झोपड़ियों में चलती हैं। इनमें पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं को भोजन के नाम पर कनकीयुक्त चावल और पानी जैसी दाल के अलावा और कुछ नहीं मिलता। पैसा अधिकारी और आश्रम अधीक्षक ही खा जाते हैं। बच्चों के लिए कोई सुविधा नहीं – खेलकूद, मनोरंजन, ग्रंथालय कुछ भी नहीं। आश्रमशाला में पदस्थ अधीक्षक, चपरासी, रसोइया कोई भी

इन्द्रावती के किनारे ग्राम ताकिलोड की इस माध्यमिक शाला की छत ही नहीं!

इसमें होती है पढ़ाई !

ठीक से काम नहीं करता जिससे छात्रों को खुद ही लकड़ी बीनने जाना पड़ता है। सब्जी-भाजी का जुगाड़ करना, चावल बीनना, खाना बनाना आदि काम भी छात्रों को ही करना पड़ता है। आश्रमशालाओं में पेयजल की व्यवस्था ढंग से नहीं होने के कारण बच्चे गंदे पानी पीने को मजबूर हैं और इससे वे बार-बार बीमार पड़ते हैं। बीमार पड़ने से छात्रों को दवा-दारू की व्यवस्था भी नहीं है। सोने के लिए पलंग, कंबल बैठने के लिए बेंच वगैरह लगभग सभी आश्रमशालाओं में नगण्य हैं।

शिक्षकों की समस्याएं भी कम नहीं

छात्रों और अभिभावकों की नजरिए से देखा जाए तो एक ही शिकायत आमतौर पर सामने आती है कि 'हमारे गांव में गुरूजी नहीं आता है – नहीं पढ़ाता है।' इस समस्या का दूसरा पहलू यह है कि उनकी समस्याओं के प्रति सरकार की लापरवाही, उदासीनता और तानाशाही भरा रवैया के चलते शिक्षकों में कुछ हद तक संवेदनहीनता और अपने दायित्वों के प्रति लापरवाही बढ़ी है। यह असल में शिक्षा प्रणाली और शिक्षक-छात्रों के बीच का अन्तरविरोध है जिसने दुर्भाग्य से शिक्षकों और छात्रों-पालकों के बीच के अन्तरविरोध का रूप लिया है। राजीव गांधी शिक्षा मिशन के अन्तर्गत अविभाजित मध्यप्रदेश सरकार द्वारा प्रारम्भ शिक्षा गारन्टी योजना के तहत नियुक्त गुरूजियों को मात्र 1,000 रुपए प्रति माह वेतन मिल रहा है। एक मजदूर से भी कम वेतन पर इनसे काम करवाना एक शर्मनाक बात है। (शुरू में तो इन्हें सिर्फ 500 रूपए मिलता था) शिक्षा कर्मियों को भी बहुत कम वेतन मिल रहा है। पिछले सत्र में तो इन्हें 7-7 माह तक वेतन ही नहीं दिया गया था। इस तरह के असुरक्षा के माहौल में, इतने कम वेतन पर वे कैसे काम कर सकेंगे और बच्चों को किस तरह पढ़ा सकेंगे, इसकी कल्पना करना मुश्किल नहीं है।

यहां आदिवासी बहुल क्षेत्रों में यह कहावत है कि "गुरूजी पढ़ाना कम, दूसरे काम ज्यादा अच्छे ढंग से करते हैं।" सरकार की दिवालिया नीति के चलते शिक्षकों को अध्यापन के अलावा मतदाता सूची बनाने,

परीक्षा क्या छात्रों का दुश्मन?

*पिछली गर्मियों के दौरान अखबारों में 'आज **5** नकलची पकड़े गए' 'आज **10** नकलची पकड़े गए' जैसी सुर्खियां देखी गईं। ऐसा लग रहा था मानों उन्होंने कोई देशद्रोही पकड़ा हो या कोई डाकू पकड़ा हो। छात्रों को उड़न दस्तों के हमलों से डर-डरकर परीक्षा दिलानी पड़ रही थी। आज की परीक्षा प्रणाली उम्मीदवारों को दुश्मन मानकर घात हमला करने जैसी प्रणाली है। परीक्षा-पत्रों में ऐसे प्रश्न दिए जाते हैं जिनसे विद्यार्थी चकित हो जाएं या परास्त हो जाएं। यह प्रणाली छात्रों में रचनात्मकता को खत्म करने वाली है। पूरे सत्र में छात्रों से पाठ रटाए जाते हैं और आखिर में इम्तेहान के दौरान उल्टी करवाए जाते हैं। इससे उनमें बढ़ती है तो सिर्फ रटने और याद रखने की क्षमता। अंग्रेजी शासन के दौरान लॉर्ड मैकाले द्वारा स्थापित शिक्षा प्रणाली आज तथाकथित आजादी के **55** वर्ष पूरा होने के बाद भी, बिना किसी मूलभूत बदलाव के ही जारी है। यह शिक्षा छात्रों की रचनात्मक क्षमताओं को कुंद करके गुलामी और हीनता की मानसिकता पैदा करने वाली है।*

*दण्डकारण्य की कई स्कूलों में पिछले साल उड़न दस्तों का आतंक मचा हुआ था। अगर छात्र नकल कर रहे हैं तो इसके कारण शिक्षा प्रणाली में, अध्यापन की शैली में, पाठ्य सामग्रि के स्तर में तथा छात्रों की सामाजिक व आर्थिक पृष्ठभूमि में ढूढ़ना चाहिए। लेकिन शिक्षा विभाग वाले जोर-जबर्दस्ती के बल पर नकल रोकना चाहते हैं। छात्रों के साथ दुश्मन जैसा बरताव करने पर शर्म आनी चाहिए शिक्षा विभाग को। दन्तेवाड़ा जिले के ग्राम इलिमिडि की हाइ स्कूल में परीक्षा दे रही **10**वीं कक्षा की एक छात्रा को उड़न दस्ता द्वारा कपड़े उतारकर तलाशी लेने की घटना की कितनी भी भर्त्सना की जाए कम है। **20** मार्च **2002** को अंग्रेजी विषय की परीक्षा हो रही थी तो बीजापुर से एक उड़न दस्ता आ धमका नकलचियों को धर-दबोचने। इस दस्ते की महिला अधिकारी ने सुशीला जव्वा नामक छात्रा की तलाशी लेने के नाम पर सभी छात्र-छात्राओं और शिक्षकों के सामने उसकी स्कर्ट उतारी। इससे सुशीला लज्जित होकर परीक्षा छोड़कर चली गई और अपने कमरे में जाकर जहर खा ली। बाद में ग्रामीणों और शिक्षकों ने अस्पताल ले जाकर उसकी जान बचाई। इस पर काफी हल्ला मचा और प्रशासन ने उलटे स्कूल के शिक्षकों को झूठे आरोप लगाकर निलंबित किया। उड़न दस्ता की अधिकारी ने स्पष्टीकरण दिया कि उसने सुशीला के कपड़े हाल में नहीं उतारे। लेकिन छात्रों और शिक्षकों का कहना है कि उसने सुशीला की सरेआम बेइज़्ज़ती की। लेकिन जरा सोचिए, हाल में न सही, बन्द कमरे में भी किसी छात्रा के कपड़े उतारकर तलाशी लेने का अधिकार उसे किसने दिया? वह भी महज नकल पकड़ने के लिए!*

ऐसी आतंकी और शर्मनाक हरकतों पर तुले हुए उड़न दस्तों का मुंहतोड़ जवाब दण्डकारण्य के जागरूक छात्र-छात्राएं जरूर देंगे – यह उनका नैतिक और जायज अधिकार है। ★

गरीबी रेखा के नीचे रहने वालों का सर्वेक्षण, पोलियो की दवा पिलाना, तेन्दुपत्ता फड़ों में मुंशीगिरी, चुनाव कार्य, न जाने और क्या-क्या काम करने पड़ते हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो सत्र का दो-तिहाई हिस्सा इस तरह के गैर-शिक्षा संबंधी कामों में ही बेकार हो जाता है। और ये काम करना शिक्षकों को अनिवार्य है। वरना उनके खिलाफ कार्रवाई की जाती है।

दूरस्थ गांवों में पदस्थ शिक्षकों की समस्याएं और भी गंभीर है। उन्हें वहां रहने के लिए आवास की सुविधा नहीं है, बीमार होने से दवा-दारू की भी सुविधा नहीं है। उन्हें कई सालों तक एक ही स्थान पर कार्य करना पड़ रहा है। जिसके पास पैसा है और पहुंच है वही दूसरे क्षेत्र में अपना स्थानान्तरण करवा पाता है। माड़ जैसे दुर्गम क्षेत्रों में 50 साल से ज्यादा उम्र के शिक्षकों को पदस्थ करने में सरकार का दिवालियापन साफ नजर आता है। उन्हें दसियों किलोमीटर पैदल जाना पड़ता है।

छात्र एवं शिक्षक के अनुपात पर नजर डाली जाए तो शिक्षा की बदहाली और भी साफ हो जाती है। दण्डकारण्य में स्थित अधिकांश स्कूलों में एक ही गुरूजी को 5-5 कक्षाएं संभालनी पड़ती हैं। सभी विषय एक ही गुरूजी पढ़ाता है। कई स्कूलों में शिक्षकों के पद खाली हैं। पूरे छत्तीसगढ़ में 15 हजार से ज्यादा पद खाली हैं जिन्हें भरने की कोशिश सरकार नहीं कर रही है। साम्राज्यवादी अनुकूल नीतियों पर चलते हुए सरकारें नियमित शिक्षकों की भर्ती को बंद कर दिया और 'शिक्षा कर्मी', 'शिक्षा गारन्टी', 'संविदा नियुक्ति' जैसे हथकण्डे अपना रही हैं। उन्हें कम वेतन देकर उनकी जिन्दगी बेगारी मजदूरों से भी बदतर बनाया है।

जन विकल्प

संघर्षशील जनता ने स्वास्थ्य एवं शिक्षा संबंधी समस्याओं को लेकर कई बार आन्दोलन छेड़ा है। लेकिन नतीजा रहा वही डाल के तीन पात। सरकारों की लापरवाही को उसके जनविरोधी और साम्राज्यवाद अनुकूल नीति के परिप्रेक्ष्य में देखना होगा। आज दण्डकारण्य की जनता इस लुटेरी राजसत्ता को ध्वस्त करके जनता की नई राजसत्ता की नींव डाल रही है। अपने भाग्य का फैसला उसने अपने हाथों में लिया है। स्वास्थ्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिए जनता ने अपनी जनोन्मुखी नीति तैयार कर ली है। पीपुल्सवार पार्टी के कार्यकर्ता गांवों में शिक्षित युवकों को डॉक्टरी प्रशिक्षण देकर उनके जरिए जन-स्वास्थ्य केन्द्र खुलवा रहे हैं। इसी तरह गांवों में जन पाठशालाएं भी खोलकर बच्चों और वयस्कों की शिक्षा हेतु प्रयास कर रहे हैं। लुटेरी राज व्यवस्था द्वारा लादे गए भीषण दमनचक्र के बीचोंबीच उन्हें ये कार्य करने पड़ रहे हैं। कुछ स्थानों पर पुलिस वालों ने हमला करके जन-स्वास्थ्य केन्द्रों में रखी दवाएं लूट ली हैं। फिर भी जनता इस दिशा में दृढ़ता से कदम बढ़ा रही है। जनता की अपनी सेना – पीजीए के निर्माण के बाद इस दिशा में गुणात्मक प्रगति देखने को मिल रही है। इसमें कोई शक नहीं, जनता की संगठित एवं हथियारबंद ताकत ही जनता की इन शुरूआती उपलब्धियों को कायम रखेगी। ❑

महान शिक्षक कॉ. लेनिन के जन्मदिन के अवसर पर
जन पाठशालाओं का उद्घाटन

माड़ डिवीजन के इन्द्रावती एरिया में जनता ने सरकार के खोखले वादों को नकार कर अपने भविष्य को अपने ही हाथों में लेने का फैसला लिया। सरकार की लापरवाही के चलते दण्डकारण्य में आज भी अनेक गांवों में पाठशाला नहीं है या है भी तो चलती नहीं। इसलिए जनता ने दो गांवों में अपने ही बल बूते पाठशाला शुरू करने का फैसला किया। जन संगठनों की पहलकदमी से यह फैसला साकार हो चुका है। दोनों गांवों में जनता ने श्रमदान कर पाठशाला चलाने के लिए मकानों का निर्माण किया। चन्दे इकट्ठे करके छात्रों को पट्टी-पेन्सिल, पुस्तक-कापी आदि का इन्तजाम किया। दोनों जगहों पर हाइ स्कूल पढ़ चुके दो युवकों को शिक्षक के रूप में नियुक्त किया गया। इन्हें प्रति माह घर-घर से एक-एक गिलास चावल और कुछ पैसे देने का फैसला हुआ। इसके बाद 22 अप्रैल के दिन इनका उद्घाटन किया। उद्घाटन के मौके पर स्थानीय जन संगठनों के नेतागण और पार्टी के कार्यकर्ताओं

ने भाग लिया। उद्घाटन के मौके पर आयोजित सभाओं को जनता के नेताओं ने सम्बोधित किया। उन्होंने अपने भाषणों में लुटेरी सरकार द्वारा किए जा रहे झूठे सुधारों को नकार दिया और लोगों का आह्वान किया कि अपनी संगठित ताकत के बल पर खुद ही विकास के कदम उठाएं। जन संगठन नेताओं ने उपस्थित लोगों को शिक्षा की जरूरत से अवगत कराया। क्रान्ति के सिद्धान्त को समझने के लिए, जनता की राजसत्ता चलाने के लिए हमें शिक्षित होना बहुत जरूरी है। इस कार्यक्रम में स्कूल में दाखिला लेने वाले बच्चे और शिक्षक शामिल थे। क्रान्तिकारी गीतों के साथ यह कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ यह कार्यक्रम पूरा हुआ। ✶

नेतृत्व के तरीकों से सम्बन्धित कुछ सवाल*

1 जून 1943

- माओ त्सेतुङ

(हमारी पार्टी ने हाल ही में 'शिक्षा-शुद्धिकरण' अभियान चलाने का फैसला लिया है। इस अवसर पर हम माओ त्सेतुङ के इस लेख को प्रकाशित कर रहे हैं जोकि इस अभियान को चलाने में उपयोगी साबित हो सकता है। — सम्पादकमण्डल)

1. हम कम्युनिस्टों को अपने किसी भी कार्य को करने के लिए दो प्रकार के तरीके अपनाने चाहिए। पहला है सामान्य को विशेष से मिलाने का तरीका; दूसरा है नेतृत्व को जन-समुदाय से मिलाने का तरीका।

2. यदि किसी कार्य को करने का सामान्य और व्यापक आह्वान नहीं किया जाता, तो व्यापक जनता को कार्यवाही करने के लिए गोलबंद नहीं किया जा सकता। लेकिन यदि नेतृत्वकारी पदों पर काम करने वाले लोग अपनी गतिविधियों को केवल सामान्य आह्वान तक सीमित रखते हैं – यदि वे कुछ संगठनों में जाकर उस कार्य में जिसका आह्वान किया गया है, गहराई से और ठोस रूप से स्वयं भाग नहीं लेते, किसी एक जगह पर उस आह्वान को व्यावहारिक रूप नहीं देते, अनुभव प्राप्त नहीं करते और अन्य इकाइयों का मार्गदर्शन करने के लिए उन अनुभवों का उपयोग नहीं करते – तो अपने सामान्य आह्वान के अचूकपन को परखने या उसकी अन्तर्वस्तु को समृद्ध बनाने का कोई जरिया उनके पास नहीं रह जाएगा तथा यह खतरा भी बना रहेगा कि उस आह्वान का कोई नतीजा ही न निकले। मिसाल के तौर पर 1942 में चलाए गए दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान जहां कहीं सामान्य आह्वान को विशेष और ठोस मार्गदर्शन से मिलाने का तरीका अपनाया गया वहां उसके ठोस नतीजे निकले, और जहां कहीं इस तरीके को नहीं अपनाया गया वहां कोई भी नतीजा हासिल नहीं किया जा सका। 1943 में चलाए जाने वाले दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान, केन्द्रीय कमेटी के प्रत्येक ब्यूरो और उप-ब्यूरो को तथा पार्टी के प्रत्येक क्षेत्रीय कमेटी और प्रिफेक्चर-कमेटी को सामान्य आह्वान करने (समूचे वर्ष के लिए दोष-निवारण कार्य की योजना प्रस्तुत करने) के साथ-साथ निम्नांकित कार्य भी करने चाहिए तथा उनको करते हुए व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करना चाहिए। अपने संगठन की तथा अन्य निकटवर्ती संगठनों, विद्यालयों या फौजी यूनिटों की दो या तीन इकाइयों को (किन्तु बहुत अधिक इकाइयों को नहीं) चुन लो। इन इकाइयों की स्थिति का पूर्ण अध्ययन कर लो, इनमें दोष-निवारण आन्दोलन के विकास की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर लो तथा उनके स्टाफ के (यहां भी बहुत अधिक नहीं) कुछ प्रतिनिधि सदस्यों की राजनीतिक पृष्ठभूमि, विचारधारात्मक विशेषताओं, अध्ययन के प्रति उनकी लगन और उनके कार्य की खूबियों व कमियों की विस्तृत जानकारी हासिल कर लो। इसके साथ-साथ, इन इकाइयों के कार्य की जिम्मेदारी सम्भालने वाले लोगों का व्यक्तिगत रूप से मार्गदर्शन भी करो, ताकि वे उन इकाइयों के सामने मौजूद अनेक व्यावहारिक समस्याओं का ठोस हल निकाल सकें। चूंकि प्रत्येक संगठन, विद्यालय या फौजी यूनिट के अधीन अनेक इकाइयां होती हैं, इसलिए उनके नेताओं को भी ऐसा ही करना चाहिए। इसके अलावा, यह एक ऐसा तरीका है जिसके द्वारा नेता नेतृत्व करने के कार्य और सीखने के कार्य का संयोजन कर सकते हैं। कोई भी नेतृत्वकारी साथी जब तक अपने अधीन विशेष इकाइयों के विशेष व्यक्तियों व विशेष घटनाक्रमों से ठोस अनुभव प्राप्त नहीं करता, तब तक वह सभी इकाइयों का सामान्य मार्गदर्शन करने में समर्थ नहीं हो सकता। इस तरीके को प्रत्येक स्थान पर बढ़ावा दिया जाना चाहिए, ताकि हमारे सभी स्तरों के नेतृत्वकारी कार्यकर्ता इसको लागू करना सीख जाएं।

3. 1942 के दोष-निवारण आन्दोलन के अनुभव से यह भी साबित होता है कि दोष-निवारण कार्य की सफलता के लिए यह जरूरी है कि प्रत्येक इकाई में आन्दोलन के दौरान कुछ सक्रिय तत्वों का एक नेतृत्वकारी ग्रुप बनाया जाए, जिसके संचालन-केन्द्र के रूप में संबंधित इकाई के प्रधान कार्य करें, तथा यह नेतृत्वकारी ग्रुप आन्दोलन में भाग लेने वाले जन-समुदाय के साथ घनिष्ठ सम्पर्क कायम करे। नेतृत्वकारी ग्रुप चाहे कितना ही सक्रिय क्यों न हो, जब तक वह अपनी सक्रियता को जन-समुदाय की सक्रियता के साथ नहीं मिलाता, तब तक उसकी कार्यवाही केवल चन्द लोगों द्वारा की गई एक नाकाम कोशिश ही साबित होगी। दूसरी तरफ, अगर केवल जन-समुदाय ही सक्रिय है और उसकी सक्रियता को समुचित ढंग से संगठित करने के लिए कोई शक्तिशाली नेतृत्वकारी ग्रुप मौजूद नहीं है, तो ऐसी सक्रियता लंबे अरसे तक कायम नहीं रह सकती या सही दिशा की ओर नहीं बढ़ सकती और उसका स्तर उन्नत नहीं हो सकता। हर स्थान के जन-समुदाय में आमतौर पर तीन तरह के लोग होते हैं- अपेक्षाकृत सक्रिय लोग, दरमियाने लोग तथा अपेक्षाकृत पिछड़े हुए लोग। इसलिए नेताओं को चाहिए कि वे थोड़ी संख्या वाले सक्रिय तत्वों को नेतृत्व के चारों-ओर एकताबद्ध करने में निपुण हो

** नेतृत्व के तरीकों के बारे में यह निर्णय कामरेड माओ त्सेतुङ ने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी के लिए लिखा था।*

जाएं तथा दरमियाने तत्वों के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए और पिछड़े हुए तत्वों को अपने पक्ष में मिलाने के लिए सक्रिय तत्वों पर निर्भर रहें। सच्ची एकता के सूत्र में बंधे हुए और जनता के साथ सच्चा संपर्क रखने वाले नेतृत्वकारी ग्रुप का निर्माण केवल जन-संघर्ष के दौरान ही कदम-ब-कदम किया जा सकता है और उससे अलग रह कर नहीं किया जा सकता। किसी महान संघर्ष के प्रारंभिक, बीच की और अंतिम मंजिलों में, अधिकांशतः, नेतृत्वकारी ग्रुप को शुरू से अंत तक पूर्णतया अपरिवर्तित नहीं बना रहना चाहिए और वह पूर्णतया अपरिवर्तित बना भी नहीं रह सकता है। संघर्ष के दौरान आगे आने वाले सक्रिय तत्वों को नेतृत्वकारी ग्रुप के उन पुराने सदस्यों का स्थान ग्रहण करने के लिए लगातार तरक्की दी जानी चाहिए, जो उनकी अपेक्षा निम्न स्तर के साबित हुए हैं या जिनका पतन हो चुका है। अनेक स्थानों व अनेक संगठनों के कार्य को आगे न बढ़ाए जा सकने का एक बुनियादी कारण किसी ऐसे नेतृत्वकारी ग्रुप का न होना है जो एकताबद्ध हो, जिसका जन-समुदाय के साथ संपर्क हो और जो स्वस्थ तत्वों से सदैव परिपूर्ण हो। सौ व्यक्तियों के किसी विद्यालय में यदि अनेक लोगों का अथवा एक दर्जन या उससे भी ज्यादा लोगों का कोई ऐसा नेतृत्वकारी ग्रुप नहीं है जिसकी स्थापना वहां की ठोस परिस्थितियों को ध्यान में रख कर की गई हो (लोगों को अस्वाभाविक रूप से शामिल करके नहीं), तथा जिसमें अत्यंत सक्रिय, अत्यंत ईमानदार और अत्यंत जागरूक शिक्षकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों को शामिल किया गया हो, तो यह निश्चित है कि उसका संचालन सुचारू रूप से नहीं किया जा सकता। पार्टी का बोलशेविकीकरण करने के लिए स्तालिन द्वारा बताई गई बारह शर्तों में से नवीं शर्त को, जो नेतृत्व के संचालन-केन्द्र की स्थापना करने के बारे में है, हमें छोटे या बड़े प्रत्येक संगठन में, प्रत्येक विद्यालय में, प्रत्येक फौजी यूनिट में, प्रत्येक कारखाने तथा प्रत्येक गांव में लागू करना चाहिए। कार्यकर्ता संबंधी नीति पर अपनी बहस के दौरान दिमित्रोव द्वारा पेश की गई इन चार शर्तों को इस प्रकार के नेतृत्वकारी ग्रुप को परखने की कसौटी होना चाहिए – कार्य के प्रति पूर्ण लगाव, जन-समुदाय के साथ अटूट संपर्क, स्वतंत्र रूप से कार्य कर सकने की क्षमता और अनुशासन का पालन। चाहे युद्ध, उत्पादन या शिक्षा (जिसमें दोष-निवारण कार्य भी शामिल है) से संबंधित प्रधान कार्य हों या पिछले कार्य की जांच करने का काम हो, या कार्यकर्ताओं के अतीत की जांच-पड़ताल करने का काम हो या अन्य कोई काम हो, इन सभी कार्यों को करते समय सामान्य आह्वान को विशेष मार्गदर्शन से मिलाने के तरीके को अपनाने के साथ-साथ नेतृत्वकारी ग्रुप को जन-समुदाय से मिलाने के तरीके को अपनाना भी जरूरी है।

4. हमारी पार्टी के समूचे अमली काम में, सही नेतृत्व के लिए "जन-समुदाय से लेकर जन-समुदाय को ही लौटा देने" का तरीका अपनाना जरूरी है। इसका मतलब यह है : जन-समुदाय के विचारों को (बिखरे हुए और अव्यवस्थित विचारों को) एकत्र करके उनका निचोड़ निकालो (अध्ययन के जरिए उन्हें केन्द्रित और सुवव्यस्थित विचारों में बदल डालो), इसके बाद जन-समुदाय के बीच जाओ, इन विचारों का प्रचार करो और जन-समुदाय को समझाओ जिससे वह उन्हें अपने विचारों के रूप में अपना ले, उन पर दृढ़ता से कायम रहे और उन्हें कार्य रूप में परिणत करे, तथा इस प्रकार की कार्यवाही के दौरान इन विचारों के अचूकपन की परख कर लो। इसके बाद फिर एक बार जन-समुदाय के विचारों को एकत्र करके उनका निचोड़ निकालो और फिर एक बार जन-समुदाय के बीच जाओ, ताकि उन विचारों पर अविचल रहा जा सके और उन्हें कार्यान्वित किया जा सके। इस प्रकार की प्रक्रिया को एक अंतहीन चक्र के रूप में बार-बार दोहराते रहने से वे विचार हर बार पहले से ज्यादा सही, पहले से ज्यादा सजीव और पहले से ज्यादा समृद्ध बनते जाएंगे। यही है मार्क्सवाद का ज्ञान-सिद्धांत।

5. किसी संगठन या किसी संघर्ष में नेतृत्वकारी ग्रुप और जन-समुदाय के बीच सही संबंध कायम करने की धारणा, यह धारणा कि "जन-समुदाय से लेकर जन-समुदाय को ही लौटा देने" के तरीके को अपनाकर नेतृत्व द्वारा सही विचारों को अपनाया जा सकता है, तथा यह धारणा कि नेतृत्व के विचारों को लागू करते समय सामान्य आह्वान को ठोस मार्गदर्शन के साथ मिलाना चाहिए – इन सभी धारणाओं का व्यापक प्रचार वर्तमान दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान किया जाना चाहिए ताकि इन प्रश्नों के बारे में हमारे कार्यकर्ताओं के बीच मौजूद गलत विचारों को ठीक किया जा सके। हमारे अनेक साथी सक्रिय तत्वों को इकट्ठा करके नेतृत्व के संचालन केन्द्र का निर्माण करने के कार्य के महत्व को नहीं समझते या उसमें निपुण नहीं होते तथा वे उस संचालन केन्द्र का जन-समुदाय के साथ अटूट संपर्क कायम करने के महत्व को नहीं समझते या उसमें निपुण नहीं होते, और इसलिए उनका नेतृत्व एक नौकरशाहाना नेतृत्व बन जाता है और जनता से उसका संबंध विच्छेद हो जाता है। हमारे अनेक साथी जन-संघर्षों के अनुभव का निचोड़ निकालने के महत्व को नहीं समझते या उसमें निपुण नहीं होते, बल्कि अपने को चतुर समझ कर अपने मनोगतवादी विचारों को व्यक्त करने के इच्छुक रहते हैं, और इसलिए उनके विचार सारहीन व अव्यावहारिक हो जाते हैं। हमारे अनेक साथी किसी कार्य को पूरा करने के लिए केवल सामान्य आह्वान करके ही संतुष्ट हो जाते हैं तथा उसके फौरन बाद किसी विशेष और ठोस मार्गदर्शन करने के महत्व को नहीं समझते या उसमें निपुण नहीं होते, और इसलिए उनके द्वारा किया गया आह्वान एक जबानी या कागजी आह्वान मात्र ही रह जाता है या वह केवल सभा भवन तक ही सीमित रहता है, तथा उनका नेतृत्व एक नौकरशाहाना नेतृत्व बन जाता है। मौजूदा दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान हमें इन कमियों को दूर कर लेना चाहिए और अपने अध्ययन में, अपने पिछले कार्य की जांच करने में तथा कार्यकर्ताओं के अतीत की जांच-पड़ताल करने में, नेतृत्व को जन-समुदाय से मिलाने व सामान्य को विशेष से मिलाने के तरीकों का इस्तेमाल करना सीख लेना चाहिए; तथा भविष्य के अपने समूचे कार्य में भी हमें इन तरीकों को लागू करना चाहिए।

6. जन-समुदाय के विचारों को एकत्र करके उनका निचोड़ निकालना, उसके बाद जन-समुदाय के बीच जाना, उन विचारों पर डटे रहना और उनको कार्यान्वित करना, ताकि नेतृत्व के सही विचारों का निर्माण किया जा सके – यह नेतृत्व का बुनियादी तरीका है। विचारों का निचोड़ निकालने और उन पर अविचल रूप से डटे रहने की प्रक्रिया में सामान्य आह्वान को ठोस मार्गदर्शन से मिलाने के तरीके को इस्तेमाल करना आवश्यक है और ऐसा करना उस बुनियादी तरीके का एक अभिन्न अंग है। अनेक मामलों में किए गए विशेष मार्गदर्शन के

आधार पर सामान्य विचारों (सामान्य आह्वानों) को सूत्रबद्ध कर लो और विभिन्न इकाइयों में उन्हें व्यावहार की कसौटी पर परख लो (ऐसा केवल खुद ही न कर लो बल्कि दूसरों को भी करने को कहो); उसके बाद नए अनुभव को एकत्र करो (उसका निचोड़ निकालो) और जन-समुदाय का सामान्य मार्गदर्शन करने के लिए नई हिदायतें तैयार कर लो। हमारे कॉमरेडों को चाहिए कि वे मौजूदा दोष-निवारण आन्दोलन के दौरान और अन्य प्रकार के अपने प्रत्येक कार्य में ऐसा ही करें। जितनी ज्यादा निपुणता के साथ इसको किया जाएगा, हमारा नेतृत्व उतना ही बेहतर बनता जाएगा।

7. अपने अधीन इकाइयों को कोई कार्य सौंपते समय (चाहे वह क्रांतिकारी युद्ध, उत्पादन या शिक्षा से संबंधित कार्य हो, दोष-निवारण आन्दोलन, पिछले कार्य की जांच या कार्यकर्ताओं के अतीत की जांच-पड़ताल से संबंधित कार्य हो, प्रचार कार्य या संगठनात्मक कार्य या जासूसी-विरोधी कार्य अथवा अन्य कोई कार्य हो) ऊपर के किसी संगठन और उसके विभागों को चाहिए कि वे नीचे के संबंधित संगठन के नेता के साथ तमाम बातों पर गौर करें, ताकि वह जिम्मेदारी को संभाल सके; इस प्रकार कार्य-विभाजन और एकीकृत केन्द्रीकृत-नेतृत्व दोनों ही अमल में लाये जा सकते हैं। ऊपर के किसी विभाग को नीचे के संगठन की समूचे तौर पर जिम्मेदारी संभालने वाले व्यक्ति (जैसे सचिव, अध्यक्ष, निर्देशक या विद्यालय के प्रधानाचार्य) को अनभिज्ञता या गैर जिम्मेदारी की स्थिति में छोड़ कर केवल अपने ही जैसे किसी विभाग के साथ बिलकुल पृथक संपर्क कायम नहीं करना चाहिए। (मिसाल के तौर पर, संगठनात्मक कार्य, प्रचार कार्य या जासूसी-विरोधी कार्य से संबंधित ऊपर के किसी विभाग को केवल नीचे के इन्हीं विभागों के साथ अपना पृथक संपर्क कायम नहीं करना चाहिए)। किसी संगठन की समूचे तौर पर जिम्मेदारी संभालने वाले व किसी विशेष जिम्मेदारी को संभालने वाले इन दोनों व्यक्तियों को गतिविधियों की जानकारी होनी चाहिए तथा दोनों ही को जिम्मेदारी दी जानी चाहिए। यह केन्द्रीकृत तरीका, जो कार्य-विभाजन को एकीकृत नेतृत्व के साथ मिलाता है, समूचे तौर पर जिम्मेदारी संभालने वाले व्यक्ति के जरिए, किसी विशेष कार्य को पूरा करने के लिए बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं को – कभी-कभी किसी संगठन के समस्त कार्यकर्ताओं तक को – गोलबंद करने के कार्य को संभव बना देता है, और इस प्रकार अलग-अलग विभागों में कार्यकर्ताओं के अभाव को दूर करने में तथा सामने मौजूद कार्य को करने के लिए अनेक लोगों को क्रियाशील कार्यकर्ताओं में बदल देने में मदद करता है। यह भी नेतृत्व को जन-समुदाय से मिलाने का एक तरीका है मिसाल के तौर पर हमारे कार्यकर्ताओं के अतीत की जांच-पड़ताल करने के कार्य को ही लीजिए। अगर इस कार्य को अलग-थलग करके किया जाए, या केवल संगठन-विभाग के चन्द लोगों द्वारा ही किया जाए, तो निश्चित है कि उसे सुचारू रूप से नहीं किया जा सकता। लेकिन अगर इसे किसी विशेष संगठन या विद्यालय के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के जरिए कराया जाए, जो उस कार्य में भाग लेने के लिए अपने स्टाफ के अनेक या सभी कार्यकर्ताओं को अथवा अपने अनेक या सभी विद्यार्थियों को गोलबंद कर लेता है, और इसके साथ-साथ ऊपर के संगठन-विभाग के नेतृत्वकारी सदस्यों द्वारा उसका सही ढंग से मार्गदर्शन किया जाए तथा नेतृत्व को जन-समुदाय से मिलाने के उसूल पर अमल किया जाए, तो कार्यकर्ताओं के अतीत की जांच-पड़ताल का कार्य निस्सन्देह संतोषजनक रूप से पूरा किया जा सकेगा।

8. किसी विशेष स्थान पर एक ही समय में अनेक प्रधान कार्य नहीं चलाए जा सकते। एक समय में केवल एक ही प्रधान कार्य चलाया जा सकता है, तथा दूसरे और तीसरे दर्जे के महत्व वाले अन्य कार्य केवल उसके पूरक हो सकते हैं। इसलिए, जिस व्यक्ति पर किसी क्षेत्र के कार्य की समूची जिम्मेदारी हो, उसे वहां के संघर्ष के इतिहास और ठोस परिस्थितियों को ध्यान में रखना चाहिए तथा विभिन्न कार्यों के महत्व के अनुसार उनकी प्रमुखता का क्रम निर्धारित कर लेना चाहिए; उसे अपनी कोई योजना बनाए बगैर ऊपर के संगठन से आने वाली प्रत्येक हिदायत को उसी रूप में लागू करके "प्रधान कार्यों" की बहुलता तथा गड़बड़ी व अव्यवस्था पैदा नहीं करनी चाहिए। और न ऊपर के किसी संगठन द्वारा एक ही समय में अनेक कार्य, उनके तुलनात्मक महत्व और आवश्यकता को स्पष्ट किए बिना या प्रधान कार्य को स्पष्ट किए बिना नीचे के किसी संगठन को सौंपे जाने चाहिए, क्योंकि इससे नीचे के संगठनों में अपने कार्य को पूरा करने के लिए उठाए जाने वाले कदमों के बारे में उलझन पैदा हो जाएगी और इस प्रकार उनके कार्य के कोई ठोस नतीजे नही निकल सकेंगे। किसी क्षेत्र की ऐतिहासिक परिस्थितियों और तत्कालीन हालात के अनुसार वहां की सम्पूर्ण स्थिति को ध्यान में रखते हुए अपने कार्य की योजना बनाना, प्रत्येक अवधि के प्रधान कार्य के बारे में तथा अन्य कार्यों की प्रमुखता के क्रम के बारे में सही निर्णय लेना, उस निर्णय को दृढ़ता के साथ लागू करना और ठोस नतीजों की गारन्टी कर देना नेतृत्व-कला का एक अंग है। यह नेतृत्व के तरीके से संबंधित समस्या भी है, तथा नेतृत्व को जन-समुदाय से मिलाने और सामान्य को विशेष से मिलाने के उसूलों को लागू करते समय इसे हल करने की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।

9. यहां नेतृत्व के तरीकों के बारे में विस्तृत विवरण पेश नहीं किया गया है; आशा है कि सभी क्षेत्रों के साथी यहां पेश किए गए उसूलों के आधार पर स्वयं इस मसले पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे और अपनी सृजनात्मकता को पूर्ण रूप से विकसित करेंगे। संघर्ष जितना ज्यादा कठिन हो, कम्युनिस्टों के लिए उतना ही ज्यादा जरूरी हो जाता है कि वे विशाल जन-समुदाय की मांगों के साथ अपने नेतृत्व का घनिष्ठ संपर्क कायम करें तथा सामान्य आह्वानों को विशेष मार्गदर्शन के साथ घनिष्ठ रूप से मिलाएं, ताकि नेतृत्व के मनोगतवादी व नौकरशाहाना तरीकों को पूरी तरह से नेस्तनाबूद किया जा सके। हमारी पार्टी के सभी नेतृत्वकारी कामरेडों को चाहिए कि वे नेतृत्व के मनोगतवादी, नौकरशाहाना तरीकों के मुकाबले नेतृत्व के वैज्ञानिक, मार्क्सवादी तरीकों को सदैव बढ़ावा दें और पहले प्रकार के तरीकों को खत्म करने के लिए दूसरे प्रकार के तरीकों को इस्तेमाल करें। नेतृत्व को जन-समुदाय से मिलाने व सामान्य को विशेष से मिलाने के उसूल मनोगतवादियों और नौकरशाहों की समझ में नहीं आते; वे पार्टी के कार्य के विकास में अत्यधिक बाधा डालते हैं। नेतृत्व के मनोगतवादी व नौकरशाहाना तरीकों का मुकाबला करने के लिए हमें नेतृत्व के वैज्ञानिक, मार्क्सवादी तरीकों को व्यापक रूप से और गहराई के साथ बढ़ावा देना चाहिए। ✪

अन्तर्राष्ट्रीय टिप्पणियां

अर्जेन्टीना की अर्थव्यवस्था का संकट

साम्राज्यवादी आर्थिक सुधारों का खतरनाक अंजाम

अर्जेन्टीना की अर्थव्यवस्था का ढह जाना, तीसरी दुनिया के देशों पर अमेरिका द्वारा जबरन थोपे जा रहे 'विकास के नमूने' की विफलता का जीता-जागता उदाहरण है। कई महीनों से गहराता संकट पिछले दिसम्बर (2001) माह में तब फूट पड़ा, जब हजारों लोगों ने सरकार और उसकी आइएमएफ (अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष) अनुकूल नीतियों, जिनके चलते आम जनता को अकथनीय मुश्किलें झेलनी पड़ीं, के खिलाफ सड़कों पर जुझारू विरोध प्रदर्शन किए और रैलियां निकालीं। चंद हफ्तों में ही वहां पांच राष्ट्रपति बदले, दो सरकारें गिरीं, तथा 28 युवा प्रदर्शनकारी पुलिस की गोलीबारी में मारे गए।

अर्जेन्टीना दूसरा सबसे बड़ा लातिनी अमेरिकी देश है जो दक्षिण अमेरिका महाद्वीप में मौजूद है। इसकी आबादी लगभग 3½ करोड़ है जिसका 88 प्रतिशत शहरों में रहता है। प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध यह देश करीब 300 सालों तक स्पेइन का उपनिवेश बना रहा। 19वीं सदी की शुरूआत में अर्जेन्टीना आजाद हुआ और 1953 में यहां गणतंत्र की स्थापना हुई। 1930 के बाद से ज्यादातर समय यह देश फौजी तानाशाहों के शासन के तहत ही रहा।

अब तक अर्जेन्टीना के बारे में साम्राज्यवादी मीडिया के जरिए यह प्रचार हो रहा था कि आइएमएफ के ऋणों से वह तेजी से विकास की राह पर चलने लगा है। इसके पहले दक्षिण-पूर्वी एशिया के कई देशों के बारे में भी ऐसा ही कहा गया था। भारत में भी 1990 के दशक की शुरूआत में 'नई आर्थिक नीतियों' को लागू करते हुए शासकों ने यही कहा था। लेकिन साम्राज्यवाद-अनुकूल आर्थिक नीतियों का अनुभव सभी देशों में कमोबेश एक सरीखा रहा - बेरोजगारी, मंहगाई, दरिद्रता, कर्जों का बोझ, वेतनों में गिरावट, मुद्रास्फीति, आदि परिणाम लगभग सभी पिछड़े देशों में देखे गए। अर्जेन्टीना के ताजातरीन संकट ने इस तथ्य की फिर एक बार पुष्टि कर दी।

1983 से आइएमएफ ने अर्जेन्टीना को नौ बार ऋण मंजूर किया। हर बार देश की अर्थव्यवस्था कर्जों की दलदल में और भी बूरी तरह फंसती गई। अर्जेन्टीना का कर्ज 1995 में 35 अरब अमेरिकी डॉलर था जो कि आज 141 अरब डॉलर तक बढ़ गया। यह राशि सभी विकासशील देशों के कुल कर्ज का सातवां हिस्सा है। देश के सकल घरेलू उत्पाद (280 अरब डॉलर) में यह कर्ज आधा से ज्यादा है। दिसम्बर 2001 में आइएमएफ ने और कर्ज देने से इनकार कर दिया था। राष्ट्रपति फर्नांडो डेला रुआ ने आइएमएफ के आदेशों का पालन करते हुए सरकारी कर्मचारियों के वेतनों और पेन्शनों में 18 महीनों में सात बार कटौती की। इससे अर्जेन्टीना के मजदूरों और किसानों में गरीबी बेहद बढ़ी। देश की एक-तिहाई आबादी पहले से ही गरीबी रेखा के नीचे थी। बेरोजगारी की दर 20 प्रतिशत तक बढ़ी। अल्प-रोजगारी की भी इतनी ही दर हो गई। अगर राष्ट्रपति फर्नांडो और उसके वित्तीय सलाहकार कावेल्लो डोमिनगो ने जनता को कुछ दिया है तो वह सिर्फ कारखानों का निजीकरण, तालाबंदी, कर्मचारियों की संख्या और तनख्वाह में कटौती ही।

आइएमएफ के माध्यम से अमेरिका द्वारा अमल विकास का नमूना आम तौर पर ऐसा होता है – पहले विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था के दरवाजे विदेशी पूंजीपतियों के लिए खोल दिए जाते हैं। इसके तहत उन देशों के बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र की कम्पनियों, जन-उपयोगी संस्थाओं – सभी को विदेशी पूंजीपतियों को बेचने के लिए दबाव डाला जाता है। विदेशी पूंजीपति विकासशील देशों के बजट का निर्धारण करते हुए सरकार की भूमिका को नियंत्रित करते हैं। बाद में इनका लक्ष्य सामाजिक विकास के कार्यक्रमों को सीमित करना तथा वेतनों को घटाना होता है। विकासशील देशों के लिए अमेरिका की नीति यह है - "मैं जैसा कहता हूं वैसा चलो, पर मैं जैसा चलता हूं वैसा नहीं।"

दिसम्बर 2001 में अर्जेन्टीना के आम लोगों ने बैंकरों और मालिकों द्वारा चलाई गई दर्दनाक व्यवस्था को साफ तौर पर नकार दिया। 20 दिसम्बर तक देश की राजधानी ब्यूनोस एइर्स समेत हर शहर और हर नगर जन प्रदर्शनों से गूंज उठा। राष्ट्रपति के वित्तीय सलाहकार कानेल्लो डोमिनगो को इस्तीफा देना पड़ा। राष्ट्रपति फेर्नांडो को भी यही कदम उठाना पड़ा। हफ्ते भर के बाद जन प्रदर्शनों ने नई सरकार का भी स्वागत किया।

दिसम्बर आन्दोलन को चिंगारी दिखाने का श्रेय उन बेरोजगारों को जाता है जिन्होंने पिछले कुछ अरसे से बड़े पैमाने पर तथा सिलसिलेवार आन्दोलन छेड़ रखे थे। जन प्रदर्शनों में जनता को बड़े पैमाने पर गोलबंद करने में इन्हीं का योगदान रहा। बेरोजगार मजदूरों के आन्दोलन ने पिछले 5 सालों से काफी तेजी पकड़ ली। पर पिछले साल वह न सिर्फ देश भर में फैल गया, बल्कि सरकार को चुनौती देने की स्थिति में जा पहुंचा। मालों की आपूर्ति को रोकना तथा परिवहन व्यवस्था को ठप्प कर देना इस आन्दोलन की कार्यनीति का हिस्सा है। ये लोग मुख्य राजमार्गों पर चक्काजाम करके अपनी मांगें मनवा लिया करते थे। इस आन्दोलन में महिलाओं ने प्रमुख भूमिका अदा की।

मध्यम वर्ग की जनता द्वारा बैंकों में बचत किए गए करोड़ों डॉलर धन को सरकार ने जब्त किया तो उन वर्गों के लोग भी विरोध प्रदर्शनों में भाग लेने सड़कों पर उतर आए। इनमें जागरूक मध्यम वर्ग के अलावा क्रांतिकारी वर्ग भी शामिल हैं। इन वर्गों की जनता को अपने समूची बचत राशियों से हाथ धोना पड़ा। भाड़ा चुकाने और बिलों का भुगतान करने के लिए इनके पास पैसा न था।

एक तरफ बेरोजगारों के पास पैसा नहीं था। दूसरी तरफ बैंकों में मालिकों के खातों को रोक दिए जाने से कर्मचारियों और मजदूरों को वेतन नहीं था। बैंकर न्यूयार्क शेयर बाजार में शेयर खरीद कर पैसा देश से बाहर निकालने लगे थे। इस पृष्ठभूमि में सरकारी कर्मचारियों

और दुकानदारों से गठित व्यापक मंच ने बैंकरों के खिलाफ काम किया।

बेरोजगार आन्दोलन में भाग लेने वाले सक्रिय कार्यकर्ताओं में तत्परता और खासा संघर्ष का अनुभव है। वे अपनी मांगों को अच्छी तरह समझते हैं। वे व्यापक स्तर पर रोजगार के अवसर पैदा करने वाली परियोजनाओं, न्यूनतम वेतनों, बेरोजगारी भत्ते, कर्जों की माफी, आर्थिक दृष्टि से कुछ रणनीतिक क्षेत्रों को फिर से सार्वजनिक क्षेत्र में लाने आदि मांगे कर रहे हैं।

अर्जेन्टीना में औद्योगिक मजदूरों का प्रतिशत 40 से 20 तक घट गया। बेरोजगार युवक शहरी फेरीवाले बन गए। इनमें इस्पात, लोहा, और मैकानिकल कारखानों में काम कर चुके मजदूर भी शामिल हैं। नौकरी गंवा चुके मजदूरों की बीवियों ने भी जन संघर्षों में जुझारू रूप से तथा बड़े पैमाने पर भाग लिया।

दुनिया में गोश्त एवं दलहनों की पैदावार में अग्रणी माने जाने वाले अर्जेन्टीना में आज मजदूर भूख से तड़प रहे हैं। उन्हें खाने के लिए गोश्त नहीं मिल रहा है। बच्चों को देने के लिए उनके पास रोटी नहीं है। जनता को अपनी बचतों को पूरी तरह गंवाना पड़ा। जनता में हताशा बढ़ गई।

वर्ग संघर्ष

अर्जेन्टीना में लम्बे अरसे से मजदूर संघ काम करते चले आ रहे हैं। दुनिया के बाकी देशों की तुलना में अर्जेन्टीना में आम हड़तालें ज्यादा हो रही हैं। अर्जेन्टीना एक ऐसा देश है जहां पर्मिनेन्ट नौकरी से वंचित औद्योगिक मजदूरों की संख्या बहुत अधिक है। और अर्जेन्टीना में बेरोजगार मजदूरों की संगठित कार्रवाइयां सबसे अधिक होती हैं। पिछले 5-10 सालों से मजदूर संघों द्वारा की गई आम हड़तालों और विरोध कार्रवाइयों के मुकाबले पिछले दिसम्बर की 20 तारीख को चला जन आन्दोलन काफी प्रभावी रहा। जनता की इस आमने-सामने की लड़ाई ने सरकार को अपने एजेन्डे में कई उल्लेखनीय बदलाव लाने को मजबूर किया।

इस आन्दोलन ने कई मुद्दों को सशक्त रूप से सामने लाया। विदेशी ऋणों की समाप्ति का सवाल एक समय सिर्फ कम्युनिस्टों के एजेन्डे में हुआ करता था। लेकिन वह आज मुख्यधारा का आम सवाल बन चुका है। रणनीतिक उद्योगों का दोबारा राष्ट्रीयकरण करने की मांग अब कुछ ही लोगों की सीमित मांग नहीं रही, बल्कि हजारों जनता की मांग बन गई। खासतौर पर अर्जेन्टीना के जन आन्दोलन ने साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की नीतियों पर प्रहार किया। इससे साम्राज्यवादी वित्तीय संगठनों से ऋण लेकर, उनके आदेशों को लागू करने से पिछड़े देशों की अर्थव्यवस्था किस तरह डगमगा जाती है, यह साफ तौर पर साबित हो गया।

एक क्रांतिकारी कम्युनिस्ट पार्टी का अभाव

जैसा कि लेनिन ने कहा, एक क्रांति के लिए यही काफी नहीं है कि शोषित और उत्पीड़ित जन समुदाय यह समझ लें कि पुराने तरीके से जीना अब मुमकिन नहीं है, और कि बदलाव की मांग करें। बल्कि एक क्रांति के लिए जरूरी यह है कि शोषकों को पुराने तरीके से जीना और राज चलाना नमुमकिन हो जाना चाहिए। क्रांतिकारी हालात रहने से क्रांति अपने आप नहीं होगी। यह मौका गंवाया भी जा सकता है, यदि वहां एक पार्टी नहीं हो जो क्रांति का नेतृत्व करने में सक्षम हो।

समूचे अर्जेन्टीना में दिसम्बर में जन समुदायों ने विद्रोह किए; हड़तालें चलाईं; गलियों में अवरोध खड़े किए; प्रमुख सड़कों को जाम कर दिया; सरकार से इस्तेफे की मांग की; और घोषणा की कि उन्हें किसी भी बुर्जुआई राजनीतिक पर भरोसा नहीं है। इस दौरान कई जुझारू ट्रेड यूनियनों का निर्माण भी हुआ। सीजीटी जैसे मान्यता प्राप्त ट्रेड यूनियन जिसकी हरेक सरकार के साथ सांठगांठ है, से नाता तोड़कर मजदूरों ने नए संगठन बनाए।

अर्जेन्टीना में 1990 के दशक में कई जुझारू संघर्ष हुए थे। इन संघर्षों के जरिए मजदूर-किसानों ने कई उपलब्धियां भी हासिल कीं। लेकिन जनता के जुझारूपन को सही दिशा देकर मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद के मार्गदर्शन में समाजवाद की स्थापना के लक्ष्य से साम्राज्यवाद एवं दलाल पूंजीवाद के खिलाफ लड़ने की एक कम्युनिस्ट पार्टी मौजूद नहीं है वहां। ऐसे में जनता के चाहे कितने बहादुराना संघर्षों से भी सीमित नतीजे ही निकलेंगे। खासकर अर्जेन्टीना के मजदूर वर्ग को यह समझ लेना चाहिए कि वहां पनप रही हरेक समस्या की जड़ इस पूंजीवादी व्यवस्था में ही है। जब तक वह किसानों, मध्यम वर्गों और अन्य जनवादी वर्गों के साथ एकता कायम करके समाजवाद की स्थापना को लक्ष्य बनाकर, अपने दुश्मनों को चिन्हित कर व्यापक संघर्ष नहीं करेगा, तब तक अर्जेन्टीना की शोषित और उत्पीड़ित जनता की वास्तविक मुक्ति नहीं होगी।

खासकर अमेरिकी साम्राज्यवाद अर्जेन्टीना के इन परिणामों को देख चुप नहीं रहेगा। जब-जब उसे यह लगता है कि अब ससंदीय लोकतंत्र से काम नहीं चलेगा तब-तब वह अपना गुप्तचर संगठन सीआइए के जरिए फौजी तख्ता-पलट की योजना बनाएगा। जनता की जनवादी आकांक्षाओं को फौजी तानाशाहों द्वारा बुरी तरह कुचलवा देगा। आशा करेंगे, अर्जेन्टीना की शोषित-उत्पीड़ित जनता इन साजिशों को समझ लेगी और अपने संघर्षों को तेज करेगी। ❑

पाठकों से अपील

- ***'प्रभात' के लिए नियमित एवं शीघ्रता से रिपोर्टें लिखकर भेजते रहिए। रिपोर्ट में जिस घटना या संघर्ष का जिक्र होगा, उसकी तारीख एवं स्थान लिखना मत भूलिए।***
- ***'प्रभात' पर आपकी आलोचनात्मक टिप्पणियां समय-समय पर भेजते रहिए।***
- ***'प्रभात' को भेजी जाने वाली तस्वीरों के पीछे यह जरूर लिखिए कि वह फोटो किस एरिया/डिवीजन की है, किस मौके पर ली गई है, और किस दिन।***
- ***'प्रभात' को जन-जन तक पहुंचाएं। 'प्रभात' के पैसे नियमित रूप से भेजते रहिए।***
- ***'प्रभात' से आप ई-मेल पर भी सम्पर्क कर सकते हैं। ई-मेल का पता है :***

prabhat_dk@yahoo.com

- सम्पादकमण्डल

केएस की मौत : एक भूतपूर्व क्रान्तिकारी का दुःखद अन्त

''आज संशोधनवादी ही सबसे बड़ा खतरा जिसका विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन सामना कर रहा है। भारत में भी, कम्युनिस्ट आन्दोलन के सामने मुख्य खतरा संशोधनवादी भाकपा व माकपा से तथा मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद का नकाब पहनकर नक्सलबाड़ी और कॉमरेड चारु मजुमदार की क्रांतिकारी लाइन का विरोध करने वाले दक्षिणपंथी अवसरवादी गुटों से है, ये नकली कम्युनिस्ट तुम्हें जितनी नफरत करेंगे, तुम उतना ही अच्छा क्रांतिकारी बन जाओगे। इन अवसरवादियों के साथ कोई समझौता नहीं हो सकता।''

संशोधनवादियों और मार्क्सवादी-लेनिनवादी आन्दोलन में दक्षिणपंथी अवसरवादियों के खिलाफ ये गंभीर टिप्पणियां थीं कोंडापल्लि सीतारमैया (केएस) की, जो एक जमाने के मंजे हुए क्रांतिकारी थे, जिसने 1972 में कॉ. चारु मजुमदार (सीएम) की शहादत के बाद देश में आन्दोलन की जबर्दस्त अस्थायी पराजय की स्थिति में आन्ध्रप्रदेश में भाकपा (मा-ले) का दोबारा निर्माण किया। लेकिन विडंबना है कि 12 अप्रैल को हुई उनकी मृत्यु से सबसे ज्यादा दुःख इन्हीं अवसरवादियों को पहुंचा। दो दिन बाद आयोजित उनकी अंत्येष्टि में संशोधनवादी शिविर के तमाम अनुभवी शख्स उपस्थित हुए थे। उन्होंने उनकी मौत को कम्युनिस्ट आन्दोलन को एक बड़ा नुकसान बताते हुए अपना गहरा शोक प्रकट किया। उनमें माकपा का राज्य सचिव बी.वी. राघवुलु, भाकपा का राज्य सचिव सुरवरम सुधाकर रेड्डी, कुछ तथाकथित मा-ले पार्टियों के नेता, यहां तक कि बेहद प्रतिक्रियावादी समता पार्टी के कुछ राज्य स्तरीय नेता भी शामिल थे। हालांकि कुछ क्रांतिकारी समर्थक भी उनकी अंत्येष्टि के मौके पर उपस्थित थे जो केएस को तब करीब से जानते थे जब उन्होंने 1991 के पहले दो दशकों तक क्रांतिकारी आन्दोलन का नेतृत्व किया था।

लेकिन एक बात जो साफ तौर पर दिखाई दी वह यह है कि उस 1,000 से कुछ ज्यादा भीड़ में (कुछ क्रांतिकारी समर्थकों को छोड़ दें तो) क्रांतिकारी जन समुदाय शामिल नहीं थे जिनका उन्होंने एक समय नेतृत्व किया था और जिन्हें वे क्रांतिकारी कार्रवाई के लिए प्रेरित किया था। यह दरअसल एक दुःखद – यूं कहें कि दुःखद-हास्यास्पद अन्त था, एक ऐसे शख्स का जिन्होंने 22 साल पहले 22 अप्रैल 1980 को भाकपा (मा-ले) [पीपुल्सवार] की स्थापना की थी; कई उतार-चढ़ावों में उसका नेतृत्व किया था; और उसे एक दुर्जेय ताकत में तब्दील किया था जो 1970 के दशक की शुरूआत में श्रीकाकुलम संघर्ष की अस्थायी पराजय के बाद बिखरी हुई और न के बराबर थी। सीधा-सीधा कहा जाए तो,यहां तक कि किसी स्थानीय पार्टी संगठक, या किसी जन संगठन कार्यकर्ता, या किसी नागरिक अधिकार कार्यकर्ता की मौत होती है तो हजारों की संख्या में जनता उसकी अंत्येष्टि में भाग लेती है। इसके बावजूद भी कि पुलिस जनता को गंभीर धमकियां देती हैं और कड़ी पाबंदियां लगाती है ताकि वे क्रांतिकारियों की अंत्येष्टियों में भाग न ले सकें।

जबकि एक सुभाष, एक रमाकान्त, एक डॉ. नारायण, या एक पुरूषोत्तम अपनी मौत से भी दसियों हजारों लोगों को प्रेरित करता है और आकर्षित करता है, तो 1970 और 1980 के दशकों के एक मंजे हुए क्रांतिकारी की मौत इस तरह जनता की नजरों में महत्वहीन क्यों हो गई?

जबकि एक श्याम, एक महेश और एक मुरली की मौत से दसियों लाखों क्रांतिकारी जन समुदाय आंसू बहाते हैं, तो क्यों खुद केएस, जिन्होंने ऐसे नेताओं को प्रशिक्षित किया था, की मौत पर मुट्ठी भर लोग ही शोक मनाते हैं, और यहां तक कि संशोधनवादी भी? ऐसे शख्स जो 1990 के दशक की शुरूआत तक शासक वर्गों के लिए गले में हड्डी थे, इतने कम समय में क्रांतिकारी जनता के लिए इतना अप्रासंगिक कैसे बन गए? इसके जवाब के लिए हमें केएस की उन्नति और पतन की द्वन्द्वात्मकता में, एक क्रांतिकारी के एक गैर-क्रांतिकारी के रूप में परिवर्तन में तथा महान शख्सियतों और आन्दोलन के बीच के द्वन्द्वात्मक संबंध में जाना होगा।

केएस का जीवन और मृत्यु इस बात का जीता-जागता उदाहरण है कि कैसे एक व्यक्ति, जिन्होंने भले ही अपनी जिन्दगी का अधिकतर हिस्सा एक महान क्रांतिकारी के रूप में गुजारा हो, यदि नम्रता को त्याग देता/देती है, काडरों और जनता से सीखने में विफल हो जाता/जाती है, अपने ही सीमित अनुभव और ज्ञान से आत्मसंतुष्ट बन जाता/जाती है, आन्दोलन की जरूरतों के मुताबिक तरक्की नहीं कर पाता है, तो इसके विपरीत में बदल सकता/सकती है। केएस का लंबा राजनीतिक जीवन क्रांतिकारियों के लिए दोनों सकारात्मक एवं नकारात्मक शिक्षा देता है। हालांकि केएस आज देश में जन समुदायों और क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए अप्रासंगिक हो चुके हैं। लेकिन क्रांतिकारियों के लिए उनके राजनीतिक जीवन का मुल्यांकन करना जरूरी है ताकि एक क्रांतिकारी के निर्माण और तबाही के संबंध में महत्वपूर्ण सबक लिया जा सके।

जैसा कि कॉ. माओ ने कहा: कुछ वक्त के लिए एक क्रांतिकारी कम्युनिस्ट के रूप में बने रहना किसी के लिए भी आसान है, लेकिन जिन्दगी भर क्रांतिकारी कम्युनिस्ट के रूप में बने रहना मुश्किल है। इस तरह, एक कम्युनिस्ट क्रांतिकारी के लिए असली इम्तेहान सिर्फ यह नहीं कि वह अपनी जिन्दगी का ज्यादातर हिस्सा एक कम्युनिस्ट के तौर पर कैसे जीता/जाती है, बल्कि यह है कि कैसे वह एक कम्युनिस्ट के तौर पर जीता/जीती भी है और मरता/मरती भी है। केएस ने अपने जीवन का अधिकांश भाग एक कम्युनिस्ट क्रांतिकारी के रूप में जिया, लेकिन उनकी तमाम उपलब्धियां और जनता में उनकी मान्यता तब बेकार हो गई जब वह अपने लंबे क्रांतिकारी जीवन के अन्तिम चरण में एक गैर-कम्युनिस्ट बन गए।

हमने विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के इतिहास में प्लेखानोव और कारल कॉट्स्की के बारे में सुना है। वे महान व्यक्ति थे जिन्होंने शुरूआती सालों में लाखों जनता को प्रेरित किया था और कम्युनिस्ट पार्टियों का मार्गदर्शन किया था। लेकिन ज्यों-ज्यों क्रांतियां आगे बढ़ीं, वे संशोधनवादी और यहां तक कि गद्दार भी बन गए थे। अब हमारे ठीक सामने इसी तरह का प्लेखानोव या कॉट्स्की मौजूद है।

एक महान क्रांतिकारी – लेकिन 1991 तक

1905 तक प्लेखानोव की तरह और 1912 तक कॉट्स्की की तरह केएस भी 1991 तक एक महान क्रांतिकारी थे। उस समय तक उन्होंने जिन क्रांतिकारी गुणों का प्रदर्शन किया – यानि ठोस हालात का ठोस विश्लेषण, क्रांतिकारी जनदिशा के साथ जुड़ाव, क्रांतिकारी चौकसी, संशोधनवाद और दक्षिणपंथी अवसरवाद के खिलाफ समझौताहीन संघर्ष, आदि का सभी क्रांतिकारियों को अनुसरण करना चाहिए। एक ऐसे समय पर जबकि नक्सलबाड़ी, श्रीकाकुलम और अन्य हथियारबंद संघर्षों की पराजय से भारत की क्रांति को एक जबर्दस्त झटका लगा था; कॉमरेड चारु मजुमदार की शहादत के बाद केन्द्रीय कमेटी का अस्तित्व ही समाप्त हो चुका था; सत्यनारायण सिंह, कानुसान्याल, नागभूषण पटनायक जैसे कुछ प्रमुख नेता कॉमरेड सीएम के खिलाफ जहर उगल रहे थे और भाकपा (मा-ले) की तमाम उपलब्धियों को नकार रहे थे; जब दक्षिणपंथी अवसरवाद का बोलबाला था और आन्दोलन के साथ गद्दारी की गई थी, केएस उन चंद क्रांतिकारियों में से एक थे जिन्होंने नक्सलबाड़ी और पार्टी की क्रांतिकारी लाइन का बचाव किया तथा अतीत का सही मूल्यांकन करके और उचित सबक लेकर उसे और भी समृद्ध बनाया। अतीत का मूल्यांकन करने वाले दस्तावेज को 'आत्मालोचना रिपोर्ट' के नाम से जाना जाता है और आज भी सिर्फ वही एक दस्तावेज है जो कि 1960 के दशक के आखिरी चरण और 1970 के दशक के शुरूआती चरण के आन्दोलन का वस्तुगत रूप से मूल्यांकन करता है।

इस आत्मालोचनात्मक मूल्यांकन से ली गई सीखों के आधार पर ही केएस की अगुवाई में आन्ध्र राज्य कमेटी ने आन्दोलन का दोबारा निर्माण किया तथा 1980 में भाकपा (मा-ले) [पीपुल्सवार] की स्थापना की गई। जल्द ही पार्टी और आन्दोलन कई राज्यों तक फैल गए जिससे उसका एक अखिल भारतीय स्वभाव उभरने लगा। केएस ने 1970 और 1980 के दशकों में आन्ध्र में टी. नागिरेड्डी-सीपी रेड्डी-डी.वी राव के गुट की तथा सत्यनारायण सिंह के गुट की और 1980 के दशक में लिबरेशन गुट की दक्षिणपंथी अवसरवादी लाइन के खिलाफ विचारधारात्मक एवं राजनीतिक संघर्ष चलाया। हालांकि अस्थायी पराजय के बाद दक्षिणपंथी खतरे को ही मुख्य खतरे के रूप में चिन्हित किया गया था, लेकिन 1970 के दशक के दौरान आन्ध्र पार्टी में वामपंथी दुस्साहसवादी लाइन का उल्लेखनीय प्रभाव रहा था। इसे पहचान कर पार्टी को क्रांतिकारी जनदिशा के सही रास्ते पर लाने के लिए पूरे प्रयास किए गए। इस लाइन को आधार बनाकर ही 1970 के दशक के आखिर तक एक राज्यव्यापी जन-आन्दोलन और उत्तरी तेलंगाना के कुछ हिस्सों में एक हथियारबंद खेतिहर आन्दोलन खड़ा किया गया। जल्द ही यह आन्दोलन समूचे तेलंगाना, दण्डकारण्य और आन्ध्रप्रदेश के अन्य हिस्सों में फैल गया। आधार इलाकों के निर्माण के दूरगामी परिप्रेक्ष्य के साथ सामरिक महत्व वाले इलाकों को छापामार इलाकों में विकसित करने के नजरिए से उत्तरी तेलंगाना और दण्डकारण्य में आन्दोलन निर्मित करने का श्रेय केएस को जाता है। केएस ने पेशेवर क्रांतिकारियों और पार्टी संगठकों की एक पूरी पीढ़ी को प्रशिक्षित किया था। उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों को भी क्रांतिकारी आन्दोलन के हमदर्द बनाया और 1969 में एक पुलिस मुठभेड़ में उनका बेटा चन्द्रशेखर शहीद हो गए।

केएस की सीमाएं और पार्टी-विरोधी गुट का गठन

लेकिन, 1987 के बाद राजनीतिक एवं सांगठनिक सीमाएं दिखाई देने लगीं जब वह पार्किन्सन्स बीमारी से ग्रस्त हुए थे। 1980 के दशक के आखिर से वह आन्दोलन की द्वन्द्वात्मकता को समझने में विफल होने लगे, क्रांति के जटिल एवं विविध कर्तव्यों का सामना करने में विफल हो गए और आन्दोलन से पीछे पड़ गए। आन्दोलन की बढ़ती जरूरतों के मुताबिक पार्टी को राजनीतिक, सांगठनिक एवं फौजी तौर पर मार्गदर्शन देने में अपनी विफलता के बावजूद उन्होंने इसे स्वीकारने से इनकार किया और ज्यादा नौकरशाही होते गए। इसके परिणामस्वरूप, वह आन्ध्र राज्य कमेटी और सीओसी (केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी), जो अगस्त 1990 में गठित की गई थी, के सामूहिक कामकाज में अड़चन बन गए। कुछ पदलोलुपों की एक छोटी सी कोठरी उसके इर्द-गिर्द खड़ी हो गई। इस कोठरी के सदस्यों –. प्रसाद, बन्डय्या, वेणु और कुछ लोगों ने खुद को एक परिसमापनवादी अराजकक गुट में संगठित किया, जिसने निजी हितों को क्रांति के हितों से ऊपर उठाया। केएस की महत्ता के पीछे खुद को छिपाकर इन्होंने आन्ध्र में पार्टी नेतृत्व के खिलाफ एक निन्दापूर्ण दुष्प्रचार अभियान छेड़ दिया और पार्टी-विरोधी गतिविधियां जारी रखीं। अराजकतावादियों के इस टोले से खुद को अलग करने के बजाए, केएस ने उनका बचाव किया और 1991 तक वह खुद भी पार्टी-विरोधी गतिविधियों में शामिल हो गए। 1992 के मध्य तक केएस और उस अवसरवादी-विघटनकारी गिरोह, जिसका उन्होंने नेतृत्व किया, को पार्टी से निकाल बाहर कर दिया गया। इस दौरान में केएस के भीतर एक दक्षिणपंथी गलत रुझान भी पनप चुका था।

इस तरह, भले ही 1991 तक केएस एक क्रान्तिकारी के रूप में बने रहे, लेकिन 1987 के बाद नौकरशाही रुझान ही उनके भीतर हावी रहा। पार्टी की कामयाबियों को देख तथा उन्हें मिली प्रसिद्धि से घमण्डी बनते गए। नेता और कार्यकर्ताओं के बीच के सम्बन्ध को देखने में विफल होकर क्रान्तिकारी जनदिशा को रद्द कर दिया। और एक निम्न पूंजीवादी अहंकारी की तरह वह इस भ्रम में पड़ गए कि उनकी विशेष प्रतिभा के बल पर ही आन्दोलन ने कामयाबियां हासिल कीं। सामूहिक कामकाज को रद्द कर दिया और खुद को कमेटी के ऊपर रख दिया, जिसका वह सचिव थे। कमेटी सदस्यों और अन्य कार्यकर्ताओं द्वारा की गई किसी भी आलोचना के प्रति उन्होंने बेहद असहिष्णुता का प्रदर्शन किया और पूरी तरह काम की व्यक्तिगत शैली अपना ली। 1991 के आते-आते वह अपने विपरीत में बदल गए और उन्होंने पार्टी नेतृत्व के सामने उन्हें ठीक उसी पार्टी से बहिष्कृत करने के अलावा कोई चारा नहीं रहने दिया, जिसके पुनरनिर्माण में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

इस तरह, पार्टी और क्रांतिकारी जन समुदायों के लिए राजनीतिक रूप से केएस की मौत काफी पहले ही, यानी 1991 में ही हो चुकी थी और यही वजह है कि 12 अप्रैल 2002 को हुई उनकी भौतिक मौत एक असंगत घटना हो गई।

पिछले एक दशक में केएस और मुट्ठी भर अराजकतावादियों, जिन्हें या तो पार्टी से निकाल बाहर कर दिया गया या फिर राजनीतिक मतभेदों के नाम पर खुद ही चले गए थे, के व्यवहार ने हमारी पार्टी

द्वारा किए गए मूल्यांकन को सही साबित किया जो हमने उन्हें बहिष्कृत करते समय किया था। उस पार्टी-विरोधी टोले के नेताओं के बीच पदलोलुपतावादी लक्षण (और कुछ लोगों के मामले में केएस के प्रति अंधी और सामंती वफादारी) के अलावा कोई साझा उद्देश्य ही नहीं था। यह बात तब साबित हुई जब वे आपसी झगड़ों में उलझ गए और टूट गए। किसी ने भी अपनी इच्छा से थोड़ा भी क्रान्तिकारी काम नहीं किया; कुछेक व्यापारी बन गए, कुछेक सत्तारूढ़ तेलुगुदेशम के गुर्गे बन गए और अकेले केएस ही सुनसान जिन्दगी जीते रहे। ज्यादातर समय वह बीमार रहे। अपनी मानसिक क्षमताएं खोईं। अखबारों में असंगत बयान दिए जिससे स्पष्ट हो गया कि वह अपनी सारी आलोचनात्मक मानसिक क्षमताएं खो बैठे। इस दौरान वह दो साल की छोटी-सी अवधि तक जेल में रहे और अपनी जिन्दगी के बाकी आखिरी दिन अपने परिवार के सदस्यों और संशोधनवादी भाकपा के नेताओं के साथ गुजारे। क्रांतिकारी आन्दोलन के साथ किसी भी माने में उनका कोई सम्बन्ध न रहा। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि केएस ने किसी भी प्रकार के पार्टी-विरोधी दुष्प्रचार अभियान में खुद को शामिल नहीं किया। उन्होंने यह भ्रम पाले रखा कि सभी तथाकथित वामपंथी पार्टियों और माओवादियों को एक पार्टी में एकीकृत होना चाहिए।

केएस के बगैर आगे बढ़ता जनयुद्ध

शुरू में प्रसार माध्यमों ने यह साबित करने की कोशिश की कि केएस को बाहर करने से पार्टी बुरी तरह कमजोर पड़ गई और उसके अस्तित्व पर ही प्रश्नचिह्न लग गया। यह भविष्यवाणि की गई थी कि केएस जैसे नेता की अनुपस्थिति में पार्टी जल्द ही टूट जाएगी और आन्दोलन को गहरा धक्का लगेगा। लेकिन एक क्रान्तिकारी पार्टी के विकास की द्वन्द्वात्मकता ने उनके सारे अनुमानों को उलट दिया। पार्टी पहले के मुकाबले कहीं ज्यादा मजबूत बनकर उभरी। सभी स्तरों पर सामूहिक नेतृत्व चलने लगा। विशेषकर 1969 में भाकपा (मा-ले) की स्थापना के बाद पहली बार केन्द्रीय स्तर पर सामूहिक नेतृत्व उभरकर आया। पार्टी ज्यादा मजबूत बन गई। उत्तरी तेलंगाना, दण्डकारण्य और एओबी (आन्ध्र-उड़ीसा सीमान्त) के छापामार इलाकों में और आन्ध्र के अन्य क्षेत्रों में आन्दोलन सुदृढ़ हो गया और जल्द ही कई राज्यों में फैलकर एक अखिल भारतीय स्वभाव हासिल कर लिया जोकि ऐसा 1970 के दशक की अस्थायी पराजय के बाद पहली बार हुआ। 1995 में सम्पन्न पुरानी पीपुल्सवार के अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन ने पार्टी को और भी सुदृढ़ बनाया। उसके बाद अगस्त 1998 में भाकपा (मा-ले) [पार्टी यूनिटी] के साथ विलय से भाकपा (मा-ले) की क्रांतिकारी मुख्यधारा से जुड़ी ताकतों के साथ एकता की प्रक्रिया बुनियादी तौर पर पूरी हो गई। पार्टी ने अपने संकीर्ण स्वभाव, जो केएस के जमाने में था, को छोड़ दिया और देश के भीतर एवं बाहर मौजूद मा-ले ताकतों के साथ भाईचारा सम्बन्ध स्थापित किए। कुल मिलाकर देखा जाए, तो 1992 के बाद के दौर में विभिन्न स्तरों के नेतृत्व को हुए जबर्दस्त नुकसानों के बावजूद पार्टी ने सभी मोर्चों में महत्वपूर्ण प्रगति हासिल की। मार्च 2001 में सम्पन्न ऐतिहासिक 9वीं कांग्रेस भारत में जनयुद्ध की प्रगति की प्रक्रिया में एक गुणात्मक छलांग को सूचित करती है।

मार्क्सवादी-लेनिनवादियों को केएस प्रसंग को कैसे समझना चाहिए?

केएस प्रसंग ने महान नेताओं और आन्दोलन के बीच के द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध को फिर एक बार प्रदर्शित किया। इसने साबित किया कि कोई भी नेता, चाहे वह कितना बड़ा प्रतिभावान भी क्यों न हो और उसका योगदान कितना बड़ा भी क्यों न हो, यदि एक बार आन्दोलन से अलग हो जाता है, आन्दोलन की जरूरतों के मुताबिक विकसित नहीं हो पाता है, हासिल कामयाबियों से घमण्डी बन जाता है, और खुद को पार्टी से ऊपर रखता है, तो वह पार्टी और आन्दोलन का मार्गदर्शन नहीं कर सकता। क्रांतिकारी आन्दोलन की अपनी द्वन्द्वात्मकता है – वह अपने नेताओं की गद्दारियों से नहीं रुकता और नए नेताओं को तैयार कर लेता, बशर्तेकि पार्टी सही लाइन से जुड़े रहे और वर्ग संघर्ष से गुमराह न हो।

मार्क्सवादी-लेनिनवादियों को हमेशा आन्दोलन और व्यक्तियों का ऐतिहासिक मूल्यांकन करने के वस्तुगत विश्लेषण के तरीके से जुड़े रहना चाहिए। केएस की भूमिका का मूल्यांकन करते समय, क्रान्तिकारियों को चाहिए कि वे 1991 के बाद केएस के पतन के मद्देनजर, 1991 के पहले एक लम्बे अरसे तक भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन में उनके महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक योगदान को कबूलने में किसी पूर्वग्रह का शिकार न बनें। 1991 से पहले और 1991 के बाद उनकी भूमिका का ऐतिहासिक रूप से मूल्यांकन करना चाहिए। वही एक सही तरीका है। यह वाकई एक त्रासदी है कि जिस आदमी को उसके भारत की क्रान्ति में महत्वपूर्ण योगदान के लिए याद किया जाएगा, उसकी मौत एक महत्वहीन घटना बन गई। ❑

(.... पृष्ठ 14 का शेष)

जबकि बाकी सभाएं डीएकेएमएस और केएएमएस की अगुवाई में आयोजित की गईं। इन सभाओं को सफलता से चलाने में पीजीए के बेस फोर्स का बड़ा सहयोग रहा। उन्होंने जगह-जगह पहरा देकर और सुरक्षात्मक गश्त लगाकर सभाओं को दुश्मन के हमलों से बचाया।

शहीद-सप्ताह के पहले ही प्रचार कार्यक्रम पूरे एरिया में चलाया गया। 150 पोस्टर लगाए गए और 6 स्थानों पर बैनर लगा दिए गए। दीवारों पर शहीद-सप्ताह के अवसर पर नारे भी लिखे गए। कोंदावाया में 110, जुरीनाला के पास 144, चेवेरीघाटुम में 170, कुदिरीघाटुम में 200 और रेंगादांडी में 112 लोगों ने सभाओं में भाग लिया। कुछ जगहों पर सभा के पहले जुलूस भी निकाले गए। इन सभाओं को कामयाबी दिलाने के लिए मिलिशिया सदस्यों ने 85 भरमारों से लैस होकर पहरा दिया। सभा में शामिल सभी व्यक्ति अपनी-अपनी परम्परागत हथियारों से लैस थे। उन्होंने सभाओं में शहीद साथियों को श्रद्धांजली पेश करके संघर्ष को दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। इस दौरान पुलिस वालों के ग्राम इरपानार में डेरा डालने की खबर मिलते ही मिलिशिया के सदस्यों ने उन पर गोलीबारी कर दी। जूरीनाला के पास बनाए स्मारक को पुलिस वालों ने तोड़ दिया, तो तत्काल ही इसकी प्रतिक्रिया में वांगेझरी के ग्राम पंचायत भवन को विस्फोट से उड़ा दिया गया, जिसमें स्थानीय छापामार दस्ते के अलावा पीजीए के बेस फोर्स सदस्यों ने भाग लिया। ❑

हरियाणा में किसान आन्दोलन

हरियाणा के किसान संघर्षरत हैं। विश्व बैंक, आइएमएफ और डब्ल्यूटीओ के माध्यम से जारी साम्राज्यवादी दुराक्रमण के चलते बेहद पिछड़े जन समुदाय जंगे मैदान में उतरने पर बाध्य हो रहे हैं। हरियाणा की जनता जाग रही है। पिछले 8 महीनों से, वहां पर कई तबकों के लोग व्यापक स्तर पर जुझारू संघर्ष कर रहे हैं। पहले, हरियाणा के दो प्रमुख विश्वविद्यालयों में सरकार की छात्र-विरोधी नीतियों के खिलाफ छात्रों का संघर्ष चला था। बाद में चला भिवानी के खान मजदूरों का संघर्ष। हजारों मजदूरों ने ठेकेदारों के बचाव में आई पुलिस के खिलाफ जुझारू रूप से घमासान संघर्ष किया था। हजारों कर्मचारियों ने निजीकरण, छंटनी, स्वेच्छिक सेवानिवृत्ति योजना, वेतनों का स्तंभन जैसी डब्ल्यूटीओ निर्देशित नीतियों के खिलाफ आन्दोलन छेड़ा था। और अब एक जुझारू किसान आन्दोलन छिड़ गया, जिसका केन्द्र है जिन्द जिले का कंडेला गांव। हरियाणा, जिसे अभी तक भारतीय राज्य और शासक वर्गों की रक्षा में सैनिक भेजने के लिए जाना जाता रहा है, ने अपनी छवि को बदलना शुरू किया और अब भारतीय राज्य के खिलाफ लड़ भी रहा है।

कंडेला एक बड़ा गांव है जो हरियाणा के बीचोंबीच, जिन्द जिले में स्थित हैं। इस संघर्ष के पहले उसे ज्यादा लोग नहीं जानते थे। लेकिन वह अब गैर-जिम्मेवार राजनीतिकों, जो चुनाव के पहले लोगों से मीठे वायदे करते हैं, पर बाद में उन पर अमल का नाम ही नहीं लेते, के खिलाफ किसान-प्रतिरोध का संकेत बन गया। कंडेला राजकीय दमन के खिलफ किसान-प्रतिरोध का संकेत बनकर उभरा है। वह जनता को एकताबद्ध होने और लड़ने की राह दिखा रहा है।

टूटे वादों की अटूट शृंखला

यह दगाबाजी का निरन्तर इतिहास है। वायदे तोड़ने का निर्लज्ज इतिहास है। 1993 में कांग्रेस की भजन लाल सरकार ने कर्नाल जिले के एक छोटा सा कस्बा निस्सिंग में पुलिस द्वारा गोलीबारी करवाई थी, जिसमें 4 किसान मारे गए थे और कई घायल हुए थे। भन्सीलाल ने इस मौके का फायदा उठाया। और सत्ता छीन ली। लेकिन किसानों की समस्याएं जस की तस रह गईं। 1997 में दक्षिण हरियाणा में स्थिति विस्फोटक हो गई थी क्योंकि सरकार ने क्षतिग्रस्त ट्रान्सफार्मरों को सुधारने की सामान्य मांग पूरी नहीं की जिससे वह मुफ्त बिजली आपूर्ति की मांग में बदल गई। किसानों के विरोध-प्रदर्शनों ने 'रेल रोको' का रूप ले लिया। कडमा और मंडियाली गांवों में पुलिस ने गोली चलाई जिससे छह किसान मारे गए। मेहम का बदमाश ओम प्रकाश चोताला ने अपनी दूषित छवि को सुधारने की कोशिश की और खुद को 'किसान-पुत्र' के रूप नें पेश किया। चुनाव के दौरान जनता से ऊंचे वायदे करके सत्ता पर कब्जा किया। लेकिन जब किसानों ने बिजली के बकाया बिलों को माफ कर देने के उसके वायदे को लागू करने की मांग उठाई, तो किसानों को एक और मेहम का मजा चखना पड़ा। लगातार तीन सरकारों ने बिजली बिलों के भुगतान के मुद्दे पर किसानों को मार डाला। इनमें सबसे खूंखार निकला चौताला। इसने चुनाव के समय मुख्य नारा यह दिया था – "बिजली जावेगा नहीं, बिल आवेगा नहीं।" भन्सीलाल के शासनकाल में इसी चौताला ने लोगों को बिजली बिल न भरने की हिदायत दी थी। चुनाव जीता और अपने वायदों को भुलाकर तब तक गहरी नींद में रहा, जब तक कि किसानों ने उसकी नींद में खलल नहीं डाली।

मौजूदा संकट और उसके नतीजे में किसानों में पनपा असंतोष साम्राज्यवाद के द्वारा निर्देशित निजीकरण, उदारीकरण, भूमण्डलीकरण जैसी नई आर्थिक नीतियों के हमले का अंजाम है। विश्व बैंक-आइएमएफ और डब्ल्यूटीओ ने भारत के शासक वर्गों से कृषि समेत हर चीज का उदारीकरण करने को कहा। इसका किसानों पर क्या असर पड़ेगा? बिजली, पानी, खाद या किसी अन्य कृषि निवेश को कोई सब्सिडी नहीं होगी। कृषि-बाजार में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रवेश के लिए सभी रास्ते खुला कर दिए गए।

भजनलाल के समय में जब बिजली दरों को बढ़ाया गया था किसानों ने इसका जमकर विरोध किया था क्योंकि पहले से ही कृषि-कार्य संकटग्रस्त था। इस तरह, तब शुरू हुआ यह विरोध अलग-अलग स्वरूपों में आज तक जारी है, और इस दौरान अब तक 20 किसानों ने अपनी जान कुरबान कर दी। विश्व बैंक से कर्ज उठाकर, उसके द्वारा थोपी गई शर्तों का पालन करते हुए सभी अनुवर्ती सरकारों ने बढ़ी हुई दरों को घटाने से साफ तौर पर इनकार किया है। चूंकि आमतौर पर

जिन्द-चण्डीगढ़ सड़क पर कण्डेला गांव में खड़ा किया गया अवरोध

पानी का स्तर घटता जा रहा है, इसलिए जहां कहीं भी नलकूपों से सिंचाई की व्यवस्था अमल में हो, बिजली का खर्च बढ़ता जा रहा है और दरों में वृद्धि से किसानों पर मानो मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। यही वजह है कि नेताओं का मुफ्त बिजली का नारा किसानों के दिलों को छू गया है, और वे चुनाव जीत पा रहे हैं। लेकिन, चूंकि दलाल शासक विश्व बैंक की शर्तों का उल्लंघन नहीं कर सकते, इसलिए वे सख्त दमन का सहारा लेकर किसानों की अहसमति को कुचलने पर तुल गए जो एक दशक से अलग-अलग रूपों में लगातार फूट रही है।

चुनावों में चौताला के जीतने के बाद, किसानों ने बेसब्री के साथ (कम से कम) इस वायदे की पूर्ति का इन्तजार किया कि एक दशक से लंबित किसानों के 800 करोड़ रु. बकाया कर्जों को माफ किया जाएगा। लेकिन जब ऐसा कुछ नहीं हुआ, तो किसानों ने बीकेयू (भारतीय किसान यूनियन) की अगुवाई में आन्दोलन छेड़ दिया। बीकेयू ने बकाया कर्जों को माफ करने की मांग करते हुए 21 दिसम्बर को कन्डेला गांव में एक बड़ी रैली की घोषणा की। रैली को जबर्दस्त कामयाबी मिली और चौताला सरकार के खिलाफ किसानों का गुस्सा बढ़ गया। चौताला ने न तो कर्ज माफ किए न ही मुफ्त बिजली दी जैसा कि उसने वादा किया था, बल्कि उसने किसानों को यह अनिवार्य बनाया कि यदि वे कर्ज लेना चाहते हैं, या कोई पंजीकरण कराना चाहते हैं, या यहां तक कि अपने बच्चों को किसी शैक्षणिक संस्थान में दाखिला दिलाना चाहते हैं, तो बिजली विभाग से, 'कोई बाकाया नहीं प्रमाण-पत्र' लाकर दिखाएं।

रैली को नाकाम करने की चौताला सरकार की लाख कोशिशों के बावजूद, कम से कम 20 हजार लोगों ने रैली में भाग लिया। पुलिस ने गड़बड़ी पैदा करने की कोशिश की तो किसान उससे भिड़ गए। पुलिस ने किसानों पर गोलीबारी शुरू की, तो किसानों ने पत्थरों और परम्परागत हथियारों से जवाब दिया। आखिरकार पुलिस को दुम दबाकर वापिस जाना पड़ा। सरकार ने जहां एक तरफ जनता और बीकेयू नेताओं के खिलाफ संगीन आरोप लगाकर वारन्ट जारी किए, वहीं दूसरी तरफ उसे मजबूर होकर बातचीत की मेज पर भी आना पड़ा। 31 दिसम्बर को बीकेयू नेतृत्व के साथ एक समझौता कर लिया, जिसे 'कन्डेला समझौता' कहा जा रहा गया। इसके मुताबिक, सभी जले ट्रान्सफॉर्मरों को दुरुस्त करवाया जाएगा; 'कोई बकाया नहीं प्रमाण-पत्र' देने की अनिवार्य शर्त को रद्द किया जाएगा; और किसानों के पुराने बकाया बिजली बिलों के मुद्दे पर भविष्य में एक सम्मानजनक समझौता किया जाएगा। लेकिन सरकार मुकर गई और ऐसे किसी समझौते को नकार दिया। हालांकि जनवरी और मार्च में भी बातचीत के दौर चले पर मुख्य मुद्दे पर कोई समझौता न हो सका।

अप्रैल का महीना किसानों के लिए महत्वपूर्ण था क्योंकि वे फसल काटने के काम में व्यस्त हो गए। एक ओर बातचीत का ढोंग करते हुए ही उन्होंने 21 दिसम्बर की घटनाओं के वारन्टों को संशोधित कर नेताओं की गिरफ्तारी शुरू की। 65 किसान नेताओं के खिलाफ वारन्ट जारी किए गए और बीकेयू अध्यक्ष घासीराम नैन को फरार घोषित कर उसकी गिरफ्तारी में मदद करने वालों को 10,000 रू. का इनाम घोषित किया। सरकार ने किसानों के राज्य एवं जिला स्तर के कई नेताओं की कुर्की शुरू कर दी।

इस तरह, हरियाणा के इतिहास में पहली बार दमनचक्र अभूतपूर्व स्तर पर पहुंच गया। जब बीकेयू (एकता) और 'फेग' (साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण विरोधी मंच) की एक तथ्यान्वेषण कमेटी, जिसका नेतृत्व एआइपीआरएफ अध्यक्ष डॉ. दर्शन पाल कर रहे थे, हरियाणा गई तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। यह सिलसिला जारी रखते हुए ही, चौताला ने पुराने बकाया बिलों में 75% प्रतिशत माफ करने की घोषणा कर बाकी 25% का भुगतान करने को किसानों से कहा।

हत्यारा चौताला द्वारा जारी चौतरफा दमन

चौताला की यह योजना थी कि दमन के सहारे वर्तमान आन्दोलन को कुचल दिया जाए। सरकार के सामने दो मजबूरियां थीं। एक थी बिजली वितरण का निजीकरण, जो विश्व बैंक द्वारा लगाई शर्त थी, जो उसने कांग्रेस सरकार के समय 5,000 करोड़ रू. का कर्ज देते हुए थोपी थी। यह इसलिए किया गया ताकि उद्योगपतियों, जो वितरण के क्षेत्र में घुसने जा रहे हैं, को यह गारन्टी मिले और सुसाध्य हो कि वे जनता से बिना किसी दिक्कत के पैसा वसूल सकेंगे। दूसरी तो इससे कहीं ज्यादा खतरनाक है। वह यह है कि डब्ल्यूटीओ की शर्तों की पूर्ति करने कि लिए भारतीय कृषि क्षेत्र को विदेशी खिलाड़ियों के लिए खोल देना होगा और किसी भी कृषि उत्पादन पर सब्सिडी खत्म करनी होगी। इसलिए अब सरकार समर्थन मूल्य पर कुछ भी नहीं खरीदेगी। किसानों को बाजार के आदेशों पर चलना होगा। अगर सरकार कृषि उत्पादों, विशेषकर गेहूं को खरीदना बंद करती है तो हालात कितने अस्थिर होंगे इसका अंदाजा लगाते हुए, चौताला ने बीकेयू का दमन कर किसानों को नेतृत्वविहीन बनाने की ठान ले रखी है। सत्ता संभालने के बाद उसने किसानों को फलों और फूलों की खेती करने की हिदायत देना शुरू किया।

जनता का बहादुराना मुकाबला

लेकिन चौताला की साजिशें पिट गईं। उसने किसानों का जितना दमन किया, किसानों में एकता एवं लड़ने का संकल्प उतना ही बढ़ा। जब बीकेयू ने दमन के खिलाफ तथा मांगों के समर्थन में लड़ने के लिए कन्डेला में एक बड़ी रैली का आह्वान किया, तो पुलिस द्वारा खड़ी की गई तमाम रुकावटों के बावजूद किसान बड़ी तादाद में इकठ्ठे हो गए। सरकार द्वारा कई अवरोध खड़े किए गए तथा कई अफवाहें फैलाई गईं कि कुछ गंभीर घटना घटेगी। हजारों लोगों ने परम्परागत हथियारों से रैली में भाग लिया। पहली बार महिलाओं ने भारी तादात में भाग लिया और हथियार भी पकड़े। जनता किसी भी अंजाम के लिए तैयार थी। कन्डेला रैली में भाग लेने के लिए आ रहे प्रदर्शकों को नागुरा में जब पुलिस ने रोकने की कोशिश की तो जनता ने प्रतिरोध किया और पुलिस ने गोली चलाई। राम स्वरूप नामक एक किसान मौके पर ही मारा गया और दो दिन बाद पास के खेत में एक और लाश मिली जिस पर बुरी तरह पीटे जाने के निशान थे। दर्जनों लोग घायल हुए।

जनता की प्रतिक्रिया तेज थी। किलोलि गांव में जनता ने एक डीएसपी समेत चार लोगों को बंदी बनाकर अगवा कर लिया। 21 मई को कन्डेला गांव में दो डीएसपी समेत पांच लोगों को बंदी बनाया गया। जनता ने गांव की किलेबंदी की और जल्द ही सड़कों को जाम करना शुरू किया। जिन्द-पानिपट, *(शेष पृष्ठ 29 पर....)*

जन संघर्ष

23 मई को उत्तर बस्तर और माड़ डिवीजनों में बन्द सफल

पार्टी की उत्तर बस्तर और माड़ डिवीजनल कमेटियों ने नगरनार स्टील प्लान्ट की स्थापना एवं जनता पर पुलिस दमन के खिलाफ, और उसके साथ-साथ, गुजरात की मुसलमान जनता पर हिन्दू फासीवादी ताकतों के हमलों और साम्प्रदायिक कत्लेआमों के खिलाफ 23 मई को बन्द का आह्वान किया था।

नगरनार स्टील प्लान्ट के निर्माण के प्रति स्थानीय जनता के पुरजोर विरोध के बावजूद उसका काम जारी है। सरकार ने दमन का सहारा लेकर जनता के विरोध को दबाने का रास्ता अपनाया है। कम से कम 150 लोगों को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ गलत मामले दर्ज किए गए। कई स्त्री-पुरुषों के साथ मारपीट भी किया गया जिनमें कुछेक तो 60-70 साल के वृद्ध भी थे। महिलाओं का अपमान किया गया हजार से ज्यादा किसानों को उनकी जमीनों से बेदखल कर दिया गया, जिससे उन पर आधारित कई हजारों लोगों की जिन्दगी तबाह हो गई। 1,100 हेक्टेयर से ज्यादा जमीनें छीन ली गईं। नगरनार जनता के जायज संघर्ष के समर्थन में बाहर से आए सभी जनवादपसन्द लोगों को जगदलपुर में ही रोका गया और उनके साथ अपमानजनक बरताव भी किया गया। बस्तर के विकास की ढोंगबाजी करते हुए स्थापित किए जा रहे इस स्टील प्लान्ट से न तो बस्तर का विकास होगा, न ही बस्तर में बेरोजगारी खत्म होगी, जैसा कि कुछ लोगों ने गलतफहमी पाले रखी है। बस्तर में साम्राज्यवादी लूट-खसोट के लिए सारे दरवाजे खोलने की सरकार की दिवालिया नीति का हिस्सा ही है नगरनार स्टील प्लान्ट की स्थापना।

गुजरात को संघ परिवार ने एक प्रयोगशाला बना रखी है, जिसमें मुसलमानों के खिलाफ नफरत और कत्लेआम के जरिए सत्ता पर काबिज होने की योजना पर शोध किया जा रहा है। हालांकि दिखने में तो इस कत्लेआम का सूत्रधार नरेन्द्र मोदी ही लग रहा है, लेकिन यही पूरी सचाई नहीं है। क्योंकि देश के शासक वर्ग गहरे आर्थिक एवं राजनीतिक संकट में फंसे हुए हैं, और उन्हें यह डर हमेशा रहता ही है कि कहीं इस संकट से एक व्यापक सामाजिक क्रान्ति के लिए जमीन तैयार न हो जाए। दूसरे तरफ देश में चल रहे राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों और क्रान्तिकारी संघर्षों ने उनकी रात की नींद और दिन का चैन छीन लिया है। इसीलिए वे चाहते हैं कि देश में फासीवाद को भड़काकर एक तरफ संघर्षशील जनता का दमन कर दिया जाए और जनता में मुसलमानों और पाकिस्तान के प्रति नफरत बढ़ाकर अपनी मूलभूत समस्याओं ☞

(.... पृष्ठ 28 का शेष)

जिन्द-हिस्सार और जिन्द-कैथाल-चंडीगढ़ सड़कों पर कई स्थानों में अवरोध खड़े कर दिए गए। जब पुलिस ने रुकावटों को हटाने की कोशिश की तो जनता ने जमकर लड़ाइयां कीं। पुलिस को पीछे हटना पड़ा। पुलिस, सरकारी अधिकारियों, विधायकों और सांसदों को, विशेषकर आइएनएलडी (इंडियन नेशनल लोक दल) वालों को गांवों में कदम रखने की हिम्मत ही नहीं थी। बीकेयू के जिन नेताओं की गिरफ्तारी के वारन्ट जारी कर दिए गए थे, उन्हें बचाने के लिए जनता ने तीन घेरे बनाए। दिन-रात की संतरी तैनात कर दी गई। पत्थर, परम्परागत हथियार और आग्नेयास्त्र जुटा लिए गए। पुलिस की आतंकी कार्रवाइयां जारी थीं। चक्काजाम के 5 स्थानों पर पुलिस ने गोली चलाई जिससे 9 लोगों की जानें गईं। कातिल चौताला की सरकार ने 100 से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार किया और 2,000 से ज्यादा लोगों के खिलाफ विभिन्न मामले दर्ज किए।

जुझारू दावपेंच किसी भी शासक वर्गीय पार्टी को रास न आया। कुछ अखबारों ने किसानों के जुझारू दावपेंच के खतरनाक अंजाम होने का अंदेशा जताया। हालांकि कांग्रेस इस आन्दोलन के समर्थन में सामने आई, लेकिन उसके एक तबके ने किसानों की मांगों और जुझारू दावपेंचों का खुलकर विरोध किया। संशोधनवादियों, खासकर माकपा ने यह कहकर खुद को सुरक्षित फासले पर रखा कि स्थिति को ठीक से नहीं निपटाया गया। सिवाए क्रांतिकारी युवा और छात्र संगठनों के, सबके सब दूर ही रह गए।

एक माह बाद, चौताला उतर आया और सभी गिरफ्तार किसानों को रिहा किया तथा 1992 के बाद किसानों के खिलाफ दर्ज तमाम पुलिस केस वापिस लिए। लेकिन बिजली बिलों के बचे 25% को माफ करने की मांग पूरी नहीं की गई। फिलहाल तो यह आन्दोलन वापिस लिया गया। यह किसान संघर्ष कुछ कमजोरियों के बावजूद हरियाणा के आन्दोलन के इतिहास में मील का पत्थर साबित होगा।

इस आन्दोलन को समूचे हरियाणा में फैलाने के बढ़िया अवसरों के बावजूद इसके प्रति स्वतःस्फूर्तता ही बरती गई। इस आन्दोलन में गांवों में मौजूद विभिन्न तबकों को गोलबंद करने की कोशिश नहीं की गई। नेतृत्व की वर्गीय सीमाओं के कारण खासतौर पर खेतिहर मजदूरों को आन्दोलन से दूर ही रखा गया था। इसके बावजूद कुछ गांवों में ग्रामीण मजदूरों ने किसान संगठनों के समर्थन में प्रदर्शन किए। अन्य राज्यों के किसान आन्दोलनों का समर्थन हासिल करने का कोई सक्रिय प्रयास नहीं किया गया। पंजाब के बीकेयू (एकता) ने किसान आन्दोलन के समर्थन में दमन का विरोध करते हुए चंडीगढ़ में एक प्रदर्शन किया। कुल मिलाकर, हरियाणा की ऐतिहासिक स्थिति में नेतृत्व का प्रदर्शन बुरा तो नहीं कहा जा सकता है, हालांकि इसने आन्दोलन के दौरान कई कमजोरियां दिखाईं। सड़कों पर चक्काजाम कार्यक्रम घोषित करने में उसे पूरे तीन दिन लग गए। उसने बंधक व्यक्तियों को ज्यादा दमन के डर से जल्दी छोड़ दिया, इसके बावजूद कि जनता इस पर अड़ी थी कि जब तक उनकी मांगें पूरी नहीं होंगी तब तक उन्हें न छोड़ा जाए।

केन्द्र और राज्यों की कठपुतली सरकारों द्वारा कृषि क्षेत्र में लादी जा रही डब्ल्यूटीओ-आइएमएफ-विश्व बैंक की नीतियों के खिलाफ समूचे देश में एक जबर्दस्त सरकार-विरोधी एवं साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलन छिड़ने की निकट संभावना है, हरियाणा के वर्तमान आन्दोलन से यही समझ पड़ता है। ❑

से गुमराह किया जाए। इस सोची-समझी साजिश के तहत ही गुजरात में गोधरा काण्ड की प्रतिक्रिया के बहाने हजारों मुसलमानों का कत्लेआम किया गया और लाखों को बेघर कर दिया गया।

इन दोनों सवालों पर जनता ने जबर्दस्त प्रतिक्रिया करते हुए बन्द को पूरी तरह सफल बनाया। नारायणपुर-कोण्डागांव सड़क, नारायणपुर-ओरछा एवं नारायणपुर-अन्तागढ़ सडकें पूरी तरह जाम कर दिए गए। गांवों में जन संगठनों के कार्यकर्ताओं ने व्यापक प्रचार अभियान चलाया। इस बन्द को सफल बनाकर दोनों डिवीजनों के हजारों जनता ने नगरनार की जनता के प्रति तथा गुजरात के मुसलमानों के प्रति अपनी हमदर्दी जताई।

1 मई को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मना

उत्तर बस्तर डिवीजन : के ग्राम इन्नर में लगने वाले हाट बाजार में पीजीए की दो अलग-अलग टुकड़ियों की अगुवाई में मई दिवस मनाया गया। हाट में आए करीब 400 स्त्री-पुरुषों ने सभा में भाग लिया। सभा को एरिया कमेटी सदस्या कॉ. अनिता के अलावा कॉ. झितरू ने सम्बोधित किया। उन्होंने जनता को मई दिवस के महत्व और उसके इतिहास से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि हालांकि 8 घण्टे के काम के लिए मजदूरों द्वारा 100 साल से पहले किए गए संघर्षों के परिणामस्वरूप यह मई दिवस अस्तित्व में आया था, लेकिन आज भी मजदूरों से कई कारखानों में 12 घण्टा काम करवाया जाता है और न्यूनतम अधिकारों से भी वंचित किया जाता है। उन्होंने आह्वान किया कि मजदूरों को अपनी समस्याओं के समाधान के लिए संगठित होकर लड़ना चाहिए तथा आज दण्डकारण्य के ग्रामीण इलाकों में नव जनवादी क्रान्ति के लक्ष्य से जारी क्रान्तिकारी आन्दोलन के साथ एकताबद्ध होना चाहिए।

कोण्डागांव एरिया के ग्राम नरिया में आयोजित एक और सभा में 5 गांवों से करीब 450 लोगों ने भाग लिया। डीएकेएमएस रेन्ज कमेटी की अगुवाई में आयोजित इस सभा को कॉ. मुन्ना आदि जन संगठन कार्यकर्ताओं ने सम्बोधित किया। उन्होंने जनता से आह्वान किया कि शहरों और कस्बों में मजदूरों के द्वारा किए जा रहे संघर्षों के समर्थन में हम किसानों को भी संघर्ष करना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया कि मई दिवस महज मजदूरों की रोजमर्रा की समस्याओं पर विचार-विमर्श करने का दिन नहीं है, बल्कि मजदूरों की मुक्ति के सवाल पर चर्चा करने का दिन है तथा तमाम उत्पीड़ित जनता की मुक्ति के लिए जारी संघर्ष में मजदूरों की भूमिका को समझने का दिन है। सभा के अन्त में 'मई दिवस जिन्दाबाद', 'शिकागो अमर शहीदों को लाल सलाम' आदि नारे लगाए गए।

गड़चिरोली डिवीजन : टिप्रागढ़ छापामार दस्ता ने प्रतिरोध कार्यक्रम में लगे होने के बावजूद 1 मई को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया। सुबह 9 बजे टिप्रागढ़ एरिया कमेटी सचिव एवं कमाण्डर कॉमरेड दिवाकर ने पार्टी झण्डा फहराया। उसके बाद शिकागो के वीर शहीद मजदूरों के याद में 2 मिनट का मौन रखा गया। उसके बाद सभा को कॉ. मनीषा, कॉ. श्रीकान्त, कॉ. अशोक, कॉ. दिवाकर और कॉ. जंगु ने सम्बोधित किया। वक्ताओं ने मई दिवस को मजदूरों का विजय दिवस बताते हुए इसके महत्व के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियां दीं। मजदूरों के ऊपर लादे गए काले कानूनों और सरकार की दमनकारी नीतियों की तीव्र भर्त्सना की गई। तथा इसके खिलाफ व्यापक आन्दोलन चलाने की जरूरत पर बल दिया गया। नव जनवादी क्रान्ति के लक्ष्य को पूरा करने के लिए मजदूरों के नेतृत्व में किसानों के साथ एकता पर वक्ताओं ने बल दिया। इस सभा में कुल 46 पीजीए सैनिक शामिल थे। मोबाइल अकादमिक स्कूल विभाग के कॉमरेड जीवन ने भी इस सभा को सम्बोधित किया।

1 मई की शाम को तेरेगांव व उचापुर की जनता के बीच, जिसमें कुल 140 स्त्री-पुरुष शामिल थे, मई दिवस को बड़े जोशो-खरोश के साथ मनाया गया। पहली बार मनाए गए मई दिवस को जनता ने बड़े धैर्य के साथ सुना। सभा को कॉ. दिवाकर ने सम्बोधित किया।

एटापल्ली एरिया में पोटा कानून के खिलाफ जनता का मोर्चा निकला

एटापल्ली दलम एरिया में एटापल्ली रेंज में 22 मार्च को पिपिल्ली गांव में पोटा कानून के खिलाफ 250 लोगों ने मोर्चा निकाला और इरपानार गांव में 185 लोग मोर्चा में शामिल हुए। और गांव-गांव में पोटा कानून के खिलाफ जन संगठन सदस्यों ने प्रचार किया।

चुनाव बहिष्कार

एटापल्ली एरिया के कसनसूर रेंज में जनता ने पंचायत समिति और जिला परिषद चुनाव का बहिष्कार किया। चुनाव प्रचार करने के लिए आए शिवसेना के जीप की लोगों ने तोड़-फोड़ कर दी। 14 गांवों में एक भी वोट नहीं डला, और एटापल्ली रेंज में भी 13 गांवों में एक भी वोट नहीं डाला गया। इस एरिया के जनता अपनी क्रान्तिकारी चेतना का सबूत पेश करते हुए पुलिस की जोर-जबर्दस्ती के बावजूद झूठे चुनावों का साफ तौर पर नकार दिया। जनता अब अपना भविष्य अपने ही हाथों में लेते हुए जनता की राजसत्ता के अंगों के निर्माण की ओर कदम बढ़ा रही है।

22 मार्च को पोटा कानून के खिलाफ बन्द

22 मार्च 2002 का दिन माड़ में जन चेतना का परिचायक था। तथाकथित सभ्य लोगों द्वारा 'अबूझमाड़' जैसे अपमानजनक संज्ञा दिए गए माड़ में अब अंधकार छंटता नजर आ रहा है। पहले से यहां के भोले-भाले एवं कर्मशील जनता पर जबरन कई प्रकार के नियम-कायदे लादकर उन्हें शोषित और अपमानित किया जाता रहा है। ब्रिटिश काल से लेकर वर्तमान के तथाकथित प्रजातंत्रात्मक शासन व्यवस्था तक उनका अधिक से अधिक शोषण किए जाने के उद्देश्य से न जाने, कितने रूपए इनके सुधार के नाम से हड़प लिए गए। परन्तु आज यह माड़ 'अबूझमाड़' नहीं, बल्कि 'सबूझमाड़' हो गया है। अब यहां शोषण और जबरन नियम लागू नहीं हो सकते। माड़ के लोग समय-समय पर अपने 'सबूझ' होने का प्रमाण शासन एवं विश्व को देते रहे हैं। इसी तारतन्य में सरकार द्वारा संसद के पटल पर रखे गए पोटो विधेयक के विरोध में पूरा माड़ गूंज उठा। जगह-जगह यहां की जनता द्वारा रैली, जुलूस निकाल कर इस काले कानून के विरोध में नारे लगाए गए। आमसभाएं आयोजित की गईं तथा इस कानून पर विशद चर्चा एवं उसके दुरुपयोग से होने वाले संभावित *(शेष पृष्ठ 36 पर....)*

फील्ड रिपोर्ट

पुलिसिया दमन और काले कानूनों को धता बताते हुए कदम बढ़ाती गड़चिरोली की क्रान्तिकारी जनता

गड़चिरोली जिले के आन्दोलन को, वहां पुलिस द्वारा अमल पाशविक दमन को, और जनता के प्रतिरोध को समझने से पहले गड़चिरोली के संबंध में कुछ ब्यौरा जानना जरूरी है। गड़चिरोली जिला 1982 में चान्दा (चन्द्रपुर) से अलग होकर एक पृथक जिले के रूप में अस्तित्व में आया। विदर्भ के कुल 11 जिलों (गड़चिरोली, चन्द्रपुर, गोंदिया, भण्डारा, नागपुर, वर्धा, यवयमाल, अमरावती, अकोला, बुलढ़ाना और वासिम) में से गड़चिरोली भी एक है जो महाराष्ट्र के दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। 2001 की जनगणना के मुताबिक जिले की कुल आबादी 9,69,960 है, जिसका लगभग आधा हिस्सा, यानी 4,63,000 आदिवासियों की आबादी है। इसीलिए इसे आदिवासी बहुल जिला कहा जाता है। जिले का क्षेत्रफल 15,435 वर्ग किलोमीटर है। यह जिला कुल 12 तहसीलों में बंटा हुआ है – सिरोंचा, अहेरी, भामरागढ़, एटापल्ली, चामोर्षी, गोट, मुच्चेरा, गड़चिरोली, आरमूरी, वडसा, धनोरा, कोडगुल और कोरची। इनमें से गड़चिरोली, चामोर्षी, वडसा और आरमूरी को छोड़ बाकी 8 तहसीलों को सरकार ने आदिवासी तहसील घोषित किया। जिले के कुल वन क्षेत्र का 80 प्रतिशत तथा जिले के कुल 1,671 गांवों में से 1,449 गांव इन्हीं 8 तहसीलों में मौजूद हैं। इनमें से सिर्फ आरमूरी तहसील को छोड़ बाकी सभी तहसीलों तथा जिले के करीब तीन-चौथाई गांवों से क्रान्तिकारी आन्दोलन का सम्पर्क है। यह है संक्षेप में गड़चिरोली जिले का ब्यौरा।

1980 में इस जिले में क्रान्तिकारी आन्दोलन की शुरूआत हुई जोकि 1990 तक उपरोक्त सभी तहसीलों में फैल गया। इस क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचलने के लिए सरकार ने पहली बार 1991 में 'स्पेशल एक्शन प्लान' अपनाई। बाद में 1991-94 के बीच पुलिस ने जनता के खिलाफ बड़े पैमाने पर दमनचक्र चलाया था। उस समय आदिवासी किसानों के विरुद्ध 'टाडा' कानून का व्यापक स्तर पर प्रयोग किया गया था। गड़चिरोली और उसके निकटवर्ती जिले चन्द्रपुर और भण्डारा से पुलिस ने 5 हजार से ज्यादा आदिवासियों को टाडा के तहत गिरफ्तार कर रिकॉर्ड कायम किया। देश में ऐसा कोई दूसरा क्षेत्र ही नहीं था, जहां पुलिस ने आदिवासियों के खिलाफ टाडा का इतना व्यापक प्रयोग किया हो। आज भी, मुख्य रूप से गड़चिरोली जिले के सैकड़ों किसान टाडा के तहत जेलों में सड़ रहे हैं और केसों का चक्कर काट रहे हैं। भले ही 'टाडा' को वापिस लिया गया हो, टाडा के तहत दर्ज मामले तो आज भी चल रहे हैं। अब गड़चिरोली जिले की जनता को 'पोटा' के तहत भी गिरफ्तार करना शुरू हो चुका है जो 'टाडा' से कई गुना ज्यादा खतरनाक है।

गड़चिरोली जिले की जनता को पीढ़ियों पुरानी संघर्षशील विरासत है। इनकी विरासत की महानता यह है कि इन्होंने आजादी और मुक्ति के लिए तथा जनतंत्र के लिए लड़कर अपने अनमोल प्राणों को न्यौछावर किया है। एक समय ब्रितानी साम्राज्यवाद के खिलाफ देशभक्तिपूर्ण एवं जनतांत्रिक सशस्त्र संघर्ष करने का समृद्ध इतिहास है इस जिले की जनता का। 1919 में अंग्रेजों द्वारा लाया गया रौलत कानून भी इनके विद्रोह को न रोक सका था। गड़चिरोली की जनता ने शहीद सेडिमेक बाबूराव के नेतृत्व में जंगल पर हक पाने के लिए अंग्रेजों की आधुनिक सेना के खिलाफ लोहा लिया था। तथाकथित आजादी के 55 साल बाद भी यहां की जनता जंगल पर अधिकार के लिए तथा मूलभूत समस्याओं के समाधान के लिए आज भी लड़ रही है। हालांकि इनके संघर्ष की दिशा और मकसद में गुणात्मक बदलाव तभी आया जब 1980 में यहां पर क्रान्तिकारी आन्दोलन की शुरूआत हुई। तभी से वे जमीन के लिए, शोषण से मुक्ति के लिए तथा राजसत्ता हासिल करने के लिए दीर्घकालिक जनयुद्ध की दिशा में लड़ते चले आ रहे हैं।

जनता की समस्याएं – लुटेरी सरकार की नीतियां

जमीन की समस्या : आदिवासियों की मुख्य समस्या जमीन की ही है। जंगल पर निर्भर करके जीने वाले आदिवासियों को जंगल पर कोई अधिकार नहीं है। वनोपजों को इकट्ठा करते, अधभूखे और अधनंगे जीवन यापन करते रहते हैं। इस असह्य जिन्दगी से खुद को बाहर लाने के लिए जंगल काटकर खेती करने की कोशिश करने से सरकारी अधिकारी उन्हें नहीं छोड़ते। उन पर गलत मामले दर्ज करके, जुर्माने के नाम पर मोटी रकम ऐंठ लेते हैं। जेल भी भेजते हैं। इसके बावजूद किसान जंगल काटने को मजबूर हैं क्योंकि पेट जो पालना है। इस तरह जंगल काटकर काश्त में लाई जाने वाली जमीनों को स्थानीय तौर पर 'जबरन जोत' कहा जाता है।

महाराष्ट्र में कुल 50 लाख किसान जबरन जोत जमीनों पर निर्भर करते हुए जी रहे हैं। इनके कब्जे में सरकार के आंकड़ों के मुताबिक ही 2½ करोड़ एकड़ जमीन है। इन 50 लाख किसानों में से ज्यादातर विदर्भ के भण्डारा, गोंदिया, यवतमाल, चन्द्रपुर, गड़चिरोली, अमरावती और बुलढ़ाना के साथ-साथ, ठाणे, नन्दुरबार, नासिक और धुले जिलों के हैं। ये सभी आदिवासी बहुल जिले हैं। इन जिलों के किसानों को करीब 40 सालों से सरकार पट्टे नहीं दे रही है। हालांकि महाराष्ट्र सरकार ने 25 वर्ष पहले ही यह कानून बनाया कि जो किसान 1978 से पहले से जबरन जोत पर कब्जा किए हुए हैं उन्हें पांच एकड़ जमीन का पट्टा दिया जाए। लेकिन इस पर अमल का कोई कदम नहीं उठाया गया। लेकिन 'एक साल' पट्टा जैसे अस्थाई बन्दोबस्त करते हुए पटवारी किसानों से 1,000 रुपए प्रति एकड़ के हिसाब से पैसे वसूल रहे हैं। एक अनुमान के मुताबिक जबरन जोत किसान गड़चिरोली जिले में 50 हजार और चन्द्रपुर जिले में 35 हजार होंगे। चूंकि जमीन की समस्या इतनी गंभीर है, इसीलिए किसान सरकारी दमन और टाडा जैसे काले कानूनों की परवाह नहीं करते हुए जमीन जोत रहे हैं। गड़चिरोली जिले में जमीन के सम्बन्ध में पीपुल्सवार पार्टी द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण में यह पाया गया कि सिर्फ 15 गांवों में 1,000 एकड़ जबरन जोत की खेती की जा रही है। वन विभाग के अधिकारी चाहे कितनी बार हमले

करें और फसलों को चाहे कितना नष्ट करें, फिर भी किसान हिम्मत न हारते हुए उनके खिलाफ दृढ़ता से लड़ रहे हैं। फसलें ले रहे हैं। गड़चिरोली की जनता ने फिर एक बार साबित किया कि संघर्षरत जनता को काले कानूनों से नहीं डराया जा सकता।

सिंचाई की समस्या : भारत सरकार बड़े गर्व से घोषणा करती है कि जहां देश में 1947 के पहले सिर्फ 300 बांध ही हुआ करते थे, वहीं आज उनकी संख्या 4,300 तक बढ़ गई। लेकिन कड़वी सचाई यह है कि आज भी देश के ज्यादातर आदिवासी बहुल इलाकों में खेती बारिश के भरोसे पर ही चलती है। एक और कड़वी सचाई यह भी है कि देश के चाहे किसी भी हिस्से में हो, अब तक निर्मित/अभी निर्माणाधीन भारी परियोजनाओं की वजह से मुख्य रूप से इन्हीं आदिवासियों को अपनी खेत जमीनों, आवासों और जंगल से वंचित होकर विस्थापित होना पड़ा है/पड़ रहा है। एक अनुमान के मुताबिक इस तरह देश में पिछले 50 सालों से भारी परियोजनाओं के कारण विस्थापित होने वाले लोगों की संख्या करीब 5½ करोड़ तक होगी। लेकिन सरकारी दस्तावेजों में यह आंकड़ा दर्ज नहीं है। इस संख्या का 60 प्रतिशत (3 करोड़ 36 लाख) आदिवासियों और दलितों का है। इस तरह बांधों की खातिर अपनी जिन्दगी से कीमत चुकाने वाले आदिवासियों की खेत-जमीनों के लिए सिंचाई सुविधाएं बनाने में सरकार बुरी तरह विफल हो गई।

गड़चिरोली जिले को ही ले लें तो, यहां पर पिछले 21 सालों से एक भी सिंचाई परियोजना पूरी नहीं की गई। आज भी 16 परियोजनाओं के प्रस्ताव सरकार के पास लम्बित हैं। हालांकि तुलतुली, कारवप्पा, चेन्ना जैसी परियोजनाओं को सरकार की स्वीकृति है, पर धन की कमी का कारण बताकर सरकार ने उन्हें ठण्डे बस्ते में डाल रखा है। लेकिन पश्चिम महाराष्ट्र में 1996 में स्थापित कृष्ण और कावेरी परियोजना के अन्तर्गत 7 भारी, 14 मध्यम और 288 छोटी परियोजनाओं को पूरा करने में सरकार को कोई 'धन की कमी' की समस्या पेश नहीं आई। इस तरह, सरकार एक ओर विदर्भ के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है, दूसरी तरफ आदिवासियों की मुसीबतों पर घड़ियली आंसू बहा रही है। मिसाल के तौर पर भामरागढ़ तहसील के इन आंकड़ों पर गौर करें, तो भामरागढ़ तहसील की कुल 20 ग्राम पंचायतों के तहत 126 गांव हैं। इन गांवों के किसानों के कब्जे में सरकारी आंकड़ों के अनुसार कुल 19,832 एकड़ खेतीयोग्य जमीन है। लेकिन इनमें सिर्फ 982 एकड़, यानी 5 फीसदी जमीन को ही सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है। बस्तर में भी, आज भी जबकि तथाकथित स्वाधीनता की 55वीं वर्षगांठ मनाई जा चुकी हो, सिंचाई सुविधा से युक्त जमीन का प्रतिशत 2 से नहीं बढ़ा।

खेत-जमीनों को सिंचाई सुविधा उपलब्ध करवाने के नाम पर लुटेरी सरकार द्वारा साम्राज्यवादी मुद्रा संगठनों से कर्ज लाए जाने की बात को भी दण्डकारण्य की जनता अच्छी तरह समझ रही है। जनता इस सचाई को समझकर ही कि महाराष्ट्र सरकार विश्व बैंक से 3,547 करोड़ का कर्ज ला रही है, इन लचर योजनाओं को नकार रही है। जैसा कि जनता सड़क निर्माण का विरोध करती चली आ रही थी, वैसे ही अब इन 'उधारी' योजनाओं का भी विरोध कर रही है। वह अपनी ही श्रमशक्ति पर, आपसी सहकार पर निर्भर होकर अपने लिए जरूरी सुविधाएं खुद ही बना रही है। पिछले 5 सालों में पूरे दण्डकारण्य में जनता ने इस तरीके से 150 से ज्यादा छोटे-बड़े तालाब बना लिए। इनमें से आधा से ज्यादा खेती के लिए पानी दे रहे हैं, और बाकी मवेशियों के पीने के लिए पानी और मछली पालन का काम आ रहे हैं। लेकिन गौरतलब बात यह है कि जनता ने सरकार द्वारा खड़ी की जाने वाली रुकावटों का मुकाबला करते हुए और पुलिस के साथ लड़ते हुए ही यह सब हासिल किया।

सड़क, बिजली, स्कूल एवं अस्पताल : गड़चिरोली जिले में सड़क निर्माण बड़ी तेजी से हो रहा है। जिले के अत्यधिक गांवों में सड़क की सुविधा है। जनता के अन्य उपयोगी कामों के मुकाबले सरकार सड़कों के निर्माण पर ही करोड़ों धन खर्च कर रही है। क्यों सरकार ने महाराष्ट्र के कुल 35 जिलों में से सिर्फ गड़चिरोली को अत्यधिक प्राथमिकता देकर सड़कें बनामा शुरू किया? क्यों सरकार ने सिर्फ सड़क निर्माण पर ही उतना ज्यादा ध्यान दे रखा है, जबकि जनता रोजमर्रा की अनगिनत समस्याओं से परेशान है? जनता इसका विरोध कर रही है तो सरकार सशस्त्र बलों को क्यों तैनात कर दमनचक्र चला रही है?

इसकी दो वजहें हैं – फौरी तौर पर एक वजह यह कि जिले में मजबूत हो रहे क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचलने हेतु पुलिस बलों को बड़ी तेजी से जहां चाहे वहां पहुंचाना है तो सड़कों की जरूरत है। दूसरी वजह यह है कि इस तरह क्रान्तिकारी आन्दोलन को कुचलकर यहां की अपार खनिज एवं वन संपदाओं को लूटकर ले जाया जाए, जोकि उसकी दूरगामी योजना का हिस्सा भी है।

जबकि सभी को सड़कों की जरूरत तो रहती है, इसके बावजूद गड़चिरोली की जनता सड़कों का विरोध क्यों कर रही है? क्योंकि गड़चिरोली जिले में मौजूद 80 हजार करोड़ रुपए की खनिज सम्पत्ति पर साम्राज्यवादियों और दलाल पूंजीपतियों की नजर है। यदि यहां क्रान्तिकारी आन्दोलन मजबूत बनता है तो इन सम्पदाओं को लूटने के उनके सपने साकार नहीं हो सकते। यही वजह है कि सरकार ने इस जिले में सैकड़ों पुलिस वालों को तैनात किया ताकि यहां चल रहे क्रान्तिकारी आन्दोलन को जड़ से खत्म किया जाए। इन पुलिस बलों को जिले के एक सिरे से दूसरे सिरे तक तेजी से और सुकून से पहुंचाया जा सके, इसके लिए सरकार ज्यादा ध्यान देकर पक्की सड़कें बनवा रही है। सरकार का यह भी मानना है कि इन्हीं सड़कों के जरिए भविष्य में यहां की सम्पदाओं का निर्बाध दोहन किया जा सकेगा।

सड़कों के निर्माण के पीछे सरकार की साजिश क्या है, यह समझने के लिए यह जानना काफी होगा कि इनके निर्माण के पीछे कौन सी ताकतें हैं। भारत में गली-नुक्कड़ की सड़कों से लेकर एक्सप्रेस हाइवे तक हरेक सड़क पर यह दलाल सरकार जो खर्च कर रही है, उसका एक-एक पैसा विश्व बैंक, आइएमएफ, आदि साम्राज्यवादी वित्तीय संस्थाओं से ही मिल रहा है। अब जबकि भारत का स्वदेशी एवं विदेशी कर्ज 11,20,050 करोड़ से भी बढ़ चुका है और इस तरह, हरेक भारतवासी पर 11 हजार रुपए का कर्ज लदा हुआ है, ऐसे में और कर्ज उठाकर सड़कें बिछाना वास्तव में जनता के हित में कतई नहीं होगा। महाराष्ट्र सरकार ने सड़कों के विकास के लिए विश्व बैंक से 6,551 करोड़ रुपए कर्ज लिया। असली बात तो यह है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भारत सरकार पर दबाव डालकर अपने लिए जरूरी आधारभूत ढांचे

का निर्माण करवा रही हैं, जिसके परिणामस्वरूप तरह-तरह के नामों से 'सड़क योजनाएं' घोषित की जा रही हैं। देश में बनाए गए 695 बड़े बांधों से अभी तक लाखों आदिवासी विस्थापित हो चुके हैं। अबसे भूमण्डलीकरण के तहत प्रस्तावित भारी परियोजनाओं और भारी उद्योगों से अदिवासियों की तबाही अवश्यंभावी है। साम्राज्यवादियों और उनके दलालों को आदिवासी क्षेत्रों को छोड़कर और कोई ऐसा क्षेत्र ही नहीं मिल सकता जो प्राकृतिक संपदाओं – खदानों, खनिज भण्डारों, कीमती जंगलों से भरा पड़ा हो। यही होगा तो देश के अधिकतर आदिवासियों की जिन्दगी तबाह होना निश्चित है। इस सचाई को पहचान कर ही गड़चिरोली जनता सड़कों के निर्माण का विरोध कर रही है। सहज ही, क्रान्तिकारी इस जायज संघर्ष में जनता के साथ खड़े हुए हैं। सच यह रहा तो सरकार तथ्यों को तोड़-मरोड़कर कई झूठी दलीलें देते हुए दुष्प्रचार अभियान चला रही है।

विवादास्पद कम्पनी एनरॉन, जिसका पिछले साल दिवालिया निकल चुका था, की दाभोल बिजली परियोजना महाराष्ट्र में ही है। दूसरे वितरकों के मुकाबले इसे ज्यादा दर से भुगतान करने के महाराष्ट्र सरकार द्वारा किए गए शर्मनाक समझौते के परिणामस्वरूप उसे 2,000 करोड़ रुपए का नुकसान हुआ। कुछ अधिकारियों का अनुमान यह है कि यह महज प्रत्यक्ष रूप से दी गई रियायत के चलते हुआ है, इस समझौते से सरकार को कुल नुकसान कोई 60,000 रुपए का हो चुका है। इस घाटे से उबरने के लिए सरकार जनता से जबरन वसूली कर रही है। पिछले पांच सालों में महाराष्ट्र में बिजली की दरें तिगुनी हो गईं। पहले से ही राज्य के किसानों पर 1,300 करोड़ का बकाया है, जिसका भुगतान करने के लिए उन्हें कई पापड़ बेलने पड़ रहे हैं। इससे तंग आकर कुछ किसान संगठनों ने जन विरोधी सरकार को करों, कर्जों, बिजली के बिलों का भुगतान बन्द करने का आह्वान किया। गड़चिरोली में भी क्रान्तिकारी जन संगठनों ने और क्रान्तिकारी जन कमेटियों ने जनता का आह्वान किया कि लुटेरी सरकार को किसी भी किस्म के कर्ज, कर या बिजली का बिल मत चुकाएं।

जन कल्याण योजनाएं : महाराष्ट्र सरकार की माली हालत भी बाकी सभी सरकारों की ही तरह गहरे संकट से ग्रस्त है। उस पर 70,528 करोड़ का कर्ज लदा हुआ है। राज्य के विकास की दर के मुकाबले कर्जों का अनुपात पिछले छह सालों में 11.6 फीसदी से 18.93 फीसदी तक बढ़ गया। जन स्वास्थ्य पर सरकार अपनी आय का सिर्फ 1 प्रतिशत ही खर्च करते हुए जनता को निजी अस्पतालों में जाने पर मजबूर कर रही है। यह सब 'ढांचागत समायोजन कार्यक्रम' का हिस्सा ही है। राज्य सरकार शिक्षा पर भी महज 2.8 प्रतिशत ही खर्च कर रही है। इसको भी बहुत ज्यादा ठहराते हुए अंबानी और बिड़ला की रिपोर्ट ने इसे 1.8 प्रतिशत कर देने की सिफारिश की। गड़चिरोली में भी अधिकारी पैसों की कमी का कारण बताकर नाम मात्र के लिए चल रहे विकास कार्यक्रमों से भी हाथ झाड़ रहे हैं।

'गड़चिरोली जिला योजना और विकास संस्था' ने वर्ष 2001-02 में विकास के लिए 66 करोड़ 40 लाख रुपए की मांग की। नक्सल प्रभावित क्षेत्र के नाते 100 करोड़ की अतिरिक्त राशि की भी मांग की। लेकिन कर्मचारियों को वेतन देने में ही असमर्थ सरकार ने इतना धन देने से इनकार करते हुए 37 करोड़ रुपए आवंटित किए। महाराष्ट्र में अब तक आदिवासी उप-योजना के नाम पर, कागजों में ही सही, कुल 435 किस्म की अलग-अलग योजनाएं चलती थीं। लेकिन खजाना खाली होने का कारण बताकर सरकार ने 296 योजनाओं को वापिस लिया। बाकी 139 योजनाओं पर आवंटनों में दो-तिहाई की कटौती की। इन कदमों को आदिवासी जनता, छात्र-कर्मचारी, बेरोजगार युवक-युवतियां देखकर सोच रहे हैं। इस तरह की कटौतियों को विभिन्न राजनीतिक पार्टियां और कुछेक स्वयंसेवी संगठन चुनौती दे रहे हैं। कर्जों का बोझ, पैदावार में गिरावट, पानी की कीमतों में दोगुना बढ़ोत्तरी, बिजली दरों में तिगुना वृद्धि, आदि कारणों से पिछले एक साल में महाराष्ट्र में 36 से ज्यादा किसानों ने खुदकुशी कर ली। असल में ये सारी खुदकुशियां सरकारी कत्लेआम ही हैं।

'टाडा' को भुला देने के अन्दाज में 'पोटा' पर अमल शुरू

देश भर में सभी तबकों की जनता, जनवादपसन्द लोगों और विभिन्न विपक्षी पार्टियों के विरोध के बावजूद 24 पार्टियों की राजग सरकार ने 'पोटा' कानून पारित किया। इसके तहत देश के अनेक संगठनों और पार्टियों के साथ-साथ भाकपा (मा-ले) [पीपुल्सवार] को भी केन्द्र सरकार ने प्रतिबन्धित किया। इस कानून के तहत कश्मीर के बाद उन्हीं राज्यों में ज्यादा गिरफ्तारियां हो रही हैं जहां पर पीपुल्सवार पार्टी की अगुवाई में क्रान्तिकारी आन्दोलन चल रहा है। इनमें से महाराष्ट्र राज्य भी एक है। इस कानून को लाते समय बहुतेरे जनवादपसन्द लोगों ने साफ तौर पर बताया कि इसके तहत न सिर्फ कथित आतंकवादियों को गिरफ्तार किया जाएगा, बल्कि आम लोगों को, राजनीतिक विश्वास में भिन्नता रखने वालों और सरकार के आलोचकों को भी गिरफ्तार किए जाने का खतरा रहता है। जून 2002 में गड़चिरोली पुलिस ने तेन्दुपत्ता व्यापारियों और कुछ दूसरे लोगों को गिरफ्तार कर 'पोटा' के दुरुपयोग का श्रीगणेश किया। शेक खलीम बंदेरिली, कमलाकर बल्लालवार, ख्वाजा मोइनोद्दीन, ए.ए. नईम, मुहम्मद अलीमोद्दीन नामक तेन्दुपत्ता व्यापरियों को नक्सलवादियों को चंदा देने के आरोप में तथा कुछ अन्य लोगों को अन्य आरोपों में गिरफ्तार किया।

जब से 'पोटा' कानून बना, तभी से पुलिस ने जनता को डराना-धमकाना शुरू किया। गड़चिरोली एस.पी. विनीत अग्रवाल ने यह भविष्यवाणी की कि आगामी तीन वर्षों के अन्दर, यानी 2005 तक नक्सलवादी आन्दोलन अपने आप खत्म हो जाएगा। राज्य के पुलिस मंत्री माणिकराव ठाकरे ने तो यह कहा है कि उनकी सरकार ने नक्सल प्रभावित इलाकों के विकास के लिए केन्द्र से 850 करोड़ रुपए की मांग की थी, पर यह प्रस्ताव पिछले दो सालों से केन्द्र के पास लम्बित है। विशेषकर विदर्भ क्षेत्र में आने वाले इन इलाकों के विकास के लिए प्रभाकरराव मामूलकर के नेतृत्व में एक विशेष एक्शन कमेटी भी गठित की गई। इसका मतलब यह है कि सरकार एक ओर पाशविक पुलिस बलों के सहारे दमनकारी कार्रवाइयां करते हुए ही, दूसरी ओर काले कानूनों का मनमाना प्रयोग करते हुए जनता का दमन करने की कोशिश कर रही है। पिछले साल गड़चिरोली जिले में पुलिस वालों ने लगभग 20 हजार किसानों की तसवीरें अवैध ढंग से खिंचवाईं। इसके पीछे पुलिस की साजिश शायद यही होगी कि कभी भी और किसी को भी गोली मारकर मुठभेड़ की कहानी गढ़ने या अवैध गिरफ्तारी करके

'पोटा' के तहत जेल में कैद करने के लिए सबूत के तौर पर इन तस्वीरों को पेश किया जा सकता है। हालांकि गड़चिरोली पुलिस को झूठी मुठभेड़ों में आम जनता को और निहत्थे जन संगठन कार्यकर्ताओं को गोली मारकर कत्ल कर देने का काफी लम्बा इतिहास है।

आज सरकार 'पोटा' के तहत क्रान्तिकारी आन्दोलन के साथ सम्बन्ध होने का बहाना बताकर आम जनता को भले ही गिरफ्तार कर रही हो, लेकिन यह सिलसिला यहीं तक सीमित नहीं होगा। अपनी समस्याओं पर हड़ताल करने वाले कर्मचारियों या मजदूरों को, सरकारी नीतियों की आलोचना करते हुए लिखने वाले लेखकों या पत्रकारों को, अल्पसंख्यक संगठनों के कार्यकर्ताओं को – किसी को भी यह सरकार 'पोटा' के तहत गिरफ्तार करवा सकती है, चाहे क्रान्तिकारी आन्दोलन के साथ उनका कोई सम्बन्ध ही न हो। इसके पहले टाडा के तहत भी यही हुआ था। टाडा के तहत सबसे ज्यादा गिरफ्तारियां गुजरात में हुई थीं, जहां कोई भी 'आतंकवादी' आन्दोलन नहीं था। 'पोटा' कानून टाडा से भी सख्त है और इसे सोच-समझकर बनाया गया है। ऐसे में इसकी कल्पना करना मुश्किल नहीं होगा कि इसकी आड़ में सरकारें कितना बेलगाम दमनचक्र चला सकती हैं। गड़चिरोली जिले में हुई इन गिरफ्तारियों को खतरे का संकेत माना जा सकता है।

लेकिन इतिहास में ऐसा एक भी उदाहरण नहीं है कि लुटेरे शासकों ने काले कानूनों के सहारे आन्दोलनों का जड़ों से नाश किया हो। भारत की जनता को अतीत में टाडा कानून को पराजित करने का महान इतिहास है। अब इस 'पोटा' को भी इतिहास के कूड़े के ढेर में जरूर फेंक देगी। देश भर में ऐसी एक अनिवार्य स्थिति पेश आ रही है कि 'पोटा' जैसे काले कानूनों के खिलाफ विभिन्न तबकों की जनता एकजुट होकर लड़े। आशा करेंगे कि गड़चिरोली जनता भी अपने पुराने अनुभवों का जायजा लेकर, अपनी पीढ़ियों पुरानी संघर्षमय परम्पराओं को ऊंचा रखते हुए क्रान्तिकारी आन्दोलन को और ज्यादा मजबूती से आगे बढ़ाएगी। और यह भी कि 'पोटा' जैसे काले कानूनों के खिलाफ लड़कर उन्हें मात देगी तथा कई और कामयाबियां हासिल करते हुए जनता की राजसत्ता कायम करेगी। ❑

वक्तव्य

बातचीत के मुद्दे पर छत्तीसगढ़ सरकार की दोगली नीति का विरोध करें!

हमारी पार्टी के साथ बातचीत के मुद्दे पर सरकार के द्वारा पेश किए गए प्रस्ताव पर पार्टी की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी ने हाल ही में बयान जारी किया था। इस बयान में हमारी एसजेडसी ने स्पष्ट किया कि वार्ता के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित किए जाने पर हमारी पार्टी सशर्त बातचीत के लिए तैयार है। हमने कहा कि हमारी पार्टी को एवं जन आन्दोलनों को कुचलने के लिए केन्द्र सरकार के नेतृत्व में गठित जे.ए.सी. से सरकार को बाहर आना होगा तथा वह संघर्ष इलाकों में तैनात अतिरिक्त बलों को हटाकर, गश्त अभियानों को बन्द करके, जनता के जनवादी अधिकारों (जैसे सभा, सम्मेलन, जुलूस, धरना आदि) को मानकर, जेलों में बन्द आदिवासियों को रिहा करके एक शान्तिपूर्ण तथा वार्ता के लिए अनुकूल वातावरण निर्मित करके बातचीत के मुद्दे पर अपनी ईमानदारी को पहले साबित करे।

हमारे इस बयान पर सरकार की ओर से विरोधाभासी बयान जारी किए गए। जहां गृहमंत्री नन्दकुमार पटेल ने सशर्त वार्ता से इनकार किया, वहीं मुख्यमंत्री ने सशर्त बातचीत के लिए तैयार कहा। हालांकि शर्तों के अमल के बारे में कुछ नहीं कहा। इन विरोधाबासी बयानों से एक बात पुनः साफ हो गई कि सरकार हमारी पार्टी के साथ शांतिवार्ता के मुद्दे पर ईमानदार नहीं है। क्योंकि हमने कई बार हमारी स्थिति को स्पष्ट किया कि हम वार्ता के लिए तैयार हैं, बशर्ते सरकार जनवादी माहौल निर्मित करें। लेकिन सरकार की ओर से अखबारों में अनर्गल बयानबाजी के सिवाए इस दिशा में कोई सार्थक कदम नहीं उठाया गया।

कुल मिलाकर 'नक्सलियों के साथ बातचीत' एक प्रहसन बन गई है। अविभाजित मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह से लेकर जोगी तक शांतिवार्ता की रट लगा रहे हैं, लेकिन हमारी शर्तों पर मौन धारण किए हुए हैं। दूसरी ओर सरकार अपने सशस्त्र बलों को मजबूत कर रही है। नई-नई बटालियनों की भर्ती कर रही है। विशेष प्रशिक्षण दिलवा रही है। 'इन्सास' जैसे नए एवं अत्याधुनिक रायफलें, सैटेलाइट फोन, माइनप्रूफ वाहन, आदि मंगवा रही है। 1700 करोड़ रुपयों की नक्सली उन्मूलन योजना बनाकर केन्द्र की मंजूरी का इन्तजार कर रही है। झूठे विकास कार्यक्रमों पर अमल कर रही है। नित-नए हथकण्डे अपनाकर हमारे उन्मूलन का प्रयास कर रही है। इन सभी चीजों से स्पष्ट है कि सरकार शान्तिवार्ता के मुद्दे पर बेईमान है। वह केवल संघर्षरत लोगों को भटकाने का कुटिल प्रयास कर रही है। वार्ता की आड़ में हमारे खिलाफ एक बड़े हमले की तैयारी करना चाहती है। जनता के बीच में हमें 'शान्तिविरोधी', 'हिंसावादी' करार देना चाहती है।

हमारी पार्टी पहले से ही शांतिवार्ता पर अपनी स्थिति स्पष्ट करती आ रही है। हम फिर एक बार स्पष्ट करना चाहते हैं कि अब भी हमारी पार्टी सरकार के साथ जन समस्याओं को लेकर बातचीत के लिए तैयार है, बशर्ते पहले सरकार बातचीत के लिए अनुकूल माहौल बनाकर अपनी ईमानदारी साबित करे। इस सम्बन्ध में हमने जो मांगें उठाईं, उन पर अपनी स्थिति स्पष्ट करे। हमारे दमन के लिए सारे हथकण्डे बराबर अपनाते हुए ही 'नक्सलियों के साथ बातचीत के लिए हम तैयार' की रट लगाना दोगलेपन और धोखेबाजी के अलावा कुछ भी नहीं है। हम इस मौके पर दण्डकारण्य एवं छत्तीसगढ़ के जनवाद-पसन्द एवं अमन-पसन्द लोगों से अपील करते हैं कि हमारे साथ बातचीत के मुद्दे पर सरकार की दोगली नीति का विरोध करें तथा जन समस्याओं को लेकर जारी हमारे जायज संघर्षों का समर्थन करें।

(कोसा)
सचिव
दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

09-10-2002 **भाकपा (मा-ले) [पीपुल्स वार]**

आन्ध्रप्रदेश में 'शान्ति वार्ता' भंग होने के लिए नाइडू सरकार जिम्मेदार !

आन्ध्रप्रदेश में तेलुगुदेशम सरकार और पीपुल्सवार पार्टी के बीच 'शान्ति वार्ता' जून में शुरू हो चुकी थी, जोकि जुलाई तक बिना किसी प्रगति के खत्म भी हो गई। भाकपा (मा-ले) [पीपुल्सवार] पार्टी की ओर से प्रतिनिधित्व करते हुए कॉमरेड वरवरराव (क्रान्तिकारी लेखक संघ के प्रमुख) और कॉमरेड गदर (जन नाट्य मंडली) ने जून में तीन दफा चली बातचीत में भाग लिया। लगातार हो रही मुठभेड़ों के बीच ही उन्होंने अपनी भूमिका निभाई। आन्ध्रप्रदेश में नागरिक अधिकार कार्यकर्ता पुरुषोत्तम और आज़म अली की जघन्य हत्या के बाद सरकारी हत्याओं का सिलसिला चल ही रहा है। आम जनता को भी आतंकित करने के इरादे से साम्राज्यवादियों का पालतू कुत्ता चन्द्रबाबू नाइडू और कट्टर सामंती प्रतिनिधि पुलिस महानिदेशक पेरवारम रामुलु आए दिन नए-नए हथकण्डे अपनाते चले आ रहे हैं। इस असफल 'बातचीत' के दौरान उन्होंने यहां तक कि मामूली गुण्डों और चोरों को भी झूठी मुठभेड़ों में मारकर राज्य में जनतंत्र की धज्जियां उड़ाईं। कई झूठी मुठभेडों में क्रान्तिकारियों की हत्या करके 'शान्ति वार्ता' के प्रति सरकार ने अपनी बेईमानदारी का नंगा प्रदर्शन किया। जबकि 20 जुलाई को पार्टी के नेताओं और सरकार के बीच सीधी बातचीत प्रस्तावित थी, सरकार ने 2 जुलाई को नेरेल्ला में एक मुठभेड़ में कॉमरेड पद्मा समेत चार क्रान्तिकारियों की हत्या करके पार्टी को मजबूर कर दिया कि वह इस 'शान्ति वार्ता' से अपना हाथ खींच ले।

'शान्ति वार्ता' पर पार्टी का दृष्टिकोण

सिर्फ आन्ध्रप्रदेश में नहीं, देश भर में और दुनिया भर में शासक वर्गों और उनके आका साम्राज्यवादियों ने संघर्षकारियों के साथ बातचीत का भी एक तरीका अपनाया रखा है ताकि उनमें फूट डाली जा सके या उन्हें कमजोर कर दिया जा सके, साथ-साथ जनता को दिग्भ्रमित किया जा सके। दिन-प्रतिदिन गहराते साम्राज्यवादी संकट और बढ़ते क्रान्तिकारी माहौल के चलते उन्होंने यह तरीका अपनाया हुआ है ताकि अस्थाई तौर पर ही सही, इस माहौल का सामना किया जा सके। आन्ध्र सरकार ने भी 86 करोड़ बजट घाटे से और करीब विश्व बैंक से 45 हजार करोड़ के कर्ज से लोगों का जीना दूभर कर रखा है। विश्व बैंक के आदेशों का पालन करते हुए चन्द्रबाबू ने कई जन विरोधी नीतियां लागू की हैं। इसके चलते आन्ध्र के सभी तबकों के लोगों में जबर्दस्त असन्तोष बढ़ा है। दूसरी ओर करीब पिछले तीन दशकों से आन्ध्र में क्रान्तिकारी जनयुद्ध, कई उतार-चढ़ावों के बावजूद, तेजी से आगे बढ़ रहा है। इस जनयुद्ध को कुचलने के लिए शासक वर्गों ने अमानवीय दमनचक्र चलाकर अब तक हजारों लोगों की हत्या की और लाखों जनता को गिरफ्तार किया और जेलों में डाल दिया। एक तरफ दमनचक्र चलाते हुए सरकार ने पार्टी के खिलाफ जहरीले प्रचार मुहिम भी छेड़ दी। ''पीपुल्सवार पार्टी को जन समर्थन नहीं है'', ''पीपुल्सवार पार्टी बेवकूफ हिंसा कर रही है'', ''पार्टी का कोई सिद्धान्त नहीं है, कोई विचारधारा नहीं है'' आदि टिप्पणियां करते हुए अखबारों, रेडियो, टीवी आदि प्रसार माध्यमों का इस्तेमाल करते हुए व्यापक दुष्प्रचार अभियान चलाया। लेकिन इन दमनकारी कदमों से और निन्दापूर्ण दुष्प्रचार से जनयुद्ध खत्म नहीं हुआ, बल्कि वह हार-जीत-हार के द्वन्द्वात्मक विकासक्रम से गुजरते हुए, अन्तिम जीत की ओर अग्रसर है। साम्राज्यवादियों द्वारा निर्देशित नीतियों को बेरोकटोक लागू करने तथा मनमाने शासन चलाकर राज्य को विश्व बैंक के हाथों गिरवी रखने के चन्द्रबाबू के सपनों में क्रान्तिकारी आन्दोलन खलल डाल रहा है। हालांकि इस स्थिति से निपटने के लिए उसने फौजी कार्रवाई को ही अहम माना है, फिर भी अपने को जनवादी के रूप में प्रस्तुत करने के लिए भी तथा फौजी कार्रवाई से वांछित फल न मिलने के कारण भी उसने 'शान्ति वार्ता' के नाम पर सचमुच एक नौटंकी ही खेली।

उधर, राज्य में जारी भयानक राजकीय हिंसा के चलते, लगातार हो रहे खून-खराबे को समाप्त करने के नाम पर कुछ जनवादपसन्द लोगों ने 'शान्ति वार्ता' की पहल की। आम जनता ने भी यही चाहा कि सरकार और पीपुल्सवार पार्टी के बीच 'शान्ति वार्ता' हो और मसलों को शान्तिपूर्ण ढंग से हल किया जाए। लोगों में बढ़ रही इस आकांक्षा की कद्र करते हुए पार्टी ने सीमित अवधि के लिए 'संघर्ष विराम' की घोषणा कर 'शान्ति वार्ता' की दिशा में पहलकदमी की। पार्टी ने यह भी तय किया कि इस 'शान्ति वार्ता' को भी क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए अनुकूल इस्तेमाल करके जनता में जनवादी चेतना बढ़ाने का प्रयास किया जाए।

पार्टी ने फैसला किया कि सरकार के साथ बातचीत के दौरान हमें निम्नांकित मांगें उठानी चाहिए। अगर बातचीत नहीं भी होगी तो हमें इन मांगों को प्रचारित करना चाहिए।

1. भाकपा (मा-ले) [पीपुल्सवार] और अन्य क्रांतिकारी जन संगठनों पर से प्रतिबंध हटाओ; इन संगठनों के लिए जनवादी माहौल बनाओ ताकि जनता में खुले तौर पर काम कर सकें। जनवादी माहौल बनाकर जनता के अपनी मांगों पर आन्दोलन करने के अधिकार को सुनिश्चित करो।
2. विशेष रूप से क्रांतिकारी आन्दोलन का दमन करने के लिए गठित एसएसएफ बलों को भंग करो। सीआरपीएफ और अन्य अर्ध-सैनिक बलों को वापिस भेजो। सभी फर्जी मुठभेड़ों की न्यायिक जांच करो और इन अपराधों में दोषी पाए जाने वालों को सजा दो।
3. (i) आन्ध्र में जनवादी व्यक्तियों से भूमि आयोग की स्थापना करो ताकि भूमि सुधारों को लागू किया जा सके। जनता द्वारा छीन ली गई जमींदारों की जमीन को तथा किसानों द्वारा काश्त की जा रही सरकारी जमीन और जंगली जमीन को वैधता दो।

   (ii) साम्राज्यवाद और विश्व बैंक-प्रायोजित योजनाओं और परियोजनाओं को वापिस लो जिनका लक्ष्य आन्ध्र के अनमोल संसाधनों को लूटना है।

   (iii) सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों का निजीकरण बंद करो। मजदूरों की छंटनी बंद करो। कॉर्पोरेट कृषि को रद्द करो।
4. गांवों से सभी पुलिस कैंपों को वापिस लो। जनता के अपने संगठन बनाने में तथा अपने मामलों को सुलझाने में पुलिस बाधा न डाले।
5. (i) पृथक तेलंगाना के लिए आन्दोलन करने के जनता के अधिकार को मान्यता दो।

   (ii) आदिवासियों के लिए स्वायत्तता दो। धारा 1/70 लागू करो तथा आदिवासी क्षेत्रों में जमींदारों, पूंजीपतियों और गैर-आदिवासियों के प्रवासन को रोक दो।
6. निजी क्षेत्र में भी दलितों, आदिवासियों, पिछड़ी जातियों के लोगों और महिलाओं को नौकरियों में आरक्षण लागू करो।
7. शराबबंदी को लागू करो जिसे राज्य की महिलाओं ने अतीत में अपने संघर्ष के जरिए हासिल किया था।

'शान्ति वार्ता' को किसने भंग किया?

हालांकि सरकार खास तौर पर जनता के दबाव और 'पीस इनिशियेटिव कमेटी', 'कमेटी फर कनसर्नड सिटिज़ेन्स' जैसे जनवादी संगठनों की कोशिशों के चलते ही 'शान्ति वार्ता' के लिए तैयार हुई, लेकिन इसे भंग करने की हर संभव कोशिश की उसने। पहली बार संघर्ष विराम की घोषणा के बाद उसने तुपाकुलागूडेम में एक भारी हमला करके 8 क्रान्तिकारियों की हत्या कर दी। इसके बाद, एक के बाद एक 'मुठभेड़' करते हुए क्रान्तिकारियों की हत्याओं का सिलसिला लगातार जारी रखा। आखिर में 2 जुलाई को उत्तरी तेलंगाना की पार्टी नेता कॉमरेड पद्मा समेत चार क्रान्तिकारियों की हत्या करके पार्टी को इस ढोंगी 'शान्ति वार्ता' से बाहर जाने पर मजबूर कर दिया। हालांकि संघर्ष विराम की घोषणा सबसे पहले पार्टी ने ही की और पहलकदमी को अपने हाथों में लेते हुए यह भी स्पष्ट किया कि वह बिना शर्त बातचीत के लिए तैयार है। बशर्ते सबसे पहले मुठभेड़ हत्याओं को तथा पुलिस के खोजबीन अभियानों को बन्द करके बातचीत के लिए अनुकूल माहौल निर्मित किया जाए। लेकिन सरकार ने किसी भी मोड़ पर 'शान्ति वार्ता' के प्रति अपनी प्रतिबद्धता या ईमानदारी नहीं दिखाई।

इसके बावजूद पार्टी की ओर से मध्यस्थता करते हुए कॉमरेड वरवरराव और कॉमरेड गदर ने तीन दौर की बातचीत में स्पष्ट किया कि राज्य में जारी पुलिसिया दमन के चलते आम जनता आतंकित है। वह अपनी रोजमर्रा की समस्याओं पर भी आन्दोलन करने से, जैसे कि पीने के पानी की किल्लत, बिजली की कीमतों में बढ़ोत्तरी, सूखे की स्थिति जैसे मुद्दों पर भी जनता आन्दोलन करती है तो पुलिस उसका दमन कर रही है। लेकिन पार्टी के प्रतिनिधिमण्डल की बातों पर सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया और कोई कदम नहीं उठाया। यहां तक कि पार्टी के जिन नेताओं को 'शान्ति वार्ता' में भाग लेना था, उन पर घोषित नगदी इनाम भी वापिस लेने से सरकार ने मना कर दिया। इस तथाकथित बातचीत की प्रक्रिया के दौरान ही सरकार ने 6 मुठभेड़ें करके 12 लोगों की हत्या की।

उधर, पुलिस वालों ने पार्टी के विरोध में हमलों के साथ-साथ लगातार भड़काऊ बयान देते हुए अपने हिस्से का काम पूरा किया। एक ओर सरकार 'शान्ति वार्ता' के प्रति अपनी झूठी प्रतिबद्धता दोहराती रही, तो दूसरी ओर पुलिस अधिकारी बयान देते रहे : ''हम बराबर मुठभेड़ें करते रहेंगे, और नक्सलियों को मारते रहेंगे क्योंकि नक्सली बन्दूकें पकड़कर घूम रहे हैं।'' डीजीपी रामुलू ने तो पार्टी के खिलाफ जहर उगलते हुए कई बयान दिए। उसने बेसिरपैर के तर्क पेश करते हुए कहा कि पहले पीपुल्सवार अपने हथियार डाल दे और उसके बाद 'शान्ति वार्ता' हो। इसे सिर्फ पुलिस के उतावले क्रियाकलाप समझना गलत है, यह सरकार की सोची-समझी रणनीति का हिस्सा ही है कि उसने एक ओर पुलिस को दमन की खुली छूट देकर ही दूसरी ओर 'शान्ति वार्ता' का ढोंग रचा।

इन सारी परिस्थितियों ने पार्टी के सामने इस झूठी 'शान्ति वार्ता' से बाहर जाने के अलावा कोई रास्ता ही नहीं बचाया। आखिरकार 20 जुलाई को आन्ध्र राज्य सचिव कॉमरेड रामकृष्ण ने 'संघर्ष विराम' को वापिस लेते हुए घोषणा की कि अब हम अपना आत्मरक्षात्मक युद्ध जारी रखेंगे।

जनयुद्ध जारी

इस 'शान्ति वार्ता' की नौटंकी से सरकार जनता की नजरों में साफ तौर पर बेनकाब हो गई। 'पार्टी का कोई जन कार्यक्रम नहीं' कहकर शासक वर्गों द्वारा जो प्रचार किया जाता रहा था, अब जनता को मालूम हो गया कि यह प्रचार कितना गलत था। पार्टी की मांगें और कार्यक्रम से जनता भली भांति वाकिफ हो गई। जनता को यह भी स्पष्ट हो गया कि कौन सचमुच शांति चाहता है और शांति को भंग करने वाले कौन है। भीषण आतंक के माहौल के बावजूद, सभी तबकों के हजारों लोगों ने शहीद कॉमरेड पद्मा की अन्त्येष्टि में भाग लेकर उन लोगों का मुंह बन्द कर दिया, जो यह कहते नहीं थकते कि 'पीपुल्सवार पार्टी को जनाधार नहीं है', 'पीपुल्सवार मुख्यधारा में शामिल नहीं है', आदि-आदि।

उत्पीड़ित जनता क्रान्तिकारी युद्ध के जरिए ही राजसत्ता हासिल कर सकती है, इसके लिए कोई दूसरा रास्ता नहीं है। फिर भी हर युद्ध की तरह, क्रान्तिकारी युद्ध के दौरान भी दोनों पक्षों के बीच बातचीत की गुंजायश रहती है। युद्ध के अमुक मोडों पर दोनों पक्षों के सामने, अपने-अपने हितों के मद्देनजर ही सही, इस तरह की स्थिति पैदा होती है। लेकिन सचाई यह है शाश्वत शान्ति तभी सम्भव है जब इस धरती पर आदमी द्वारा आदमी को लूटने की व्यवस्था का नानोनिशान तक मिट जाए और सभी उत्पादन के साधनों पर मनुष्यों का सामूहिक अधिकार कायम हो जाए। बेशक यह तभी सम्भव है जब क्रान्तिकारी जनयुद्ध के जरिए साम्राज्यवाद, सामंतवाद और दलाल नौकरशाह पूंजीवाद का जड़ों से सफाया कर नव जनवादी क्रान्ति को सफल बनाया जाए और इसके बाद विश्व समाजवादी क्रान्ति को सफल बनाकर साम्यवाद की बुनियाद डाली जाए।

आखिर में, कॉ. वरवरराव की इन बातों पर गौर करें जो उन्होंने पार्टी के प्रतिनिधि के रूप में 'शान्ति वार्ता' में भाग लेते समय अखबारों वालों से बोलते हुए कीं : ''***सशस्त्र संघर्ष का मुद्दा एक राजनीतिक दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ मुद्दा है। उसका हल फिलहाल सरकार के साथ की जाने वाली 'शान्ति वार्ता' के जरिए नहीं हो सकता। यह दो नमूनों को लेकर दो प्रतिस्पर्धी शिविरों के बीच हो रहा संघर्ष है। इसमें से एक नमूना विश्व बैंक का है और दूसरा पीपुल्सवार का आत्मनिर्भरता वाला नमूना है जो वह एक क्रान्तिकारी पार्टी के नाते समूची जनता के सामने पेश कर रही है।***'' ❑

(.... पृष्ठ 30 का शेष)

खतरे की विस्तृत जानकारी जन प्रतिनिधियों द्वारा दी गई।

माड़ के कल-कल करती माड़िन नदी के दक्षिण में नॉआमेट्टा में पूर्व से नियोजित समय दिन के 12 बजे, आसपास के लगभग 25 गांवों से अपूर्व एकता का परिचय देते हुए, पुरुष, महिला, युवा, किशोर हाथों में बैनर, पोस्टर थामे उच्च सरई की वादियों को गुंजायमान करते हुए पोटो के विरोध में तीव्र स्वर में नारे लगाते हुए लगभग 1500 की संख्या में विशाल जन-समुदाय एकत्रित हुए।

इस विशाल जन समूह में चारों ओर से आने वाले (जुलूस की शक्ल में) लोग एकाकर होकर गांवों से होते हुए मुख्य मार्ग में आ गए। ''पोटो काला कानून है, इसका विरोध करो – प्रतिरोध करो'', ''भाजपा तेरी तानाशाही नहीं चलेगी – नहीं चलेगी'', ''पोटो जैसे काले कानून मुर्दाबाद – मुर्दाबाद'' के नारों से पूरा जंगल गूंज उठा। इस प्रकार नारे लगाते हुए पोटो की तीव्र आलोचना, विरोध करते हुए यह रैली कलमेट्टा में सभा के रूप में परिवर्तित हो गई।

विभिन्न गांवों से आए युवा, बुजुर्ग एवं महिला प्रतिनिधियों द्वारा शाम के पांच बजे तक पोटो के विरोध में अपना दृष्टिकोण व इससे होने वाले संभावित खतरों की जानकारी प्रकट की गई तथा भविष्य में इसका तीव्र विरोध करने एवं इसे मात देने का संकल्प लेकर सभा विसर्जित हुई। इस तरह माड़ के पिछड़े कहे जाने वाले आदिवासियों ने भी पोटो के खिलाफ जन आन्दोलन छेड़कर अपनी ऊंची राजनीतिक चेतना का सबूत पेश किया। ❑

(.... अन्तिम पृष्ठ का शेष)

बस्तर अभी तक एड्स से मुक्त ही रहा है। लेकिन पर्यटन को बढ़ावा देने का मतलब एड्स को न्यौतना ही होगा। थाईलैंड, सिंगापुर, हांगकांग, फिलिप्पीन्स जैसे दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के कड़वे अनुभव हमें यहीं सिखलाते हैं। पर्यटकों से भले ही उन देशों के सरकारी खाजानों में डॉलरों का जमाव हुआ हो, लेकिन सच्चाई यह है कि वे देश आज वेश्यावृत्ति, मादक पदार्थों की तस्करी (drug trafficking), भिक्षाटन, एड्स रोग, आदि से बुरी तरह पीड़ित हैं। हमारे देश के पूर्वत्तर क्षेत्र के राज्यों और गोआ को भी इस बात के प्रमाण के तौर पर लिया जा सकता है। आज छत्तीसगढ़ सरकार भी बस्तर को एक और थाईलैंड बनाने को आमादा हो गई है। खुद को आदिवासी बताने वाले मुख्यमंत्री अजीत जोगी यहां के आदिवासियों की उत्कृष्ट जन संस्कृति को दूषित करने की साजिशें रच रहे हैं। लेकिन लोगों को इस साजिश का पता न चले, इसलिए यह सारा काम वह 'बस्तर के विकास' के नाम पर ही कर रहा है।

परम्परागत रूप से हर साल बस्तर में दशहरा का पर्व मनाया जाता रहा है। लेकिन सरकार ने इस पर्व का व्यापारीकरण करने के लिए इसे 'बस्तर लोकोत्सव' का नाम देकर इसका दायरा बढ़ा दिया है। पिछले साल 'बस्तर लोकोत्सव' को मिली तथाकथित सफलता से खुश होकर, इस बार इसे राज्योत्सव का दर्जा देकर करोड़ों का धन खर्च किया जा रहा है। यहां आने वाले सैलानियों को अत्याधुनिक सुविधाएं मुहैया कराने के लिए सरकार ने युद्ध स्तर पर तैयारियां शुरू कर दी हैं। हम दावे के साथ कह सकते हैं कि मुट्ठी भर रईस सैलानियों के मामले में सरकार जितनी तत्परता दिखा रही है उसका सौवां हिस्सा भी यदि बस्तर की शोषित और उत्पीड़ित जनता की न्यूनतम सुविधाओं पर दिखाती तो आज यहां की स्थिति अलग होती। इसे समझने के लिए सरकार के वर्गीय चरित्र को समझना होगा – यानी यह सरकार जनता की सरकार नहीं है, जैसा कि वह कह रही है, बल्कि दलाल पूंजीपति और जमींदार वर्गों की सरकार है। इसलिए वह अपने ही वर्ग के हित में ही एड़ी-चोटी का जोर लगाकर काम करती है। लेकिन सच्चाई को छुपाने के लिए वह 'विकास' की रट लगाया करती हैं।

हम जनता के परम्परागत पर्वों का नहीं, बल्कि उनके व्यापारीकरण की कोशिशों का विरोध करते हैं। हम देश-विदेश के सैलानियों से आग्रह करते हैं कि अगर आपको सिर्फ बस्तर की तथाकथित शोभा देखकर आनन्द प्राप्त करना है तो यहां मत आएं। क्योंकि बस्तर का प्राकृतिक सौन्दर्य तभी सार्थक होगा, जब यहां के हर बाशिंदे को खाने के लिए भरपेट खाना मिले और इज्जत के साथ जीने लायक उसकी आर्थिक स्थिति हो। और आपके यहां आने से यहां पहले से मौजूद समस्याओं के अलावा वेश्यावृत्ति, भिक्षाटन, नशाखोरी, एड्स रोग, आदि के पनपने की संभावनाएं प्रबल हो जाती हैं – इतिहास इसका गवाह है। दरअसल बस्तर की जनता के हित में एक पल भी न सोचने वाले को यहां के प्राकृतिक सौन्दर्य का मजा लेने का कोई नैतिक अधिकार ही नहीं है क्योंकि बस्तर की सुन्दर प्रकृति के मालिक खुद यहां की गरीब आदिवासी जनता है। यदि कोई यहां की जनता की भलाई के लिए कोई शोध कार्य करना चाहता है, या यहां की जन संस्कृति व इतिहास का गंभीरतापूर्वक और ईमानदारी से अध्ययन करना चाहता है, यानी सीधे शब्दों में कहा जाए तो यहां की जनता और यहां के अपार खनिज एवं प्राकृतिक संसाधनों का शोषण करने के इरादे के बजाए, यहां की जनता के हित में कोई कार्य करने के नेक इरादे से कोई भी यहां आना चाहता है, तो हम उसका स्वागत करते हैं। हम फिर एक बार बस्तर में घूमने के लिए आने वाले सभी सैलानियों को यह चेतावनी भी देते हैं कि हमारे इस आग्रह पर ध्यान न देकर इसका उल्लंघन करने पर जनता के प्रतिरोधी कार्रवाइयों का सामना करना पड़ेगा।

इस मौके पर हम बस्तर के आदिवासी बुद्धिजीवियों, पत्रकारों, अध्यापकों, कलाकारों और आदिवासी समाज के परम्परागत प्रमुखों से अपील करते हैं कि आदिवासी जन संस्कृति पर 'बस्तर लोकोत्सव' के नाम पर तथा 'पर्यटन उद्योग के विकास' के नाम पर हो रहे साम्राज्यावादी सांस्कृतिक हमले को समझ लें। यहां की निराली, गौरवशाली, शानदार और अनोखी जन संस्कृति को कुत्सित, अश्लील, असभ्य, मुनाफाखोरी और जन-विरोधी साम्राज्यवादी संस्कृति द्वारा निगल जाने की प्रक्रिया पहले ही शुरू हो चुकी है। बस्तर में मौजूद अपार संपदाओं को लूटने की साम्राज्यवादियों के षड़यंत्रों का हिस्सा ही है कि बस्तर में इस तरह पर्यटन को बढ़ावा देकर जूनबूझकर साम्राज्यवादी संस्कृति फैलाई जा रही है। इसलिए हमें न सिर्फ बस्तर में साम्राज्यवादियों और उनके स्वदेशी दलालों की लूट-खसोट का विरोध करना है, बल्कि इस रूप में उनके सांस्कृतिक आक्रमण का भी विरोध करना है। वरना बस्तर का भविष्य बेहद भयावह होगा। आइए, बस्तर की जन संस्कृति को, बस्तर की जन भाषाओं को बस्तर की जनता की गरिमामय विरासत का बचाव करने का संकल्प लें।

आप सभी जानते ही हैं कि बस्तर की बहादुर जनता ने ब्रितानी साम्राज्यवाद के खिलाफ समय-समय पर कई विद्रोह किए। बस्तर के सर्व प्रथम शहीद और 1825 परालकोट विद्रोह के नायक शहीद गेंदसिंह और 1910 के भूमकाल महा संग्राम के महानायक गुंडाधूर ने बस्तर की धरती पर विदेशी हुकूमत को समाप्त कर जनता का राज स्थापित करने का सपना देखा था। लेकिन उनका सपना आज भी अधूरा ही रह गया है। आज बस्तर साम्राज्यवादी शोषण और उत्पीड़न से बुरी तरह ग्रस्त है। यहां के संसाधनों को कई साम्राज्यावादी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां सस्ते में लूट रही हैं। अब उन्हीं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की लूट-खसोट को और भी बढ़ाने के लिए हमारी जन संस्कृति पर कुठाराघात किया जा रहा है। महेन्द्र कर्मा जैसे बस्तर के कुछ दलाल नेता आदिवासियों के हितों के खिलाफ हैं। चूंकि महेन्द्र कर्मा के पिता बोड्डा मांझी ने भी अंग्रेजों के साथ सांठगांठ कर रखी थी, इसलिए बेटे से इससे ज्यादा उम्मीद करना भी बेकार है। हमें अब तय करना है कि क्या हम बस्तर की जन संस्कृति का नाश होने देंगे? हम बस्तर को एक और थाईलैंड बनने देंगे? या फिर बस्तर की जन संस्कृति के बचाव में आगे आएंगे? हम आप सभी से फिर एक बार निवेदन करते हैं कि बस्तर के परम्परागत पर्वों के व्यापारीकरण का विरोध करते हुए 'बस्तर लोकोत्सव' का बहिष्कार करें। बस्तर में पर्यटन को बढ़ावा देने से हो सकने वाले खतरों को समझकर इसके खिलाफ व्यापक मोर्चा बनाएं और सरकार की दिवालिया नीतियों के खिलाफ जन आन्दोलन तेज करें। ❑

वक्तव्य

इराक पर अमेरिकी और ब्रितानी साम्राज्यवादियों की सैन्य कार्रवाई का विरोध करो!

11 सितम्बर की घटनाओं के बाद अफगानिस्तान में तालिबान का तख्ता पलट देने में अमेरिका को मिली तथाकथित सफलता के बाद, साम्राज्यवाद का सरगना अमेरिका ने अब अपना निशाना इराक पर साधा। दुनिया का यह अघोषित सरदार मनमाने ढंग से आए दिन इराक को धमकियां दे रहा है। इराक के पास आणविक, रासायनिक एवं जैविक हथियार होने का आरोप लगाते हुए उस पर व्यापक सैन्य आक्रमण की तैयारियां कर रहा है। राष्ट्र संघ के हथियार निरीक्षण दल के काम को रोकने का आरोप लगाकर उस पर हमले के लिए उतावला हो रहा है। अमेरिका के इन षड़यंत्रों में ब्रितानी साम्राज्यवाद भी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहा है। कई अन्य साम्राज्यवादी देश भी अपनी-अपनी मजबूरियों के चलते अमेरिका के इन षड़यंत्रों का या तो हीन स्वर में विरोध कर रहे हैं या फिर मूक समर्थन कर रहे हैं। हालांकि दुनिया के कई अन्य पिछड़े देश, जिनमें अरब देश भी शामिल हैं, इराक पर हमले का हल्के ढंग से विरोध तो कर रहे हैं, लेकिन विश्व पर अमेरिका की दादागिरी का खुलकर और डटकर विरोध करने से कतरा रहे हैं।

'आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष' के नाम पर अमेरिका दुनिया के हर उस देश के खिलाफ चढ़ाई करने को उतावला हो रहा है जो उसके हितों के विरोध में खड़े हो। 1991 में अमेरिका ने, जब वर्तमान राष्ट्रपति जॉर्ज डब्ल्यू. बुश का पिता सीनियर जॉर्ज बुश इसका राष्ट्रपति था, इराक पर 42 दिनों तक बम बरसाए थे। इसमें इराक के हवाई अड्डे, संचार व्यवस्था, प्रशासनिक इमारतें, आदि पूरी तरह से तबाह हो गए। हजारों जनता को जान से हाथ धोना पड़ा था। यहां तक कि वहां की जल आपूर्ति व्यवस्था, बिजली केन्द्र, स्कूलें, आदि भी ध्वस्त हो गईं। बाद में अमेरिका ने इराक के पुनरनिर्माण पर भी प्रतिबन्ध लगाए। इस वजह से हजारों लोग कई बीमारियों के शिकार हुए और असामयिक मौत के चपेट में आ गए। 1997 में खुद संयुक्त राष्ट्र संघ ने घोषणा की कि युद्ध और प्रतिबन्धों के चलते 7,50,000 मासूम बच्चों समेत कुल 12 लाख इराकी मारे गए। अमेरिका के प्रतिबन्धों के चलते आज भी हर माह 4 से 6 हजार बच्चे मारे जा रहे हैं। और कई बीमारियां भी बढ़ गईं।

लेकिन खाड़ी युद्ध से अमेरिका के मंसूबे पूरे नहीं हुए। सद्दाम हुसैन का तख्ता पलट देने के लिए उसके द्वारा की गई तमाम साजिशें नाकाम रह गईं। अड़ोस-पड़ोस के देशों के साथ इराक के सम्बन्ध भी सुधर गए। पड़ोसी देशों ने अमेरिका के प्रतिबन्धों की परवाह नहीं की। जोर्डान, सिरिया, तुर्की, मिश्र, आदि देशों के साथ इराक का व्यापार बढ़ा। चीन समेत रूस, फ्रान्स, जर्मनी, आदि साम्राज्यवादी देशों से इराक के आयात कई गुना बढ़ गए। कई देशों ने बग्दाद में अपने दूतावास खोले। 1998 में इराकी अधिकारियों ने अरब लीग के सम्मेलन में भाग लिया।

साउदी अरब आर्थिक दृष्टि से कमजोर पड़ गया। वहां असंतोष बढ़ गया। फारस की खाड़ी के क्षेत्र में इरान का महत्व बढ़ने लगा। इस क्षेत्र में आपसी आर्थिक एवं राजनीतिक सम्बन्ध मजबूत हो गए। इस पृष्ठभूमि में इराक पर अमेरिकी प्रताड़नाएं बढ़ गईं। यहां तक कि उसने इराक, इरान और उत्तरी कोरिया को 'शैतान की तिकड़ी' भी करार दिया।

फारस की खाड़ी का इलाका तेल भण्डारों से भरा समृद्ध इलाका है। वहां दुनिया के तेल भण्डारों का 65 प्रतिशत, दुनिया के प्राकृतिक गैस भण्डारों का 34 प्रतिशत मौजूद हैं। तेल युद्ध का एक महत्वपूर्ण माल है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के अस्तित्व के लिए तेल ही मुख्य आधार है। तेल के संसाधनों और मार्गों पर प्रभुत्व का मतलब है तेल पर आधारित देशों पर प्रभुत्व हासिल करना। इसीलिए अमेरिकी शासक वर्ग फारस की खाड़ी के इलाके को अपने काबू में रखकर अपने प्रतिद्वन्द्वी साम्राज्यवादियों को कड़ी टक्कर देना चाह रहे हैं।

पिछले 60 सालों से फारस की खाड़ी के क्षेत्र पर अपना सिक्का जमाने के लिए अमेरिकी गुप्तचर संगठन सीआइए ने अनगिनत षड़यंत्र रचे। अब 'आतंकवाद के खिलाफ विश्व स्तर की लड़ाई' का ढोंग करते हुए अमेरिका इराक के खिलाफ बेसिर-पैर के आरोप लगा रहा है। खुद अमेरिका के पास इतने सारे हथियार मौजूद हैं कि वह समूची मानवजाति को 12 बार तबाह कर सकता है। उसके पास हजारों की संख्या में हाइड्रोजन बम, वार हेड और प्रक्षेपास्त्र भी मौजूद है। उसके पिछलग्गू इज्राएल, भारत जैसे देशों के पास घातक हथियारों का जखीरा है। लेकिन क्या अमेरीका किसी निरीक्षण दल को अपने देश में हथियारों की जांच करने की इजाजत देगा? तो यह दोहरी नीति क्यों? पहले इराक पर, बाद में युगास्लोविया और कल-परसों तक अफगानिस्तान में भीषण बमबारी करके व्यापक तबाही मचाने वाले को, डैजी कट्टर जैसे घातक बमों का प्रयोग करके अनगिनत मासूम लोगों की हत्या करने वाले को यह नैतिक हक ही कहां है कि वह दूसरे देशों के हथियारों की जांच करे? अमेरिका इराक पर संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्देशों की अनदेखी करने का आरोप लगाकर अपनी दुराक्रमणकारी सैन्य कार्रवाई को 'वैधता' हासिल करने की घिनौनी कोशिश भर कर रहा है। अमेरिका के दोगलेपन को समझने के लिए इससे बड़ा सबूत और कोई नहीं होगा। अमेरिका के पिट्ठू इज्राएल ने राष्ट्र संघ के प्रस्तावों का जितना उल्लंघन किया, उतना और किसी ने शायद ही किया होगा। तो उसके खिलाफ सैन्य कार्रवाई क्यों नहीं करता है अमेरिका? साफ है, अपने मित्रों के लिए एक नीति और अपने हितों के विरोधियों के लिए एक नीति, यही अमेरिका बरसों से करता आ रहा है। क्योंकि अमेरिका को राष्ट्र संघ के प्रस्तावों की नहीं, बल्कि खाड़ी के क्षेत्र पर धाक जमाने से तेल के भण्डारों पर मिलने वाले अधिकार को लेकर ज्यादा चिन्ता है। *(शेष पृष्ठ 39 पर....)*

(.... पृष्ठ 38 का शेष)

इराक पर लगाए प्रतिबन्ध हटाने के लिए विश्व समुदाय द्वारा की गई गुजारिशों को अमेरिका हमेशा ठुकराता चला आ रहा है। लेकिन भारत और पाकिस्तान में किए गए परमाणु परीक्षणों के बाद लगाए प्रतिबन्धों को समाप्त करने में तथा पाकिस्तान के कर्जे माफ करने में उसने कोई देरी नहीं की क्योंकि अफगानिस्तान पर हमला करने के लिए उसे इन दोनों देशों का सहयोग जरूरी था। अमेरिका के दोहरे मानदण्डों को समझने के लिए यह भी एक अच्छा उदाहरण है। वह और उसका पिट्ठू ब्रिटेन विश्व जनमत को, यहां तक कि राष्ट्र संघ के महासचिव कोफी अन्नान की, दबी आवाज में ही सही, असहमति को भी ताक पर रखकर आए दिन भड़काऊ बयान दे रहे हैं। न्यूयार्क में सितम्बर के दूसरे सप्ताह में राष्ट्र संघ के जनरल असेम्बली को संबोधित करते हुए जार्ज बुश ने इराक पर हमले की धमकी देते हुए जिस भड़कीली भाषा का प्रयोग किया वह बेहद निन्दनीय है।

क्लिन्टन के शासनकाल में हथियार निरीक्षण के बाद इराक ने अपने आणविक, रासायनिक तथा जैविक हथियारों में 95 प्रतिशत को नष्ट किया था। लेकिन 1999 में सद्दाम हुसैन ने हथियारों की जांच को तब रोक दिया जब अमेरिका ने खुफिया तौर पर हथियारों की जांच शुरू की थी। इससे भी शर्मनाक बात यह है कि अमेरिका के तमाम आरोपों के बावजूद रासायनिक हथियार सद्दाम हुसैन की इराक सरकार के नियंत्रण वाले क्षेत्रों के बजाय उन क्षेत्रों में हासिल हो रहे हैं, जो उत्तरी इराक में कुर्दों के नियंत्रण में हैं। इस क्षेत्र को अमेरिकी और ब्रितानी वायुसेना ने इराक की सेना के लिए प्रतिबंधित घोषित कर रखा है। इस सचाई के बावजूद अमेरिका इराक पर आरोप-दर-आरोप मढ़ ही रहा है।

हम इराक के खिलाफ अमेरिका और ब्रिटेन की युद्ध की तैयारियों का विरोध करते हैं। हम सभी मजदूरों, किसानों, बुद्धिजीवियों, लेखकों, पत्रकारों से तथा सभी जनवादी संगठनों से अपील करते हैं कि अमेरिका के इन आतंकी करतूतों का विरोध करें। दुनिया का सबसे बड़ा आतंकवादी खुद अमेरिका ही है। विश्व जनता का नंबर-1 दुश्मन अमेरिका ही है। हम जनता से यह भी आग्रह करते हैं कि अमेरिका और उसके पिछलग्गू ब्रिटेन की योद्धोन्मादी कार्रवाइयों के खिलाफ सभा, जुलूस, प्रदर्शन आदि का आयोजन करें – तथा भारत सरकार पर यह दबाव डालें कि वह अमेरिका के सामने घुटने टेकने वाली समर्पणकारी व गुलामी नीतियों को छोड़ दे, देश की प्रभुसत्ता की लाज बचाए, तथा इराक पर अमेरिका-ब्रिटेन के अन्यायपूर्ण युद्ध का डटकर विरोध करे।

(कोसा)

सचिव

दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी

16-09-2002 भाकपा (मा-ले) [पीपुल्स वार]

अनकापल्ली और चोडावरम पुलिस थानों पर पीजीए का हमला

फासीवादी चन्द्रबाबू की बोलती बंद

आन्ध्र सरकार के साथ बातचीत का दौर खत्म होने के बाद पीजीए ने फिर से फासीवादी चन्द्रबाबू सरकार के भाड़े के पुलिस बलों के खिलाफ दोबारा अपना आत्मरक्षात्मक युद्ध तेज कर दिया। चर्चा के दौर में भी तथा उसके बाद भी शासक वर्ग और उनके वफादार पुलिस अधिकारी यह कहते नहीं थक रहे थे कि अब पीपुल्सवार कमजोर पड़ गया और उसे जनता का समर्थन नहीं है। लेकिन राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित अनकापल्ली और चोडावरम पुलिस थानों पर एक साथ हमला करके आन्ध्र-उड़ीसा सीमान्त क्षेत्र (एओबी) के पीजीए योद्धाओं ने शासक वर्गों को अपनी ताकत का अहसास कराया। इससे आन्ध्र की जनता के दिलों में उत्साह का संचार हुआ।

अखबारों में छपी खबरों के मुताबिक पीजीए के लाल योद्धाओं ने तीन वाहनों में सवार होकर विशाखापट्टनम जिले में स्थित दोनों थानों पर एक साथ धावा बोल दिया। अनकापल्लि थाने पर हमले में उन्होंने चार पुलिस वालों को बंदी बनाया और सारे हथियार जब्त कर लिए। उन्होंने वहां से निकलने से पहले थाने को बारूद से उड़ा दिया। हालांकि अनकापल्लि स्थित सब-जेल पर भी उन्होंने हमला किया, लेकिन इसके संबंध में विस्तृत जानकारी नहीं मिली। चोडावरम में पीजीए ने थाने के अलावा सब-ट्रेजरी पर भी हमला किया। चोडावरम थाने से हथियार जब्त करके उसे भी विस्फोटों से उड़ा दिया। सब-ट्रेजरी से सोना और नगदी को अपने कब्जे में लिया। उल्लेखनीय बात यह है कि दोनों थानों में मौजूद पुलिस वालों ने बिना किसी खास प्रतिरोध के ही हथियार डाल दिए। हालांकि हमलों की खबर पास में ही स्थित जिला मुख्यालय विशाखापट्टनम को रात में ही लगी थी, लेकिन कायर पुलिस अधिकारियों ने अपनी जान जोखिम में डालने की हिम्मत नहीं की और सुबह होने के बाद ही वहां पहुंचे। दुश्मन के भाड़े के पुलिस बल कागजी बाघ ही होते हैं, यह बात यहां दोबारा साबित हुई।

इस हमले में बंदी बनाए गए पुलिस कर्मियों में से तीनों को दो दिन बाद रिहा कर दिया गया। उनमें से एक चिट्टिबाबू को इसलिए पीजीए ने मौत के घाट उतार दिया क्योंकि छापामार दस्तों पर किए गए कई हमलों में उसकी भागीदारी थी। इन हमलों के बाद फासीवादी चन्द्रबाबू और उसका नमक हलाल सेवक डीजीपी रामुलु की बोलती बंद हो गई। हालांकि उन्होंने सैकड़ों ग्रे-हाउण्ड्स बलों को उतारकर, हेलीकॉप्टर मंगवाकर खोजबीन अभियान चलाए, लेकिन उससे कोई कामयाबी उन्हें हाथ न लगी। वाकई, यह हमला आन्ध्र के फासीवादी शासकों और उनके पिट्ठू अधिकारियों के घमण्ड पर लगा करारा धक्का था। पीजीए ने यह साबित कर दिया कि वह जनता की अविजित ताकत पर निर्भर करते हुए दुश्मन के सीने पर भी प्रहार कर सकती है।❑

आह्वान

'बस्तर लोकोत्सव' के नाम पर बस्तर की जन संस्कृति के व्यापारीकरण का विरोध करो!

दण्डकारण्य में पर्यटन से विकास की ढोंगबाजी करने वाली सरकार की दिवालिया नीतियों का मुंहतोड़ जवाब दो!!

अविभाजित बस्तर की राजधानी जगदलपुर में परम्परागत रूप से मनाए जाने वाले दशहरे के पर्व को सरकार ने 'बस्तर लोकोत्सव' का रूप देकर 7 से 17 अक्टूबर तक उसे मनाने की तैयारियां जोर-शोर से शुरू कर दी हैं। शासन-प्रशासन, पुलिस, वन विभाग, पर्यटन विभाग आदि सभी सरकारी महकमे बस्तर में ज्यादा से ज्यादा देश-विदेश के सैलानियों को आकर्षित करने की कोशिशें शुरू कर दी हैं। चित्रकोट, तीरथगढ़, केशकाल घाटी, कांगेर घाटी जैसी जगहों को, कोंडागांव, नारायणपुर, जगदलपुर जैसे शहर-कस्बों को दुल्हन की तरह सजाया जा रहा है। इस मौके पर चित्रकोट आदि 'पर्यटन-स्थलों' में सर्वसुविधायुक्त 5-स्टार टेन्ट, इन्टरनेट, टेलीफोन आदि सुविधाएं बनाई जा रही हैं। बस्तर में इको-एथनिक टूरिज़म को बढ़ावा देने की लम्बी-चौड़ी बातें की जा रही हैं। बस्तर के सुन्दर वनों, मनमोहक जल-प्रपातों, नदी-नालों, नृत्य एवं शिल्प कलाओं, आदि से पर्यटकों को लुभाकर, उससे प्राप्त पैसे से बस्तर के विकास करने की बातें की जा रही हैं।

लेकिन आज की तारीख में बस्तर के अधिकांश गांवों में आदिवासी भाई-बहन भयंकर सूखे के चपेट में आ चुके हैं। मानसून में देरी और कम वर्षा के चलते ज्यादातर खेतों में ठीक से बोआई ही न हो सकी है। जो खेत बोए गए हैं वे भी अब पूरी तरह सूख जाने के कगार पर पहुंचे हैं। अकाल और भुखमरी की यह दर्दनाक कहानी सिर्फ इसी वर्ष की नहीं, बल्कि सालों से बदस्तूर जारी है। भयंकर भुखमरी से पीड़ित आदिवासियों को पेट भरने के लिए जहरीले कंदमूल खाने पड़ रहे हैं और सल्फी पेड़ों को काटकर उसके भीतरी भाग को कूटकर, उससे बने आटे से पसिया बनाकर पीना पड़ रहा है। मलेरिया, उल्टी-दस्त जैसी बीमारियों ने हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी सैकड़ों मासूम लोगों की जानें लीं। शहरी और ग्राणीण इलाकों में बेरोजगारी की स्थिति जस की तस बनी हुई है। एक शब्द में कहें तो, आज भयंकर अकाल, गरीबी, कुपोषण, भूखमरी, अस्वस्थता, अशिक्षा, बेरोजगारी, आदि समस्याओं से जूझ रही है बस्तरिया जनता। इस सच्चाई से मुंह फेर लेने वाली सरकार बस्तर की इस वास्तविक तस्वीर पर परदा डालकर, पर्यटन को बढ़ावा देकर बस्तर में विकास की गंगा बहाने के दावे कर रही है।

बस्तर के संदर्भ में 'विकास' के मुद्दे को लेकर समय-समय पर बहसें छिड़ती रही हैं। सरकार की 'विकास' की परिभाषा साम्राज्यवादियों को, दलाल पूंजीपतियों को, मुट्ठी भर शहरी व्यापारियों को होने वाला फायदा है। लेकिन हम शुरू से ही कहते आ रहे हैं कि बस्तर की 'जनता का विकास' ही 'बस्तर का विकास' कहलाएगा। बस्तर की अधिकांश जनता खेतीबाड़ी और वनोपजों के संग्रहण पर निर्भर है। लेकिन तथाकथित आजादी के 55 साल बाद भी अविभाजित बस्तर की 1 फीसदी जमीन को भी सिंचाई की पक्की सुविधा नहीं है। आज भी यहां की खेती मुख्यतया वर्षा पर आधारित है। अधिकांश लोग 'पेंदा' (चलित) खेती जैसे पुराने तरीकों पर ही खेती-किसानी करते हैं। बस्तर में बहने वाली अनगिनत नदी-नालों पर चेक डैम और तालाबों का निर्माण करके सिंचाई सुविधाओं को बढ़ाने का कोई सार्थक प्रयास सरकार ने नहीं किया है। मुख्य रूप से यहां के वनोपजों पर आधारित, यहां के कम-शिक्षित और अशिक्षित युवाओं को रोजगार उपलब्ध करवाने वाले और यहां का जल-वायु को प्रदूषित न करने वाले और जनता को अधिक नुकसानदायक न होकर अधिक फायदेमन्द होने वाले उद्योगों की स्थापना में सरकार ने आज तक कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्रों में सरकार की घोर लापरवाही के चलते आज भी इन क्षेत्रों में बस्तर की जनता कोई खास तरक्की नहीं कर सकी है। दूसरी ओर बांस कटाई, तेन्दुपत्ता तुड़ाई जैसे कामों में लगे मजदूरों का सरकार द्वारा शोषण लगातार जारी है। यहां की जनता की पुरजोर मांग के बावजूद सरकार ने तेन्दुपत्ता मजदूरों को सिर्फ 45 पैसा प्रति गड्डी देकर लोगों का भरपूर शोषण किया। इससे यही साबित होता है कि सरकार को जनता के वास्तविक विकास में कोई ध्यान नहीं है, बल्कि जनता को ज्यादा से ज्यादा लूटने में ही उसकी रुचि है।

इधर सरकार पिछले कुछ सालों से यह प्रचार कर रही है कि बस्तर में पर्यटन के विकास की ज्यादा संभावनाएं हैं और इससे बस्तर का विकास किया जा सकता है। क्या पर्यटन को बढ़ावा देने से, यानी बस्तर के प्राकृतिक सौन्दर्य को देश-विदेश के रईस लोगों को दिखाने से बस्तर का विकास हो सकेगा? बस्तर की जनता की अनगिनत समस्याओं को छिपाकर, उसकी गरीबी एवं भुखमरी पर परदा डालकर यहां के सौन्दर्य की नुमाइश पेश करना कितना बेईमानी है? दरअसल, यहां सैलानियों के आने से विकास नहीं होगा, बल्कि यहां की आदिवासी बालाओं को वेश्यावृत्ति में घासीटा जाएगा, यहां के युवा वर्ग में नशाखोरी बढ़ेगी। पर्यटन को बढ़ावा देने से यहां पर महंगी रिसॉर्टें बनेंगी, होटलें बनेंगी, साथ ही साथ, देहव्यापार, भिक्षाटन आदि का प्रचलन बढ़ना निश्चित है। पिछले कुछ दिनों से जगदलपुर के कुछ डॉक्टर बस्तर में यौन बीमारियों के बढ़ने पर चिन्ता जता रहे हैं। बस्तर की जन संस्कृति पर पूंजीवादी संस्कृति के हावी होने के परिणामस्वरूप भले ही यहां, खासकर शहरी क्षेत्रों में, यौन बीमारियां बढ़ गई हों, फिर भी सौभाग्य से *(शेष पृष्ठ 37 पर....)*